"बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी एवं माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविधालय

से

"शिक्षा शास्त्र" में विधा वारिधि (पी०एच०डी०)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

<u>शोध – प्रबन्ध</u>

निर्देशक :

डॉ० आर० पी० पाण्डेय,

रीडर, बी०एड० विभाग

बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी।

शोधकर्ता :

रमाकान्त तिवारी

शिक्षा - संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविधालय, झाँसी

दिसम्बर २००१

"बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी एवं माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

से

"शिक्षा शास्त्र" में विद्या वारिधि (पी०एच०डी०)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

<u>शोध – प्रबन्ध</u>

निर्देशक :
डॉ0 आर0 पी0 पाण्डेय,
रीडर, बी0एड0 विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी।

शोधकर्ता
रमाकान्त तिवारी

शिक्षा – संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
दिसम्बर २००१

प्रमाण - पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री रमाकान्त तिवारी ने "बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन" विषय पर निर्धारित अवधि तथा उपस्थित रहकर मेरे निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण किया। यह शोध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध नियमों का अनुपालन करते हुये पूरा किया गया है तथा प्राप्त निष्कर्ष शोधकर्ता के अपने मौलिक तथा क्षेत्रीयता पर आधारित हैं।

मैं इस शोध प्रबन्ध के परीक्षण की संस्तुति करता हूँ।

डॉ० आर० पी० पाण्डेय,
रीडर, बी० एड० विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी।

आमुख

"शिक्षक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है! वह मानवीय पीढ़ियों में बौद्धिक परम्पराओं का हस्तॉतरण करता है प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है । वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखाता है, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्ग दर्शन करता है ।" (डॉ. राधाकृष्णनन्) सर्व सामान्य व्यक्तियों की भॉति शिक्षक भी एक मानव प्राणी होता है । इसे भी अपने मनोशारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सॉस्कृतिक तत्वों के प्रभाव में रहकर व्यवहार करना पडता है । वह सामाजिक प्राणी तथा शिक्षा निर्देशक के द्विव्यक्तित्वों में स्वयं को विकसित करता है । उसके व्यक्तित्व की विशेषता संतुलन स्थापना करते हुये पुरानी पीढी और नवीन पीढी के बीच सामंजस्य बनाना रहता है । आज के भौतिकवाद तथा परिवर्तित जीवन मूल्यों ने सेवानिवृत्त शिक्षको में एक अवसाद भर दिया है जो उनको सामान्य जीवन उपभोग करने से विलग करता है । शिक्षक का जीवन आदर्श, मानवीय मूल्य और कर्त्तव्य परायणता के विकास में व्यतीत हुआ है । जिसने उनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक और नकारात्मक प्रतिक्रिया करने को व्यवस्थित अनुभव दिया है । इस तरह से सेवानिवृत्त शिक्षक भी अपनी अभिवृत्ति के स्वरूप के अपने अनुभवों और उद्दीपको के आधार पर निश्चित करता है ताकि वह स्वयं की समस्याओं का सामना कर सके ।

शिक्षक एक सामाजिक प्राणी है । वह जीवन पर्यन्त समाज में ही रहना चाहता है । वह उसी समय अधिक प्रसन्न दिखाई देता है, जबकि वह स्वयं की रूचि, पसन्द और अभिवृत्तियों वाले समूह को प्राप्त कर लेता है । सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं के जीवन को सरस बनाने के लिये एक ऐसे समुदाय का गठन करता है, जो उसकी मानमर्यादा, रीतिरिवाज तथा आंतरिक तथा वाह्य नियमों के अनुकूल होता है । इस प्रकार से वह स्वयं को इस नवीन वातावरण के, साथ समायोजित करने के सोच को विकसित करता है । इसके साथ ही वह

अपने व्यवहार में सामाजिक स्तर के अनुसार आँशिक अथवा पूँर्ण परिवर्तन करता है ।

फिर भी सेवानिवृत्त शिक्षकों की विभिन्न रूपों में अभिवृत्ति का प्रदर्शन होता है । ये अभिवृत्तियों जीवन के प्रति, बच्चों के प्रति, सम्मान के प्रति, सहयोगियों के प्रति तथा व्यवसाय आदि के प्रति प्रगट होकर व्यवहार को प्रभावित एवं नियंत्रित करती है । फलस्वरूप इन सेवानिवृत्त शिक्षकों को कुछ समस्याओं का सामाना करना करना पडता है । ये समस्यायें मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदि रूपों में उत्पन्न होती । इनके प्रभावों के द्वारा वे अपने व्यवहार को जैसा चाहते है, कर नही पाते है और तनाव महसूस करते रहते है। यही तनाव उनमें निराशा तथा अवषाद को भर देते है। अतः शोधकर्ता ने यह कोशिश की है कि सेवानिवृत्त शिक्षक को सामान्य जीवन यापन करने के लिये अपनी मानसिकता में क्या-क्या परिवर्तन करने चाहिये ताकि समस्याओं का सामना आसानी से किया जा सके।

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने में कई लोगों का परोक्ष तथा अपरोध रूप से सहयोग रहा है। सर्वप्रथम मै अपने शोध निर्देशक डॉ० आर० पी० पाण्डेय जी के प्रति हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ जिनके उचित् मार्गदर्शन, स्नेह एवं प्रेरणा से यह कार्य पूर्ण हो सका है। आपने इस समस्या के प्रति अंतिम समय तक उत्साह एवं निष्ठा बनाये रखने में सहायता की, जिससे मेरे समक्ष कभी भी निराशाजनक स्थिति आई ही नहीं। इसके साथ ही डॉ० शर्मा (मेरठ), डॉ० श्रीवास्तव (मेरठ), डॉ० सिंह (लखनऊ), डॉ० पाण्डेय (इलाहाबाद), श्री त्रिपाठी जी (बाँदा) तथा डॉ० श्रीवास्तव (अतर्रा) आदि विद्वत वर्ग ने अपने-अपने अनुभवों से इस शोध कार्य की गरिमा को बढ़ाया है।

इसके साथ ही मेरी सर्विस के अभिभावक डॉ० अवध किशोर मिश्र जी (संयुक्त शिक्षा निदेशक) का मै हृदय से आभारी रहूँगा क्योंकि उनकी प्रेरणा एवं उत्साह वर्द्धन से मैने इस कार्य को पूर्ण किया है।

शोधकार्य की पूर्णता तथ्य संकलन पर निर्भर करती है। इस हेतु प्रायमरी

तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षक संगठन, प्राचार्य तथा सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का मै हृदय से आभार प्रगट करता हूँ कि उन्होनें अपना सहयोग ही नही दिया, बल्कि आँतरिक भावनाओं को भी बतलाया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय, पुस्तकालय तथा शिक्षक संगठनों के अध्यापकों अध्यक्षों तथा महामंत्री को धन्यवाद् देता हूँ जिनके कारण तथ्य संकलन अपनी पूर्णता प्राप्त कर सका। इसके साथ ही मैं अपने परिवार के मुखिया पूज्य पिता श्री छोटेलाल तिवारी, मेरे अग्रज श्री रक्षपाल, रामगोपाल एवं अनुज चि० रमेश का आभारी हूँ जिनके उत्साह वर्द्धन से कार्य को मानसिक सम्बल मिला।

अंत में मैं अपनी पत्नी श्रीमति सन्ध्या तिवारी, शिक्षा विभाग के परम हितैषी स्टेनो श्री के. के. खरे शिक्षक श्री विजय पाठक तथा मित्रों का आभारी रहूँगा, जिनकी प्रेरणा से तथा उत्साहवर्द्धन से मेरा शोध कार्य पूँर्ण हो सका।

झाँसी
दिसम्बर, २००१

'रमाकान्त तिवारी'

विषय - सूची

शोध कार्य में प्रयुक्त रेखाचित्र

4.1 — अभिवृत्ति आकृतियाँ

(अ) — नगर क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक के मध्यमान

(ब) — कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक के मध्यमान

(स) — ग्रामीण क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक के मध्यमान

(द) — नगर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

(य) — कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

(र) — ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

4.2 — समस्या आकृतियाँ

(अ) — नगर क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक

(ब) — कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक

(स) — ग्रामीण क्षेत्र के प्रायमरी अध्यापक

(द) — नगर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

(य) — कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

(र) — ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक

4.3 — सह सम्बन्ध आकृतियाँ

(अ) — अभिवृत्ति तथा समस्या का सह सम्बन्धं

(ब) — अभिवृत्ति तथा मनोवैज्ञानिक समस्या का सहसम्बन्ध

(स) — अभिवृत्ति तथा शारीरिक समस्या का सह सम्बन्ध

(द) — अभिवृत्ति तथा आर्थिक समस्या का सहसम्बन्ध

(य) — अभिवृत्ति तथा सामाजिक समस्या का सहसम्बन्ध

(र) — अभिवृत्ति तथा सांस्कृतिक समस्या का सहसम्बन्ध

शोध कार्य में प्रयुक्त तालिका सूची

अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

प्रस्तावना

मानव समाज भारतीय संस्कृति को सनातनता चिरस्थायित्वता और ओजस्विता से परिचित है। इसमें काल और स्थानगत भेदों को आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता है। इसकी संस्कृति और सभ्यता में वृद्धि महान शिक्षकों (गुरूओं) के समय–समय पर दिये गये उपदेशों की व्यवहारिकता से होती रही है। अतः आज भी समाज निर्माण, उत्थान एवं विकास में शिक्षक समाज का विशेष महत्व रहा है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1990) तथा हिन्दू कालेज, मुरादाबाद (2000) ,द्वारा आयोजित सेमीनार "अध्यापक शिक्षा का नवीनीकरण " में डॉ. रामशकल पाण्डे (नीरसता) और प्रो. मलिक (गिरावट) तथा प्रो. टी. पति (असमायोजन) आदि ने शिक्षकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आज शिक्षक की गुणवत्ता, दक्षता तथा चरित्र आदि में गिरावट आती जा रही है।

वर्तमान भौतिकवादी समाज की जागरूकता आज कार्यरत शिक्षकों तक ही सीमित है, अवकाश प्राप्त शिक्षकों के प्रति नहीं। यदि हम अवकाश प्राप्त शिक्षकों की मनोदशा तथा उनकी समस्याओं को जानना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अध्यापक भूमिका, अध्यापक व्यक्तित्व और अध्यापक प्रशिक्षण पर प्रकाश डालना होगा। क्योंकि आज अवकाश प्राप्त अध्यापक की समस्याओं का आधार उनकी भूमिका, व्यक्तित्व तथा प्रशिक्षण आदि पक्ष ही माने जाते हैं (विद्यार्थी, 1978)।

राष्ट्र का विकास मानवीय सत्ता में परिष्कार के द्वारा होता है। यह परिष्कार दक्ष शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। परिष्कार की प्रवृत्ति सामाजिक क्षेत्र में सभ्यता और आंतरिक क्षेत्र में संस्कृति कहलाती है। शिक्षक एक कलाकार की तरह से सजीव मूर्तियों को सुगढ़ बनाता है। इसका यह श्रम और मनोयोग का नियोजन सृजनात्मक प्रयोजनों के लिये होता है। जिससे नागरिकों की कुसंस्कारिता, असामाजिकता, विकृत चिन्तन, अदिग्नता, आदि विकारों में शनैः शनैः परिवर्तन होता है। वह समाज की संस्कृति एवं परम्पराओं की सामयिक व्याख्या, रक्षा और प्रसार करता है। शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम् से राज्य और समाज के बीच संतुलन स्थापित करता है। किसी राष्ट्र की गरिमा उसकी शिक्षा पद्धति के ऊपर निर्भर करती है, और शिक्षा पद्धति उसके गुणी शिक्षकों पर। शिक्षक राष्ट्र रूपी गाड़ी में पहिये की धुरी के समान कार्य करता है। इसलिये मानव विकास से लेकर आज तक मानव. समाज उसका ऋणी बना हुआ है। "माध्यमिक शिक्षा आयोग" (1952) में वर्णित है, "शिक्षा के पुननिर्माण में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है।" अतः उसकी व्यक्तिगत विशेषतायें, शैक्षिक योग्यतायें, व्यवसायिक प्रशिक्षण और विद्यालय तथा समाज मे उसके द्वारा प्राप्त किया गया स्थान सभी

अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। "कोठारी आयोग (1966) पृष्ठ 46 के शब्दों में" इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिक्षा के स्तर और राष्ट्रीय विकास के योगदान में जितनी भी बातें प्रभावित करती है, उनमें शिक्षकों के गुण, क्षमता और चरित्र सबसे महत्वपूर्ण हैं। "शिक्षकों के महत्व एवं गरिमा को डॉ. राधा कृष्णनन ने स्पष्ट किया हैं, "शिक्षक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानवीय पीढ़ियों में बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करता है। प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है। वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखाता है, बल्कि सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करता है।"

1— अध्ययन की पृष्ठभूमि :—

वर्तमान समय में शिक्षक प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा स्तरों पर राष्ट्र के नागरिकों को शिक्षा देने में लगा हुआ है। वह जानता है कि आज का छात्र कल का राष्ट्र निर्माता होता है। यह शिक्षक, शैक्षिक प्रक्रिया, छात्र निपुणता और सामाजिक आवाश्यकता के प्रति स्वयं को समर्पित करते रहते है। ये लोग अपरिग्रह में विश्वास करते हैं और अपने जीवन को नियंत्रित करते हुये वर्तमान की समस्याओं का समाधान स्थापित करके शिक्षा देने में मग्न रहते है। इस अपरिग्रह को सामान्यजन निर्धनता मान सकता है, लेकिन यही उसकी सामर्थ्य होता है।

व्यक्ति तथा समाज के निर्माण एवं विकास के सन्दर्भ में शिक्षक द्वारा किये गये अमूल्य योगदान के कारण ही, समाज ने सदैव ही शिक्षक की पूजा की है। इसीलिये यह कहा गया है कि अच्छे राष्ट्र का निर्माण एवं विकास अच्छे शिक्षकों द्वारा ही किया जाता है। इतिहास का कथन सबसे उत्तम लगता है कि देश में परिवर्तनता शिक्षक के माध्यम् से ही (अहिंसा) लाई जाती है। अतः शिक्षक की गरिमा राष्ट्र के विकास पर प्रतिविम्बित होती है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। देव संस्कृति में इसको "वृह्मा, विष्णु, महेश" की तरह धरित्री जी के भी तीन देवता माने गये हैं— माता, पिता एवं गुरू। इसकी तुलना तीनों देवों से की गई है। माता को बृह्मा माना गया है क्योंकि वह सबको जन्म एवं पालन — पोषण करती है। पिता विष्णु माने जाते हैं क्योंकि वह बालक को सामाजिक, व्यवहारिक और व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा आत्म निर्भर बनाते है। गुरू को "महेश" के समतुल्य माना गया है। इनकी स्तुति विष्णु एवं बृह्मा दोनों देव करते हैं क्योंकि गुरू आत्मा में, व्यक्तित्व में सुसंस्कारिता का आरोपण करके आत्मिक क्षेत्र का परिशोधन एवं परिष्कार करता है।

शिक्षक को समाज में गरिमामय स्थान बनाये रखने के लिये तथा राष्ट्र को सुयोग्य नागरिक दे सकने और देश की सभ्यता एवं संस्कृति को जीवित

बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि वह अपना कार्य सफल ढंग से सम्पादित कर सके। वर्तमान समय की भौतिकतावादी मान्यताओं ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि शिक्षक अपने कार्य को सफलतापूर्वक कैसे सम्पन्न कर सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में दो मत सामने आते हैं। प्रथम – शिक्षक जन्मजात होते हैं। यानी जो जन्म से प्रतिभा सम्पन्न, बुद्धिमान, होते हैं, वे अच्छा शिक्षण कर सकते हैं, जैसे – गुरू चाणक्य, रामदास, दयानन्द, विवेकानन्द, अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगौर, डॉ. राधाकृष्णनन आदि। द्वितीय – मत के अनुसार जन्मजात प्रतिभा, शिक्षक बनने का एक मात्र कारक हो सकती है, पूर्ण शिक्षक नहीं। अतः शिक्षा देने की कला, बालक को समझने का गुण, परिस्थिति के साथ समायोजन क्षमता, आदि का प्रशिक्षण किसी को भी शिक्षक रूप में ढाल सकता है। इसी विचारधारा को व्यवहारिक बनाने के लिये शोधकर्ता ने इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

यथार्थरूप में शिक्षक ही एक मात्र राष्ट्र का भाग्यविधाता होता है, जिससे वह अपने छात्रों के व्यक्तित्व में निखार एवं परिष्कार लाता है। जैसा कि श्रीमन् नारायण (1968 पृ. 8) ने लिखा है, "किसी राष्ट्र की महानता उसकी भव्य अट्टालिकाओं, वृहद विकास योजनाओं, महान सेनाओं से नहीं आँकी जाती है, बल्कि उनके नागरिकों के गुणों के द्वारा मूल्यांकित की जाती है।" इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि शिक्षक अपने पवित्र कर्तव्यों की लौ में छात्रों को पकाकर सही नागरिक गुणों का विकास करता है। बाद में यही नागरिक अपनी सकारात्मक सोच, और आत्मिक उदय के द्वारा अपने राष्ट्र के भविष्य को सुनहरा रूप देते है।

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक वह केन्द्रीय स्थल है जिसके चारों तरफ सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया घूमती रहती है। वह सिर्फ छात्र वर्ग में गुणों का विकास ही नहीं करता है, बल्कि शैक्षिक पर्यावरण में परिष्कार भी करता है। छात्र वर्ग, शिक्षक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं, क्योंकि वही ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें सभी अच्छाईयाँ विद्यमान रहती है। जब किसी छात्र से विद्यालय के प्रथम दिन के अनुभवों को वर्णन करने को कहा जाता है तो वह प्राथमिकता अपने शिक्षक को ही देता है। वह उसमें अपने भविष्य की कल्पना की उड़ान को देखता है, और अपने व्यक्तित्व में उसी प्रकार की गत्यात्मकता लाना चाहता है। वह उसके लिये सम्मान संकेत का कार्य करता है। इसका प्रमुख कारण शिक्षक का बाह्य व्यक्तित्व न होकर उसके ज्ञान की गहनता, शिक्षण का तरीका, छात्र सहयोग, आदि क्रियायें होती है। इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्यापक की दक्षता (प्रशिक्षण), शिक्षा प्रदान करने

के लिये आवश्यक है। प्रशिक्षित शिक्षक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों में मानवीय गुणों का विकास स्वतः ही करते रहते है। जो उनके संकलित व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं।

मानव जाति की "व्यक्तित्व" के बारे में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा प्राचीन समय से ही रही है। प्राचीन गीतों में, कहानियों में, प्रथाओं, विश्वासों और गलत धारणाओं, आदि में व्यक्तित्व के बारे में भ्रमात्मक धारणायें फैलायी जाती रहीं, जो विज्ञान के द्वारा प्रदत्त कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं हैं। मानवीय विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व के स्वरूप के विभिन्न मत विकसित होते रहें हैं, जिनमें एक व्यक्ति की अनुक्रियाओं के द्वारा उत्पन्न व्यवहारों के एकीकरण किसी उद्दीपक के प्रति स्थापित किया गया है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। संसार का प्रत्येक कण विज्ञान के प्रभाव से प्लावित हो रहा है। मानवीय जीवन की आवश्यकतायें भोजन, कपड़ा और मकान के अलावा व्यक्तित्व का अपना अलग स्थान है।

शिक्षक व्यक्तित्व के संबंध में एक कहावत "शिक्षक जन्म लेता है, बनाया नहीं जा सकता है।" प्रचलित है। वैज्ञानिक प्रशिक्षण ने इस कहावत की उपादेयता को गलत सिद्व कर दिया है। महान मनोवैज्ञानिक "वाटसन" का विश्वास प्रशिक्षण के द्वारा मन वाहा व्यक्तित्व विकसित करने में था। वर्तमान शिक्षकों की असफलता का कारण सही चयन का न होना है। विधालय एक तीर्थस्थान है जिसमें शिक्षक एक पुजारी है। पुजारी की सफलता उसके अपरिग्रहों एवं मनोभावों से होती है।वह अर्न्तमुखी होता जाता है क्योंकि उसको उन समस्याओं का हल खोजना होता है जो सामाजिक होती है। इसी विचार को शोधकर्ता ने अपने मस्तिष्क में स्थापित करके सेवा निवृत्त शिक्षकों को अपने अध्ययन हेतु चुना है ताकि उनकी समस्याओं से मुक्ति मिल सके।

<u>2— समस्या का आभास :—</u>

भारत एक समाजवादी, प्रजाताँत्रिक गणराज्य है। इसका उद्देश्य अपने नागरिकों शिक्षा के द्वारा मानवीय गुणों से युक्त करना है। यह कार्य, दक्ष शिक्षकों के द्वारा ही संपन्न हो सकता है, भले ही वे कियारत शिक्षक हों या अवकाश प्राप्त शिक्षक। समाज एवं राष्ट्र की संपन्नता में दोनों ही सह भागी होते हैं। अतः शोघकर्ता ने अवकाश प्राप्त शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनका समस्याओं को जानने के लिये अपना मन मनाया।

शिक्षकों और समाज का एक घनिष्ठ नाता है। शिक्षक अपने चिंतन और मनन के द्वारा अनुउत्तरित प्रश्नों को समाधान प्रदान करता है, ताकि समाज के पुराने और नवीन विचारों में समायोजन स्थापित हो सके। शोधकर्ता स्वयं शिक्षा विभाग से जुड़ा है, अतः यह प्रश्न बार बार मन में उठता रहता है कि शिक्षा के असंन्तुलन में शिक्षक कितना दोषी है ? शिक्षक स्वप्रेषित है या अन्य कारण से शिक्षक बना है। वह छात्र अवहेलना क्यों करता है ? वह पाठ्यक्रम को सकारात्मक रूप से पूरा क्यों नहीं करता है ? यह सब तथ्य स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक व्यक्तित्व की सार्थकता समस्या प्रधान हो चुकी है । अतः शिक्षक (शिक्षणरत तथा अवकाश प्राप्त) क्या चाहता है ? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? और वह स्व कार्यों से सन्तुष्ट क्यों नहीं हो पाता है ? इन सभी प्रश्नों के शोधकर्ता ने अपने विचारों में रखकर अवकाश प्राप्त शिक्षकों की अभिवृत्ति और समस्याओं को अध्ययन करने की योजना बनायी।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के अवकाश प्राप्त शिक्षक संगठन "प्राईमरी, माध्यमिक " के सचिवों और अध्यक्षों से मिला। उनसे प्राप्त विचारों से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि अवकाश प्राप्त शिक्षक समाज, परिवार, शिक्षक संगठन और सरकार सभी से अवहेलित है। परिणाम स्वरूप इन शिक्षकों में उत्तरदायित्व और कर्तव्यनिष्ठा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण व शोच विकसित हो गया है। मेरे विचार से शिक्षणरत शिक्षक छात्र हित को ही लक्ष्य मानता है, जबकि अवकाश प्राप्त शिक्षक सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में सेवा निवृत्त शिक्षकों का महत्व और बढ़ जाता है। अतः शोधकर्ता ने इनकी अभिवृत्ति और समस्याओं को अध्ययन हेतु चुना।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता शिक्षक – प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति जानने के लिये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के सभी प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा प्राईमरी शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्रों पर गया। वातावरण में व्याप्त प्रशिक्षण गन्ध को सूँघा, सुना और जाना। परिणाम स्वरूप यह कहना उपयुक्त न होगा कि शिक्षक प्रशिक्षण में सामान्य नियमों तक का पालन नहीं किया जाता है। प्रशिक्षण से सम्बन्धित साहित्य, जनरल्स, पुस्तकें और विज्ञापन आदि का नितान्त अभाव है। उनमें वातावरण के प्रति उत्साह नहीं है, और शिक्षक समर्पण का अभाव है। उपर्युक्त वातावरण अवकाश प्राप्त शिक्षक की मनोदशा का निर्धारक होता है। क्योंकि अवकाश प्राप्ति के पश्चात् शिक्षक की पूँजी, मान – सम्मान उसकी विशेषतायें, सर्मपण और चरित्र ही होता है। अतः शोधकर्ता के मन में यह प्रश्न भी उठा कि प्रशिक्षण, शिक्षकों में उन मानकों को विकसित करने में असफल रहता है जो अवकाश के समय शिक्षक में निराशा, तनाव, और कुण्ठा को जन्म देते है।

भारत में शिक्षक – प्रशिक्षण के विकास पर एक दृष्टि :–

हमें महाभारत के समान प्राचीन ग्रन्थों में शिक्षक के गुणों एवं सफल शिक्षण विधियों का वर्णन तो मिलता है परन्तु शिक्षक प्रशिक्षण का कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि प्राचीन भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था थी ही नहीं। वस्तुतः उस सुदूर अतीत में भी शिक्षक प्रशिक्षण की पद्धति प्रचलित थी। प्राचीन साहित्यों से यह स्पष्ट है कि उन दिनों न केवल शिक्षण की तकनीकि ही विकसित थी बल्कि पठन – पाठन का कार्य मौखिक रूप में चलता था जो उन दिनों की परिस्थितियों एवं प्रभावी धार्मिक ग्रन्थों के अनुरूप था। जैसा कि तार कलंकार पृष्ठ 299 – 301 में उल्लेख हैं कि धार्मिक सत्य को समझने के लिये पाँच पदों का अनुसरण किया जाता था, जिसका अभिप्राय निम्न है – (क) – अध्यापन (सुनकर शब्दों का अध्ययन), (ख) – शब्द (भावों को समझना), (ग) – उहा (सामान्यीकरण हेतु तर्क करना), (घ) – सुहृद प्राप्ति (मित्रों एवं शिक्षकों द्वारा पुष्टिकरण), (ड) – दान (प्रयोग), उन दिनों में पाठ्य वस्तु के उच्चारण सुर ताल के साथ बड़े ही व्यवस्थित रूप में परिश्रम के साथ प्रस्तुत किये जाते थे। इनके शिक्षण क्रमबद्ध ढँग से मनोवैज्ञानिक आधार पर होते थे। तथा छात्रों की सम्पूर्ण शिक्षा, शिक्षकों के व्यक्तिगत निर्देशन में होती थी। जिस शिक्षक के पास अधिक छात्र होते थे, वे अग्रिम तथा योग्यता छात्रों को निम्न वर्ग के छात्रों को बढ़ाने का कार्य सौंपते थे। जिन्हें "पित्ती आचार्य" कहा जाता था। उदाहरण के रूप में भीष्म के शिष्य पाण्डू एवं द्रोणा तथा कुरू कें प्रिन्स सुतासम को उधृत किया जा सकता है। इसी तरह के उदाहरण अपस्थामा ध र्म सूत्र (11 , 7 , 2 8) तथा मनु ।।, 208 में पाये जाते हैं। यह पित्ती आचार्य अपने गुरू के आदेशों के अनुसार निम्न कक्षाओं के छात्रों को शिक्षा देते थे और उनकी प्रगति एवं व्यवहार के सम्बन्ध में समय समय पर गुरू को सूचना देते थे। उच्च कक्षाओं के अग्रिम छात्रों या नायकों (मानीटर) द्वारा निम्न कक्षाओं के छात्रों को शिक्षण देने की यह प्रणाली (कक्षा नायकीय पद्धति) (मानीटोरियल सिस्टम) कहलाती थी। इस पद्धति में शिक्षा सिद्धान्त नामक विषय का कोई स्थान नहीं था। किन्तु जिन नायकों को शिक्षण कार्य सौंपा जाता था, उनकों कुछ समय के पश्चात् शिक्षण विधियों एवं विद्यालय संचालन का पर्याप्त व्यवहारिक प्रशिक्षण स्वतः ही प्राप्त हो जाता था। अतः उन्हें स्वतन्त्र रूप से शिक्षण कार्य में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता था। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में "शिक्षण प्रशिक्षण" का कार्य होता था परन्तु इसमें किसी सैद्धान्तिक ज्ञान का स्थान नहीं था, बल्कि व्यवहारिक प्रशिक्षण ही प्रधान था और "करके सीखना"

विधि का अपनाया जाता था। प्राचीन भारत में इसी को "शिक्षण प्रशिक्षण" का अप्रत्यक्ष आरम्भ माना जाता है। इसीलिये प्रशिक्षण विद्यालयों के अभाव में भी शिक्षकों की दक्षता में कोई कमी नहीं थी।

मध्यकालीन युग एवं मुस्लिम काल में भी "कक्षा नायकीय पद्धति" ही प्रचलित थी। जैसा कि जाकर (1936) ने लिखा है कि 1000 से 1800 ए. डी. में सभी पाठशालों, मकतबों एवं मदरसों में शिक्षण की व्यवहारिक पद्धति ही प्रयोग की जाती थी जिसके अन्तर्गत वरिष्ठ छात्र अपने गुरूओं के कार्यों में सहयोग प्रदान करते थे। परिणाम स्वरूप उन्हें शिक्षण कार्य का अच्छा व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता था। इस तरह से ये छात्र अन्य सहपाठी छात्रों से वरिष्ठ, अग्रिम तथा योग्य माने जाते थे। भारत में मुस्लिम काल को शैक्षिणिक अन्धकार का युग माना जाता है। इस काल में में अकबर के अतिरिक्त और किसी भी मुस्लिम शासक ने शिक्षा में विशेष रूचि की अभिव्यक्ति नहीं की। वस्तुतः भारत में वैदिक काल से लेकर 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक शिक्षण प्रशिक्षण की यदि कोई विधि थी, तो वह "कक्षा नायकीय पद्धति" थी, जिसे छात्राध्यापक पद्धति भी कहा जाता है।

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में डेन मिसनरियों ने पथ प्रदर्शन का काम किया। उन्होंने (सन् 1716) ट्रावन कोर में शिक्षण प्रशिक्षण हेतु सर्व प्रथम नार्मल स्कूल स्थापित किया, जहाँ के प्रशिक्षित शिक्षकों को प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त किया जाता था। तदुपरान्त उन्होंने सन् 1793 में सीरामपुर में एक और नार्मल स्कूल की स्थापना की। उनक उत्कृष्ट उदाहरण से प्रभावित होकर मद्रास, बम्बई, कलकत्ता की शिक्षा परिषदों ने प्राथमिक शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया। जिसमें छात्राध्यापक पद्धति का प्रयोग होता था। इसी अवधि में डॉ. एन्डूबेल 1787 में अंग्रेजों द्वारा संचालित "मद्रास सैनिक अनाथालय" की स्थापना की, जिसमें "कक्षा नायकीय" (छात्राध्यापक) पद्धति अपनायी गयी थी इस पद्धति के अनेक नाम दिये गये। जैसे – "मद्रास पद्धति, लकास्ट्रीयन पद्धति, ग्लासगो पद्धति तथा पेस्तालजी पद्धति" आदि।

ब्रिटिश काल 1801 – 1882 तक गैर सरकारी संगठनों ने शिक्षक – प्रशिक्षण के लिये सराहनीय कार्य किया। परन्तु उनका यह कार्य प्राथमिक विद्यालयों के लिये शिक्षकों के प्रशिक्षण तक ही सीमित था। सन् 1815 में बम्बई की देशी शिक्षा परिषद ने 24 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया और उनको प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षण स्तर की ऊँचा उठाने के लिये प्रान्त के विभिन्न भागों में शिक्षण हेतु भेजा। सन् 1819 में बंगाल में "कलकत्ता विद्यालय परिषद" का निर्माण हुआ। इस परिषद में "छात्राध्यापक पद्धति"

के अनुसार शिक्षण प्रशिक्षण का कार्य आरम्भ किया। इस तरह से भारत में इंग्लैन्ड के समानान्तर शिक्षक प्रशिक्षण का विकास हुआ। इसी क्रम में सन् 1823 में बम्बई में "नेटिभ स्कूल बुक" एवं "स्कूल सोसाइटी" की स्थापना हुई, जो आगे चलकर लकास्ट्रीयन पद्धति द्वारा प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य करने लगी। सन् 1825 में ईस्ट इन्डिया कम्पनी के संचालकों ने "कलकत्ता विद्यालय परिषद" के कार्य को बल प्रदान करने के लिये पाँच सौ रूपये प्रतिमाह सहायता अनुदान देने की घोषणा की। सन् 1826 में सर थामस मुनरों के प्रस्ताव से प्रशिक्षण हेतु मद्रास नगर में केन्द्रीय स्कूल की सृष्टि की गई। उक्त अवधि में गैर सरकारी संगठनों के कार्य से अनुप्राणित होकर "ईस्ट उण्डिया कम्पनी" ने भी शिक्षकों के प्रशिक्षण की दिशा में "नार्मल कक्षायें" प्रारम्भ की, जो बम्बई 1845, कलकत्ता 1849, आगरा 1852, मेरठ 1856 और बनारस 1857 में थीं। "बुड के आदेश पत्र" 1854 में प्रत्येक प्रान्त में ट्रेनिंग स्कूल एवं कक्षायें खोलने का सुझाव दिया गया था। परन्तु तात्कालिक शासकों द्वारा उसका अचित् अनुपालन नहीं किया गया, जिसकें सन्दर्भ में भारत में सचिव लार्ड स्टैनले 1859 ने अपने पत्र में लिखा – "कम्पनी के संचालकों ने जिस सीमा तक प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना का विचार प्रकट किया था, उस सीमा तक यह कार्य नहीं किया गया है।" अतः लार्ड स्टेनले ने अपने "आदेश पत्र" में शिक्षक प्रशिक्षण की सुविधाओं का विस्तार करने और प्रशिक्षण संस्थाओं को सहायता अनुदान दिये जाने का आदेश दिया। जिसके फलस्वरूप 1881 – 82 तक सम्पूर्ण देश में 106 नार्मल स्कूलों की स्थापना हो गयी। इन स्कूलों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों की संख्या 3,886 थी और इनका वार्षिक व्यय लगभग 4 लाख रूपये था। (हण्टर कमीशन) रिपोर्ट पैरा (34) , 1801 – 1882 तक स्थापित की जाने वाली प्रशिक्षण संस्थाओं केवल प्राथमिक शिक्षकों तक ही सीमित थी। माध्यमिक स्कूलों के लिये उक्त अवधि तक सम्पूर्ण देश में मात्र दो प्रशिक्षण संस्थाओं का शिलान्यास हुआ, जो क्रमशः मद्रास (1856) एवं लाहौर (1880) में थे।

सन् 1882 – 1947 के ब्रिटिश काल में 1882 के पहले शिक्षकों को किसी प्रकार का वास्तविक प्रशिक्षण नहीं प्राप्त होता था, क्योंकि उन्हें शिक्षण का कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिलता था। शिक्षके प्रशिक्षण की वास्तविक आवश्यकता का अनुभव" हंन्टर कमीशन " की सिफारिशों के फलस्वरूप हुआ। " हण्टर कमीशन " 1882 के सुझावों के परिणाम स्वरूप नार्मल स्कूलों, ट्रेनिंग स्कूलों और ट्रेनिंग कालेजों की आशातीत वृद्धि हुई। साथ ही सभी स्तरों के शिक्षकों के प्रशिक्षण का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आ गया। इस तरह से 18 वीं. शताब्दी के अन्त तक 133 नार्मल स्कूल, 50 ट्रेनिंग स्कूल और छः

ट्रेनिग कालेज (मद्रास, लाहौर, कुरसांग, जबलपुर, इलाहाबाद, और राजमुन्दरी) खुल गये थे। हण्टर कमीशन के उपरान्त 1904 से 1913 के सरकारी प्रस्तावों ने शिक्षक प्रशिक्षण के विषय में नवीन एवं उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये, जिनके फलस्वरूप शिक्षक प्रशिक्षण का उत्तरोत्तर विकास होता चला गया। शिक्षा नीति संबंधी सरकारी प्रस्ताव 1913 वें प्रस्ताव के माध्यम से नीति निर्धारित करते हुये शिक्षक प्रशिक्षण के विकास में अतिशय योग देते हुये कहा है कि " शिक्षा की आधुनिक प्रणाली में किसी भी शिक्षक को उस समय तक शिक्षण कार्य करने की अनुमति प्रदान न की जाये। जब तक कि उसके पास ततसम्बन्धी प्रमाण पत्र न हो।"

सन् 1917 में " कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग " (सैडलरकमीशन) ने भारत में उच्च्य शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षण के विषय में सुझाव देकर उसकी विकास प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की जिसके अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालय में " शिक्षा विभाग " खोलने की सिफारिश की गयी। जिसका अभिप्राय सिर्फ शिक्षकों को प्रशिक्षण देना ही न हो बल्कि उसी क्षेत्र में प्रयोग एवं अनुसंधान करना भी था। 1921 – 22 में शिक्षा प्रान्तीय सरकारों के उत्तरदायित्व के अन्तरगत आ गयी। जिससे शिक्षकों की आवश्यकता अनुसार अध्यापक प्रशिक्षण में भी व्यापक विस्तार हुआ। इस तरह से सभी प्रशिक्षण संस्थाओं में स्त्री एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की संख्या में बृद्धि होने लगी तथा अधिकाँश विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान एवं इसका प्रयोग, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सहायक सामग्रियों के प्रयोग आदि सभी का समावेश करते हुये शिक्षा विभाग खोले, गये जिनसे नये शिक्षण प्रशिक्षण व्यवहार को जन्म मिला। इन सब प्रयासों के बावजूद प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या में वांछित बृद्धि नहीं हुई। 1926 – 27 तक उत्तर प्रदेश में 44 प्रतिशत पुरूष एवं 22 प्रतिशत महिला अध्यापक ही प्रशिक्षित हो सके। 1935 – 48 के बीच उत्तर प्रदेश में आचार्य नरेन्द्र देव समिति की सिफारिश एवं व्यक्तिगत संस्थायें खोलने की अनुमति दिये जाने के कारण प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या वृद्धि हुई।

इस प्रकार आयोंगों के प्रस्तावों एवं सुझावों के परिणाम स्वरूप शिक्षक प्रशिक्षण की दशा एवं सुविधाओं में क्रंमशः उन्नति होती चली गयी और 1947 तक देश में – (क) – नार्मल स्कूल (ख) – माध्यमिक प्रशिक्षण विद्यालय (ग) – प्रशिक्षण महाविद्यालय, ये तीन तरह की प्रशिक्षण संस्थायें थीं।

स्वतन्त्र भारत में शिक्षक प्रशिक्षण

स्वतन्त्र भारत में शिक्षक शिक्षा अपने विकास मार्ग पर अतिद्रुतगति से अग्रसर हुयी। फलतः शिक्षा के अनेक क्षेत्रों के लिये प्रशिक्षित अध्यापकों की माँग में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। इसीलिये शिक्षा की पुनर्रचना में शिक्षक प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। उनकी कमियों को दूर करने एवं उनमें गुणात्मक उन्नति के

उपायों को इंगित करने के लिये शिक्षा आयोंगो की नियुक्ति की गयी। जिनमें प्रमुख निम्न हैं :—

(1) — राधा कृष्णनन आयोंग।

(2) — मुदालियर आयोग।

(3) — कोठारी आयोग।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 — 49 ने एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण संस्थानों की दक्षता में अन्तर पाया और प्रशिक्षण की संरचना को पुनः इस प्रकार प्रारूपित करने की सिफारिश की कि विद्यालयों में प्रशिक्षण की अवधि एवं छात्रों की व्यावहारिक उपलब्धियों को विशेष महत्व दिया जाये।

सन् 1950 से देश में अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार एवं समस्याओं के निराकरण के संबन्ध में अनेक महत्तवपूर्ण प्रयास किये गये जिसके अंर्तगत अखिल भारतीय स्तर पर प्रशिक्षण विघालयों की संगोष्ठी क्रमशः बड़ोदा एवं मैसूर में आयोजित की गयी।

माध्यमिक शिक्षा अयोग 1952—53 ने उस समय अध्यापक प्रशिक्षण की संचालित तीन तरह की संस्थाओं को कम करके दो तरह के प्रशिक्षण विद्यालयों कील संस्तुति की। प्रथम ट्रेनिंग कालेज, द्वितीय ट्रेनिंग स्कूल। ट्रेनिंग कालेजों को विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध करने तथा ट्रेनिंग स्कूलों हेतु अलग से बोर्ड बनाने की सिफारिश की गयी। प्रथम सिफारिश को तो अनेक विश्वविद्यालयों ने क्रियान्वित कर दिया परन्तु द्वितीय सिफारिश पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया।

तत्पश्चात् माध्यमिक एवं प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षया हेतु सुझाव देने के लिये अनेक समितियों का गठन किया गया जिनमें से प्रमुख निम्न है :—

(1) — माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों एवं पाठ्यक्रमों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन दल 1954।

(2) — अंग्रेजी भाषा केन्द्रीय संस्थान हैदराबाद 1958।

(3) — भारत में प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षा — 1961।

सन् 1960 के बाद देश में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हेतु अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये जिसके तहत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद तथा राज्य शिक्षा संस्थानों की स्थापना की गयी। अध्यापक प्रशिक्षण में शोध कार्य करने, प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार करने एवं अन्य समस्याओं के निवारण हेतु चार क्षेत्रीय महाविधालयों भोपाल, भुवनेश्वर, अजमेर एवं मैसूर की स्थापना की गयी। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी चार वर्षीय समन्वित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम लागू किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से एम.एस. विश्वविद्यालय

बड़ोंदा में अध्यापक शिक्षा में शौध एवं सुधार हेतु सी. ए. एस. ई. डिपार्टमेन्ट खोला गया। अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षक परिषद ने जून, 1964 में अपनी सातवीं विचार गोष्ठी में यह सुझाव दिया कि प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के बीच अन्तर को कम करने हेतु एक विस्तुत प्रशिक्षण कालेज की स्थापना की जाये। शिक्षा आयोग 1964 – 66 ने भी अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं गुणात्मक सुधार हेतु विशेष ध्यान एवं सुझाव दिया जिसके परिणाम स्वरूप अलीगढ़, कुरूक्षेत्र एवं कानपुर विश्वविद्यालयों ने एम. ए. स्तर पर शिक्षा शास्त्र पाठ्यक्रम शुरू किया। कुछ विश्वविद्यालयों ने अध्यापक शिक्षा के प्रसार हेतु ग्रीष्मकालीन एवं पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये। क्षेत्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं राज्यों के प्रशिक्षण कालेजों ने अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षित करके उनकी संख्या में कमी कर दी। अध्यापक शिक्षा की समस्याओं के निराकरण हेतु अनेक राज्यों मे अध्यापक शिक्षा को विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग से सम्बद्ध कर दिया। परिणामस्वरूप योजना आयोग के निर्देशों का अनुपालन करते हुये चौथी पंचवर्षीय योजना (1969 – 74) में शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण कार्य हुआ, जिसके कारण देश में वर्ष 1968 से 69 तक प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों का प्रतिशत् 77 प्रतिशत हो गया । उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों का वर्ष 1968 – 69 ने प्रतिशत 73 प्रतिशत था। चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरणों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली ने कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम में सुधार करके 10 + 2 + 3 पद्धति लागू किया । जिसके फलस्वरूप विज्ञान शिक्षकों की माँग बढ़ गयी, इसलिये प्रशिक्षण विद्यालयों में 50 प्रतिशत स्थान विज्ञान स्नातकों एवं परास्नातकों के लिये कर दिये गये। वर्ष 1973 – 74 तक भारत वर्ष में ट्रेनिंग स्कूल एवं ट्रेनिंग कालेजों की संख्या क्रमशः 446 एवं 1120 थी तथा प्राथमिक, मिडिल तथा माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रतिशत क्रमशः 82.6, 84.9 तथा 80.4 था।

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अनुसार 1950– 83 की अवधि में शिक्षकों की कुल संख्या 7.5 लाख से बढ़कर 32 लाख से भी अधिक हो गयी, जो प्रतिवर्ष 4.6 प्रतिशत की वृद्धि बताती है। जहाँ प्राथमिक स्कूली शिक्षकों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि की दर 3 प्रतिशत रही, वहीं सबसे अधिक वृद्धि मिडिल स्कूल के शिक्षकों ने 7.5 प्रतिशत बतायी गयी, शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पुरूष शिक्षकों की संख्या की तुलना में महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत ज्यादा थी। प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिशत ता 1949 – 50 में 56.1 से बढ़कर 1982 – 83 में 88.4 प्रतिशत हो गयी। आँकड़ों से पता चलता है कि प्राथमिक स्कूलों के स्तर पर 1971 – 72 से 1982 – 83 के दौरान शिक्षक शिष्य अनुपात में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था। मिडिल स्कूलों में शिक्षक

शिष्य अनुपात कुछ कम हो गया।

1.3 – समस्या की आवश्यकता :–

शिक्षक के द्वारा समाज का सन्तुलन स्थापित होता है। आदिकाल से लेकर वर्तमान तक में शिक्षक का अपना महत्व तथा स्थान रहा है। अतः सेवा निवृत्त शिक्षकों के बारे में जानना, उनकी समस्याओं की समझना और उनको समाज राष्ट्र निर्माता मानना आज की महती आवश्यकता है। आज उन्हें अपना स्वाभिमान बनाये रखने का अवसर मिला होता तो शिक्षक संगठनों का जन्म ही न होता । शिक्षक को आज ही नहीं वैदिक काल से समाज को दिशा देना, राष्ट्र की आवश्यकतानुसार नागरिक तैयार करना और समाज तथा राजशक्ति के बीच सामंजस्य बनाये रखना आदि उत्तरदायित्वों का बहन निस्वार्थ करना होता है। अतः आज वर्तमान शोध समस्या की उपादेयता को शोधकर्ता निम्न रूपों में वर्णन करता है :–

सेवा निवृत्त शिक्षक एक अनुभवी, समस्या समाधान में निपुण और आने वाले कल के लिये उपयोगी होता है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक संगठनों को इस ओर ध्यान देने के लिये बाध्य कर देना कि कोई भी शिक्षक अपने को असहाय असमर्थ और अकेला महसूस न करे। उसके कष्टों को दूर करने के लिये संगठन साध ान जुटायेगा, उनकी सुख सुविधा के लिये पेन्शन की समुचित व्यवस्था करेगा। उनका सम्मान परिवार में बना रहे इसके लिये संगठन के सदस्य समय – समय पर मीटिंग करके व्यवस्था बनायेगें। इस कार्य हेतु "शिक्षक निधि" को भी स्थापित किया जा सकता है। इस निधि से सेवा निवृत्त शिक्षकों को बिना ब्याज के सरल किश्तों पर आवश्यक कामों हेतु धन उपलब्ध कराया जा सकता है, ताकि वे अपने बच्चों को सुस्थापित कर सकें।

प्रस्तुत समस्या की उपादेयता शिक्षा विभाग के लिये भी है। शिक्षा विभाग के अन्दर बनाये गये अवकाश प्राप्त शिक्षक नियमों में परिवर्तन, सुध ार आदि आसानी से किये जा सकते हैं। कोई भी नियम कर्मचारी हित के लिये होते हैं ना कि विभाग के हित के लिये। विभाग की उपयोगिता तभी सार्थक होती है जब वह अपने कर्मचारियों के हित के लिये कार्य करें। इस प्रकार से वे अधिक सक्रिय रहकर समाज के नव निर्माण मे सहयोग कर सकते हैं। इस हेतु पैन्शन नियमों में सरलता, प्रोवीडेन्ट फन्ड का सही प्रयोग, परीक्षाओं सम्बन्धी कार्य करवाना, विशेषज्ञ नियुक्त करना, शिक्षक निधि का निर्माण , बीमा करवाना, निशुल्कः चिकित्या सुविधा, यात्रा में सुविधा, उनके बच्चों को प्रमुखता देना आदि क्षेत्रों में सहयोग किया जा सकता है।

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की अभिवृत्ति और समस्याओं के अध्ययन द्वारा नयी पीढ़ी और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी लाभ हो सकता है। वे उन्हें अपना पूर्वज मानकर उनकी देखभाल करें और उनके अनुभवों से जीवन यापन का ढ़ंग सीखें। शिक्षक शान्त, धैर्य, और समर्पण का अनोखा प्राणी होता है। वह कम से कम आवश्यकताओं की पूर्ति कर समाज को दिशा देता है ताकि समाज के द्वारा शिक्षा का प्रचार और प्रसार निर्वाध गति से चलता रहे। शिक्षा वह साधन प्रदान करती है। जो प्रत्येक प्राणी को अपने साध्य को प्राप्त करने के लिये ताकत देती है। शिक्षक समाज से कमियों को, कुप्रथाओं को कुसंस्कारों को हटाता है, और प्रत्येक में समता को व्यवस्थित करता है। फिर व्यवस्थित करके देश को अच्छे नागरिक देता है। शिक्षक प्रजातान्त्रिक मूल्यों का प्रसार प्रत्येक नागरिक में करता है। समाज के अन्दर मूल्यों का समावेश, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण और "वसुधैव कुटुम्बकम् " के भाव का संचरण शिक्षक के द्वारा ही होता है।

"लिंटन" (1955 पृ0 – 279) का मत है कि व्यक्तित्व का गठन "कार्य व्यवहार " के सिद्धान्त के आधार पर होता है इसमें आयु, लिंग, व्यवसाय, समाज, परिवार और अनुकूलता आदि के प्रभाव को प्रमुखता दी जाती है। इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक मानव के व्यक्तित्व विकास में उसके पारिवारिक व्यक्तित्व का अधिक महत्व होता है। इन सदस्यों में परिपक्व , अनुभवी और दक्ष सदस्य का महत्व अधिक बढ़ जाता है। यही व्यक्तित्व सेवा निवृत्त शिक्षक में होते हैं, जो अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से परिवार के सदस्यों की आदतों, रूचियों और मनोवृत्तियों को दिशा देते हैं तथा समानता, सहिष्णुता, सहयोग और सहभागिता आदि प्रजातान्त्रिक गुणों का विकास करने में सहयोग देते हैं। "शर्मा" (1968, पृ0 585) का मत है कि जो बच्चे आत्म विश्वासी होते हैं उन पर परिवार के द्वारा प्रेम, आदतें, रूचियाँ ओर मूल्यों का सकारात्मक प्रभाव डाला गया है।

इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि अवकाश प्राप्त शिक्षक एक अवांछनीय, निरीह प्राणी नहीं होता है बल्कि समाज के लिये एक परिपक्व नेता होता है जिसके पास सभी समस्याओं का हल होता है, वशर्ते वह समस्या ग्रस्त न हो। वह सामाजिक प्रांणी है, उसकी अपनी अभिवृत्तियों होतीं हैं जिसका निर्माण अनुभव और दक्षता के आधार पर होता है। इसीलिये शोधकर्ता ने अपने अध्ययन का विषय अवकाश प्राप्त शिक्षक, अभिवृत्ति, समस्याओं को बनाया है।

1.4 – समस्या का स्पष्टीकरण :–

शोधकर्ता ने अपने विचारों से प्रेरित होकर अपने शोध हेतु बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के सेवा निवृत्त प्राईमरी एवं माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनकी

समस्याओं का अध्ययन नामक विषय को चुना है। प्रस्तुत शोधकार्य सिर्फ झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों में स्थापित प्राइमरी तथा माध्यमिक अवकाश प्राप्त शिक्षक – शिक्षकाओं पर किया जायेगा। इनमें नगरीय शिक्षक / शिक्षिकाओं, कस्वे की शिक्षिकायें। शिक्षक तथा ग्रामीण अंचल की शिक्षिकायें तथा शिक्षकों का सन् 1986 से 1998 वर्ष तक अवकाश प्राप्त के तथ्य संकलन हेतु स्थान दिया गया है। न्यादर्श हेतु चुने गये सभी अवकाश प्राप्त शिक्षक / शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर अध्ययन किया जायेगा। अतः समस्या के विभिन्न आयामों का वर्णन निम्न है :–

<u>अभिवृत्ति :–</u>

अभिवृत्ति और मूल्य दोनों का विकास काल्पनिक आधार पर होता है। सामान्य धारणा के अनुसार अभिवृत्ति व्यक्ति की वैयक्तिकता के प्रति पूर्व स्थिति का आभास दिलाते हैं। इससे यह स्पष्ठ हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं के प्रति पर्यावरण से क्या आशा करता है ? परिणाम् स्वरूप अभिवृत्ति का अर्थ "तत्परता की दशा या स्थिति" से लगाया जाता है जो प्रेरकों के उत्पन्न करने में सहायक होती है। इसका वास्तविक रूप तब देखने को मिलता है जब एक निश्चित उद्दीपक के प्रति लगातार तत्परता के साथ प्रतिक्रिया का विचार किया जाता है। इसीलिये इसे क्रिया के प्रति तत्परता या परिस्थिति के प्रति तत्परता का भाव माना गया है। "रोकीज" आल्पोर्ट और अन्य विद्वानों ने एक मत से स्वीकार किया है कि जब अभिवृत्ति एक निश्चित वस्तु या परिस्थिति पर प्रकाश डालती है, तो व्यक्ति की क्रियाशीलता में बृद्धि होकर निश्चितता बनती है इसी विचार धारा को शोधकर्ता ने अपने शोध का केन्द्रीय विषय बनाया है। अतः अभिवृत्ति पर व्यापक विचार निम्न प्रकार से प्रस्तुत हैं :–

<u>"किम्बलयंग (1960)" :–</u>

"आवश्यक रूप से अभिवृत्ति पूर्व ज्ञान रूपी प्रतिक्रिया का स्वरूप और क्रिया का प्रारम्भ है, जिसका पूर्ण होना आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रतिक्रिया की इसतत्परता में किसी प्रकार की विशिष्ट या सामान्य परिस्थिति निहित रहती है।"

<u>"जेम्स डेवर (1968)" :–</u>

"अभिवृत्ति मत, रूची तथा उद्देश्य की एक लगभग स्थाई तत्परता की प्रवृति है जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और एक उचित् प्रक्रिया की तैयारी निहित होती है।"

"क्रच–क्रच फील्ड तथा बैलेची (1962)" :–

"व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार उसकी अभिवृत्तियों को प्रतिबिमबित करता है। यह किसी सामाजिक वस्तु के प्रति धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यॉंकनों, संवेगात्मक भावों तथा पक्ष या विपक्ष के क्रियात्मक सुझावों की अपेक्षाकृत स्थायी पद्धतियाँ हैं।"

"सीकार्ड तथा बैकमैन (1964)" :–

"अपने पर्यावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति के नियन्त्रित भाव और विचार और कार्य करने की पूर्ववृत्ति ही अभिवृत्ति कहलाती है।"

"आयजेनिक (1972)" :–

"सामान्यतः अभिवृत्ति की परिभाषा किसी वस्तु या समूह के सम्बन्ध में प्रत्यक्षात्मक वाह्य उत्तेजनाओं की उपस्थिति में व्यक्ति की स्थिति और प्रति उत्तर तत्परता के रूप में की जाती है।"

अभिवृत्तियों का निर्माण सामाजिक जीवन में होता है। ये व्यक्ति की अर्जित विशेषतायें होती है। अतः इनको ही व्यक्ति की प्रत्येक क्रिया का आध ाार माना जाता है। क्रच – क्रच फील्ड (1950) का मानना है कि अभिवृत्ति व्यक्तित्व को निरन्तरता प्रदान करती है ये उसके दैनिक प्रत्यक्षीकरण और प्रतिक्रियाओं को अर्थ पूर्ण बनाती है तथा उसके विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होती है।

"थामस और जेनानायकी" :–

" ने अभिवृत्ति को व्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया माना है जो उसकी वास्तविक और आशावान प्रतिचारों को सामाजिक संसार के प्रति निश्चित करती है।"

"डूब" महोदय ने अभिवृत्ति को एक संकाहीन प्रतिचार के रूप में प्रयोग किया है जो व्यक्ति के वाह्य व्यवहार के तरीकों, पूर्वाभाष और मध्य स्थिति पर प्रकाश डालता है। इसी प्रकार से "कैम्पबेल" महोदय ने अभिवृत्ति को सामाजिक प्रतिचारों का एक गुच्छा माना है जो सामाजिक वस्तुओं के प्रति इंगित करता रहती है।

"न्यूकोम्ब" महोदय के विचारों में अभिवृत्ति, व्यक्ति द्वारा अपने पर्यावरण के प्रति लगातार सामान्य पूर्व स्थिति को प्रकट करती है ताकि वह अपने पर्यावरण के प्रति समायोजन में सफल रह सके।

"आल्पोर्ट" महोदय ने अभिवृत्ति का वर्णन विस्तृत और स्पष्ट रूप से किया है। यह मानसिक और शारीरिक रूप से तत्परता की एक दशा है जिसका निर्माण अनुभव द्वारा होता है। इसके वाह्य निर्देशन और गत्यात्मक प्रभाव व्यक्तियों के प्रतिचारों

पर पड़ते हैं। जिनको वह उन वस्तु और परिस्थिति के प्रति प्रदर्शित करता है जो उससे सम्बन्धित होते हैं।

"आसगुड" महोदय ने अभिवृत्ति को प्रत्यों के मूल्याँकित आयामों के रूपों में वर्णन किया है। " इगलिश व इंगलिश" ने अभिवृत्ति को आंतरिक रूप से सीखा प्रभाव माना गया है। जो निश्चित वस्तु के प्रति एक समान व्यवहार स्पष्ट करता रहता है। इसी प्रकार से "न्यूमली" महोदय ने अभिवृत्ति को पूर्व प्रदर्शित व्यवहार माना है जो एक निश्चित मात्रा में वस्तु के प्रति, संस्था के प्रति, व्यक्तियों के प्रति नकारात्मक रूप से या सकारात्मक रूप में साकार होता रहता है।

"थर्स्टन" महोदय ने अभिवृत्ति को मानव की आकांक्षाओं, भावनाओं, जलन, पूर्व निर्मित सिद्धान्त, विचारमय धमकियाँ आदि के रूप में परिभाषित किया है जो किसी विशेंष दशा के प्रति प्रतिचार करने को बाध्य करते है।

"क्रंच – क्रंच" महोदय ने अभिवृत्ति को किसी सामाजिक वस्तु के प्रति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित स्थाई मूल्याँक (सकारात्मक या नकारात्मक) भाव और क्रियाओं प्रवृत्तियों आदि के रूप में वर्णन किया है। इसीप्रकार से "एण्डरसन" महोदय ने लिखा है कि अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति के विश्वासों की पूर्ण क्षमताओं को प्रकट करती है। जिसका मापन किया जा सकता है। इससे वस्तु का मूल्याँकन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में किया जा सकता है। जैसे अच्छा – बुरा, साफ – गन्दा आदि।

"शा एवं रायट" महोदय ने अभिवृत्ति को व्यक्ति की स्थाई व्यवहार प्रणाली माना है जिसके द्वारा वह किसी व्यक्ति, वस्तु, विचार का मूल्याँकन प्रभावशाली प्रतिचार के द्वारा प्रकट करता है। यह प्रभावशाली प्रतिचार सीखा हुआ होता है और इसका प्रगटीकरण सामाजिक उद्दीपक या सामाजिक वर्ग के प्रति किया जाता है। अभिवृत्ति के सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा दी गई व्याख्याओं से स्पष्ट होता है कि इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। यदि हम इन व्याख्यायों पर अपने विश्लेषण करें तो पाते हैं कि सभी ने एक स्तर से अभिवृत्ति की कुछ समानताओं को वर्णित किया है। अभिवृत्ति किसी सामाजिक, उद्दीपक के प्रति चिरस्थायी प्रतिचार को प्रगट करता है, जो व्यक्ति के बाहय व्यवहार की परिस्थिति के प्रति अंतःक्रिया के साथ निर्देशित और मार्गदर्शित करता है।

व्यक्ति के व्यवहार मूल्याँकन में और उसको निश्चित करने में – अभिवृत्ति के प्रति विचार भिन्नता सामान्य या विशिष्ट क्षेत्र में उपयुक्त प्रतीत नहीं होती

है। शोधकर्ता का मानना है कि अभिवृत्ति का प्रयोग जिस रूप से किया जाता है वही इसकी विशिष्टता को प्रगट करने वाला होता है। इसीलिये "आईजेनिक" और रोकीज" ने अभिवृत्ति को एक व्यक्ति का सामान्यीकृत और व्यापक स्वभाव के रूप में प्रगट किया है। इसी प्रकार से "हाउलैंड, जैनिस, कैली, क्रैन्च, क्रचफील्ड, शैरिफ और कैण्टल" आदि प्रवुद्ध विद्वानों ने अभिवृत्ति को विशिष्ट सन्दर्भ में या किसी विशिष्ट वर्ग के सन्दर्भ में व्यवहार का प्रगटीकरण माना है। अतः शोधकर्ता के उद्देश्य की पूर्ति लिये दोनों मतों मे से बाद वाला मत उचित् प्रतीत होता है, और उसने अभिवृत्ति को विशिष्ट सन्दर्भ में किये गये व्यक्ति के व्यवहार के प्रगटीकरण के रूप में माना है। यह मत सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति का विभिन्न पक्षों में मांपनँ करने में व्यवहारिक सिद्ध होगा।

कुछ विद्वानों ने व्यक्ति के प्रतिक्रिया करने के ढंग को ही अभिवृत्ति के रूप में माना है। व्यक्ति समाज में रहकर व्यक्ति के प्रति, समाज के प्रति, वस्तु के प्रति और विचार के प्रति, प्रतिचार करता है। इस प्रतिचार का उद्गम, उसका विचार, अधिगम, अनुभव आदि सभी का संगठित परिणाम् होता है। यदि वह ऐसा न करें तो उसका समायोजन सामाजिक व्यवस्था से नहीं हो सकता है।

विद्वानों ने अभिवृत्ति निर्माण के विषय में एक अपूर्व सैद्धान्तिक विचार को प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वानों जैसे – क्रच, सीकार्ड, व बैकमैन, आदि ने अभिवृत्ति निर्माण के तीन अंग प्रस्तुत किये हैं :– प्रथम अंग – प्रभाव शाली कम्पोनेन्ट, द्वितीय अंग – ज्ञानात्मक कम्पोनेन्ट, और तृतीय अंग – व्यवहारिक कम्पोनेन्ट माना गया है। "टेन्डिस" महोदय के अनुसार – अभिवृत्ति मूल्याँकन, व्यवहारिक तरीके और मानव मतों या रायों के किसी नियम के अर्न्तगत होकर करती है। इसी प्रकार से "हार्वे" हण्ट और श्रौडर" रिन, शा व रायट, आस गुड, एण्डरसन और फिशवीन" आदि विद्वानों ने अभिवृत्ति को एक प्रभावशाली तत्व के रूप में स्वीकार किया है, जो ज्ञानात्मक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता है तथा व्यवहार का पूर्वगामी होता है। अतः अभिवृत्ति एक मूल्याँकन प्रतिक्रिया है जो प्रत्यक्षों पर निर्भर होती है और जो ज्ञानात्मक पक्ष एवं वाह्य व्यवहार के साथ अंतः सम्बन्ध रखती है। इसीलिये शोधकर्ता सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्याओं के प्रति उनकी ज्ञानात्मक तथा व्यवहारिक प्रतिक्रिया को अभिवृत्ति के रूप में जानने की कोशिश कर रहा है। अतः शौधकर्ता ने निम्न अर्थ में अभिवृत्ति का प्रयोग किया है :–

"अभिवृत्ति का प्रयोग सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्याओं का मूल्याँकन, समस्याओं के प्रति जागरण, और उनके निराकरण हेतु क्रियात्मक एवं व्यवहारिक कदम उठाना है।"

1.4.2 समस्यायें :–

सेवानिवृत्त होने के पश्चात् शिक्षक की समस्यायें मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, तथा साँस्कृतिक आदि रूपों का प्रस्तुत अध्ययन में समावेश किया गया है। अतः जो लोग सेवानिवृत्त से पहले तैयारी नहीं करते हैं वे इन समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं, और जो लोग ईमानदारी से उपने कामों को पूरा नहीं करते हैं और वेदाग सेवानिवृत्त नहीं होते हैं उनमें शान्ति और सन्तोष का अभाव बना रहता है। उनकी सन्तानें निकम्मी होती हैं और पिता की गाढ़ी कमाई को आसानी से गवा देती है। सेवानिवृत्ति की सूचना से बहुत सी पत्नियाँ मानसिक रोगों की शिकार हो जाती हैं और बच्चे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप पूरे परिवार का मानसिक सन्तुलन असामान्यता को प्राप्त हो जाता है।

वृद्धावस्था में कब्ज, बबासीर, कम दिखाई देना, ऊँचा सुनना, आदि शारीरिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं इसके साथ ही मधुमेह, रक्तचाप और गठिया से भी अधिकाँश लोग पीड़ित रहते है। सेवानिवृत्त शिक्षक अपने खान – पान पर आयु के अनुसार नियन्त्रण नहीं करते हैं। अतः अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं जो उनकी सेवानिवृत्त जीवन से पारिवारिक बोझ बना देते हैं।

सेवा निवृत्त शिक्षक के लिये धन का सबसे अधिक महत्व होता है वैसे तो वर्तमान में "पेन्सन व्यवस्था" से इस समस्या का सामना आसानी से किया जा सकता है। रोटी, कपड़ा और मकान सभी को चाहिये। रोटी, कपड़े की व्यवस्था पेन्शन से हो सकती है लेकिन मकान की नहीं। जब हम पूरा पैसा मकान मकान में लगा देते हैं तो आनन्द बच्चे उठाते हैं और सेवानिवृत्त व्यक्ति को एक कमरा रहने को दे देते हैं इससे वह पारिवारिक वातावरण का आनन्द नहीं ले पाते हैं। इस प्रकार से वे स्वयं का धन अपने ऊपर भी खर्च नहीं कर पाते हैं क्योंकि परिवार उनको अनुउपयोगी मानता है। अतः वे आर्थिक समस्याओं से स्वयं को पीड़ित मानने लगते हैं।

इसके अलावा वर्तमान पीढ़ी अपने बड़े बूढ़ों से कतराने लगी है। काम निकलते ही उनके प्रति सम्मान समाप्त कर देते हैं। परिवार के सदस्यों से जो प्रेम, सेवा और आदर उनको मिलना चाहिये वह नहीं मिलता है। परिणामस्वरूप वे स्वयं को अकेला, निरीह और असुरक्षित महसूस करते है।आज एक बात और देखने को मिलती है कि बच्चे अपना बटवारा कर लेते हैं और माँ एक बच्चे के पास रहती है और बाप दूसरे के पास या एक समय का भोजन एक बच्चा करवाता है और दूसरे समय का भोजन दूसरा बच्चा। यानि सेवानिवृत्त व्यक्ति बच्चों पर निरर्भर रहकर स्वजीवन की

इच्छा त्याग देता है और इस प्रकार से उनकी परिवार से बिरक्ति के साथ साथ सामाजिकता से भी विरक्ति होती जाती है।

आज इलेक्ट्रोनिक्स की दुनिया है। इसके प्रभाव से व्यक्ति स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता है। सेवानिवृत्त शिक्षक शास्वंत मूल्यों के साथ जुड़ा हुआ है जबकि आज का नवयुवक आधुनिक भौतिक वादी सभ्यता के साथ। आज का युग "हाय और हलो" का है, पैर छूने का, प्रणाम करने का नहीं। आज परिवार के व्यक्तियों को उनकी आज्ञा का पालन करना, सलाह लेना, आशीर्वाद लेना और पैर छूना आदि जैसे संस्कारों से कोई मतलब नहीं होता है इसलिये सेवा निवृत्त लोग स्वयं की उपेक्षा महसूस करके दुखी होते हैं। आज टी0 वी0 के द्वारा आधुनिक मनोरंजन को स्वीकार किया जाता है। भजन कीर्तन और अध्यात्मिक प्रवचन को नहीं। इन मूल्यों के हनन के कारण सेवा निवृत्त व्यक्ति दुखी होता है और स्वयं को संस्कार हीनता की समस्याओं में जकड़ लेता है।

उपरोक्त सेवा निवृत्त शिक्षकों की समस्याओं को जानने के लिये उनका विश्लेषण करके दूर करने के सुझावस्थपित करने के लिये शोधकर्ता ने शिक्षक समस्या का अध्ययन करना आवश्यक समझा, ताकि ये लोग अपना जीवन सुख एवं शान्त रूप से बिता सकें।

1.4.3 – सेवा निवृत्ति :–

सेवानिवृत्ति से तात्पर्य उन नौकरियों में कार्यरत शिक्षकों से है जो निश्चित चयन प्रक्रिया के द्वारा निश्चित मानकों के आधार पर चुनकर शिक्षण कार्य करते हैं। इस सेवा निवृत्त में दो प्रकार के शिक्षकों को लिया गया है। एक तो वे जो स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हुये हैं दूसरे वे जो पूरी अवधि शिक्षण कार्य करने के बाद निवृत्त होते हैं। दोनों में अन्तर अधिक धन की प्राप्ति का होना और अन्य मदों पर ध ान को व्यय करने से होता है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य हेतु दोनों ही प्रकार के सेवा निवृत्तों को तथ्य संकलन हेतु लिया गया है।

1.4.4 – प्राईमरी व माध्यमिक शिक्षक :–

शौध समस्या का अध्ययन क्षेत्र प्राईमरी तथा माध्यमिक "सेवानिवृत्त" शिक्षकों को माना गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 में शैक्षिक आरक्षणों की व्यवस्था की गयी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 में लिखा है " किसी भी नागरिक को राज्य द्वारा चलायी जाने वाली अथवा उससे मान्यता प्राप्त और वित्तीय सहायता प्राप्त करने

वाली संस्था में केवल, धर्म, वंश, जाति, भाषा या इसमें से किसी एक के आधार पर प्रवेश से इन्कार नहीं किया जा सकेगा। इस अधिकार को शिक्षा तथा संस्कृति सम्बन्धी अधिकार के नाम से पुकारा जाता है इसको पाँच भागों में विभक्त किया गया है :–

1 – भारत अथवा किसी भी भाग में रहने वाले नागरिकों के प्रत्येक ऐसे वर्ग को जिसकी अपनी प्रथक भाषा, लिपि या संस्कृति हो, उसे बनाये रखने का अधिकार प्रदान किया गया है।

2 – धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्प संख्यक वर्गों को अपनी शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तथा प्रशासन का अधिकार दिया गया है।

3 – राज्य या राज्य की सहायता से संचालित विद्यालयों सें मूल्य, वंश, धर्म और भाषा आदि के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायेगा।

4 – राज्य द्वारा विभिन्न वर्गों की शिक्षण संस्थाओं इत्यादि को आर्थिक सहायता देने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायेगा।

5 – अपनी योग्यता, क्षमता और रूचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने की सबको स्वतन्त्रता है।

उपरोक्त शिक्षा के अधिकार के अन्तरगत कार्यरत प्राईमरी तथा माध्यमिक विद्यालयों से सेवा निवृत्त शिक्षक – शिक्षिकाओं का चयन शोध हेतु किया गया है, ताकि शिक्षा क्षेत्र की सुविधाओं के मिलते रहने पर इनकी अभिवृत्ति और समस्याओं का सही आँकलन किया जा सके।

1.5 – समस्या के उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् होगें –

1 – सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2 – सेवा निवृत्त शहरी प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का पता लगाना।

3 – सेवानिवृत्त कस्वा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का पता लगाना।

4 – सेवानिवृत्त ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

5 – सेवानिवृत्त शहरी क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – की समस्याओं का अध्ययन करना।

6 – सेवानिवृत्त कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – की समस्याओं का अध्ययन करना।

7 – सेवानिवृत्त ग्रामीण क्षेंत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना।

8 – सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों – शिक्षिकाओं की मनोवैज्ञानिक शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और सॉंस्कृतिक आदि समस्याओं का अध्ययन करना।

शोधकर्ता की परिकल्पनायें :–

प्रस्तुत शौध हेतु निम्नांकित परिकल्पनायें निर्धारित की गई हैं –

1 – सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।

2 – सेवनिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही होता है।

3 – शहरी, कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।

4 – सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है।

5 – सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है।

6 – सेवानिवृत्त शहरी, कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होती है।

1.6 – अध्ययन की परिसीमायें :–

चूँकि अध्ययन का विषय क्षेत्र विस्तृत है और पूरी पोपूलेशन पर अध्ययन कर सकना एक शिक्षा क्षेत्र के शोधकर्ता के लिये सम्भव नहीं है। अतः अध्ययन को एक छोटे से समूह तक सीमित रखा गया है जो पूरी पोपूलेशन का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों में निवास करने वाले सेवानिवृत्त प्राईमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों शिक्षिकाओं को अध्ययन क्षेत्र बनाया गया है। इसमें नगर, कस्वा तथा ग्राम क्षेत्र के शिक्षक शिक्षिकाओं पर तथ्य संकलन किया जा सकेगा। ताकि उनकी अभिवृत्ति और उनकी समस्याओं का सही आँकलन हो सकेगा। अतः अध्ययन को निम्न रूपों में प्रस्तुत किया जायेगा –

अ – अभिवृत्ति :–

अभिवृत्ति एक मानसिक एवं स्नायुविक नियुक्ति की तत्परता है जो अनुभवों द्वारा संगठित होती है, जो व्यक्ति के प्रति अन्तर का निर्दिष्ट गतिगामी प्रयत्न उन सब वस्तुओं एवं स्थितियों के प्रति करती है जिनसे वह सम्बन्धित है। (गार्डन आल्पोर्ट, पृ0 810, 1935)

उपयुक्त अभिवृत्ति अर्थ के आधार पर सेवानिवृत्ति शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन निम्न आयामों में किया जायेगा :–

1 – जीवन के प्रति :–

सेवानिवृत्त प्राइमरी एवं माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का अपने जीवन के रहन सहन के बारे मे क्या प्रति उत्तर होता है ? यानि वे लोग अपने जीवन यापन को कैसा महसूस करते हैं ?

2 – सन्तान के प्रति :–

इससे तात्पर्य है सेवा निवृत्त शिक्षकों की राय अपने बच्चों के प्रति कैसी है यानि वे अपने सेवानिवृत्त माता – पिता के साथ कैसा त्यवहार करते हैं ?

3 – समाजिक सम्मान के प्रति :–

इन लोगों को समाज में पहले जैसा सम्मान, आदर, सत्कार, मिलता है या ये लोग समाज के लिये बोझ तो नहीं हैं। इनको सामाजिक समारोहों में तथा त्योहारों पर सम्मान मिलता है या नहीं। आदि के प्रति ये लोग कैसा महसूस करते हैं।

4 – सहायोगियों के प्रति :–

इससे तात्पर्य शिक्षकों के बारे मे उनके कार्यरत शिक्षकों, प्राचार्य, तथा शिक्षा प्रशासन का व्यवहार के प्रति, राय। यानी सेवा निवृत्ति के बाद उनके साथी उनके प्रति कैसा व्यवहार करते हैं ? को जानना।

5 – शिक्षण व्यवसाय के प्रति :–

इससे तात्पर्य है कि अवकाश प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति "राय" और अवकाश प्राप्ति के पश्चात् किसी व्यवसाय को करना चाहिये या नहीं आदि के बारे में ये लोग क्या महसूस करते हैं ? को जानना ही शोधकर्ता का कार्य है।

ब – अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्याओं :–

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों की समस्याओं को निम्न पाँच क्षेत्रों तक सीमित किया गया है :–

1 – मनोवैज्ञानिक समस्या :–

इससे तात्पर्य परिवार के सदस्यों के द्वारा किये गये व्यवहार से उत्पन्न संवेगात्मक अस्थिरता इससे उनमें निराशा, क्षोभ और तनाव आदि मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

2 – शारीरिक समस्याओं :–

इससे तात्पर्य उनकी बीमारियां, खान– पान में कमी इलाज का अभाव और परिवार के सदस्यों का ध्यान न देना आदि से है। इससे वे शारीरिक रूप से कमजोर तथा जीवन से निराश हो जाते है।

3 – आर्थिक समस्याओं :–

इसके अर्न्तगत अवकाश प्राप्त शिक्षकों की उन आवश्यकता पूर्ति हेतु प्राप्त धन जो पैन्शन या अन्य साधनों से प्राप्त होता है, पर्याप्त न होकर समस्या खड़ी कर देता है। उनके अन्तर्गत बच्चों के शादी, विवाह, बच्चों के रोजगार स्थापना और मकान बनाने की समस्यायें आती हैं । इस हेतु वे चिन्तित रहते हैं और अपना जीवन सामान्य रूप से नहीं जी पाते।

4 – सामाजिक समस्याओं :–

इसका क्षेत्र उनके समाज के उत्तर दायित्व और मिलने वाले उचित सम्मान से होता है। समाज उनको अनउपयुक्त पुराना तथा रूढ़िवादी मानकर विश्वास नहीं करता है तथा उनको असंगत मानकर अभिहेलित करता है। परिणामस्वरूप उनमें ऐसी भावनायें उत्पन्न हो जाती हैं, जो विरक्तता को बढ़ावा देती हैं।

5 – सांस्कृतिक समस्याओं :–

इसको मानवीय संस्कार, मूल्यों की शिक्षा तथा आदर्शों के पालन करने तक ही सीमित रखा गया है। आज के युग में बच्चे धर्म एवं संस्कार विरत होते जा रहे हैं। उनमें अपने धर्म, आध्यात्म और संस्कारों के प्रति मोह समाप्त होता जा रहा है। जिससे सेवानिवृत्त शिक्षकों में निराशा आ रही है। वे यह सोच–सोच कर परेशान रहते हैं कि वर्तमान पीढ़ी का क्या होगा ? हमारा धर्म ही भ्रष्ट हो रहा है, हम कहां जा रहे है और हमारी मौलिकता नष्ट हो रही है।

स – विश्लेषण विधियाँ :–

1– केन्द्रीय प्रवृत्ति माँपक।

2– मानक विचलन।

3– मानक त्रुटि।

4— "टी" परीक्षण।

5— प्रतिशत।

1.7 — अध्ययन की योजना :—

शोधकर्ता का यह परम कर्तव्य हो गया है कि वह शोध को अध्यायों में बाँट कर उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करे। इस प्रकार से अध्ययन की सम्पूर्ण रूप रेखा स्पष्ट हो जाती है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य को हम निम्न प्रकार से अध्यायों में प्रस्तुत करना चाहेंगे :—

अध्याय प्रथम :—

यह अध्याय प्रस्तावना का है। इसमें शोध विषय का चुनाव, आवश्यकता, उद्देश्य, पदिकल्पना, परिवर्ती और परिसीमाओं आदि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय द्वितीय :—

इसमें शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन को प्रस्तुत किया गया है इसमें शिक्षक, अभिरूचि तथा समस्याओं के सन्दर्भों को निहित किया गया है। ताकि, शोधकर्ता अपना मानसिक धरातल वैज्ञानिक तथा तर्क संगत बना सके।

अध्याय तृतीय :—

इसमें शोध प्रवृधि का विस्तार से वर्णन हैं। इसमें न्यायादर्श का चुनाव, उपकरण, विकास, तथ्य संकलन, विधि और तथ्य विश्लेषण की साँख्यिकी विधियों का वर्णन है। इससे शोधकर्ता का तकनीकी पहलू स्पष्ट होता है।

अध्याय चतुर्थ :—

इसमें प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या को स्थान दिया गया है। इसमें अभिवृत्ति के पाँच घटक तथा समस्याओं के पाँच आयामों का विश्लेषण एवं व्याख्या को सांख्यिकी विधियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय पंचम :—

इसमें शोध निष्कर्षों और सुझावों का विस्तार से वर्णन किया गया है। ये वर्तमान में उपयोगी होते हैं। स्वतः ही नई पीढ़ी को दिशा निर्देश देते हैं कि वे अपने बुजुर्गों का ध्यान रखे ताकि उनकी सोच समाज तथा शिक्षा विभाग के लिये उपयोगी बन सके। अतः वे भविष्य के लिये उपार्जित शोधकर्ता उन पर अपने कार्य को कर सकें। इसके लिये समस्या के नये पक्षों को उजागर किया गया है।

प्रथम परिशिष्ट :– इसके अन्तर्गत सन्दर्भ युक्त, पीरियाडिकल्स, आर्टिकल्स, पेपर्स और अन्य सामग्री का वर्णन है।

द्वितीय परिशिष्ट :– इसमें शोधकर्ता द्वारा निर्मित तथा विकसित अभिवृत्ति अनुसूची और समस्या प्रश्नावली आदि का वर्णन है।

तृतीय परिशिष्ट :– इसके अन्तर्गत एकत्रित किये गये प्रदत्तों (27 स्कोर्स) को प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय - द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अध्ययन में स्वाभाविकता या नवीनता का उद्गम तभी सम्भव हो सकता है, जब ज्ञान के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में नये तथ्यों के अध्ययन से सम्बन्धित शोधों का संचयन है। इन तथ्यों का आलोचनात्मक परीक्षण करना, इनका वर्गीकरण करना तथा इनको विवेक पूर्ण ढंग से समाविष्ट करना उपयोगी है, जिससे सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा मूलभूत सम्प्रत्यय सुस्पष्ट हो सकें। समस्या से सम्बन्धित अनुसन्धान कार्य के सन्दर्भ में अनावश्यक कार्यो से बचाव के लिये सम्बन्धित साहित्य का पुनरीक्षण एक साधन के रूप में सहायक हो सकता है, तथा नयी समस्या के समाधान के सन्दर्भ में – तीव्र प्रगति को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान कर सकता है। इसलिये सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोध कार्य में एक अध्याय जोड़ने तथा ग्रन्थ सूची तैयार करने के लिये ही आवश्यक नहीं है, बल्कि अनुसंधान के सभी स्तरों पर सहायक होता है।शोध कार्य की सफलता व विकास हेतु सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है और इसे शोध कार्य के लिये उपयोगी व सहायक मानकर प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रमुख स्थान दिया गया है। अनुसन्धानकर्ता की शोध शिक्षक समस्या के अध्ययन तथा अभिवृत्ति परिवर्ती से सम्बन्धित साहित्य का विवरण अधोलिखित है।

समस्या से सम्बन्धित विदेशों में हुये शौधकार्य

पामर (1908) ने प्रभावशील अथवा सफल शिक्षकों के विषय में एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में सफल अथवा प्रभावशील शिक्षकों की विशेषताओं को ठीक ढंग से परिभाषित किया गया तथा इन पर प्रकाश डाला गया। इस अध्ययन में शिक्षकों की विशेषताओं को चार विशेषताओं तक सीमित रखा गया। ये हैं :–

(क) सहानुभूतिपूर्ण कल्पना।

(ख) ज्ञान की विस्तृत पृष्ठभूमि।

(ग) रूचि को प्रज्वलित करने की क्षमता।

(घ) अरूचि को समाप्त करने की क्षमता।

बार (1929) ने अच्छे तथा खराब शिक्षकों की विशेषताओं के अन्तरों का अध्ययन किया। सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की मुख्य विशेषतायें निम्नलिखित हैं :–

(1) शिक्षक कक्षा में अधिकाँश समय तक खड़े रहते है।

(2) वह छात्रों के उत्तरों के समय सावधानी के साथ उपस्थित रहते है।

(3) वह उदाहरण से युक्त सामग्री का सामान्यतया उपयोग करते है।

डोरोथी (1952) ने अमेरिका के युद्ध के बाद एक अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालय के 1140 पुरूषों तथा 188 महिलाओं के मूल्यों का अध्ययन किया। अन्होनें यह प्राप्त किया कि जो छात्र दूसरी पीढ़ी तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से आते हैं, सौन्दर्यबोधी मूल्य में निम्न होते हैं तथा राजनैतिक मूल्य में उन छात्रों से अधिक उच्च होते हैं, जो अच्छे सामाजिक आर्थिक स्थिति से युक्त होते हैं।

कार्लाइल (1954) ने प्रभावशील शिक्षण को छः प्रमुख क्षेत्रों से सम्बन्धित करके अपना अध्ययन किया। ये क्षेत्र थे – बुद्धि, शिक्षण अभिक्षमता, मूलभूत कौशलों में शैक्षिक उपलब्धि की दक्षता तथा छात्राध्यापन में प्राप्त ग्रेड के साथ व्यक्तित्व के शीलगुण।

काफमैन (1954) ने तत्व विश्लेषण के आधार पर सफल शिक्षण के पाँच समूहों को 19 शीलगुणों पर आधारित करके प्राप्त किया। ये प्रमुख तत्व अधोलिखित हैं :–

(1) कक्षा में पढ़ाने के पूर्व तैयारी।

(2) शिक्षक की विषय में रूचि एवं उसका उत्साह।

(3) विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करने की योग्यता।

(4) कोर्स – की व्यवस्था।

(5) विद्वता एवं आत्म विश्वास।

ब्लेडसो (1955) ने वाट्सन ग्लेसर के आलोचनात्मक चिन्तन मूल्यॉंकन मापनी तथा आलपोर्ट, बर्नन, लिण्डजे, के मूल्य मापनी का 46 स्नातकों पर प्रशासन किया। इन स्नातकों का नामाँकन " शिक्षा में व्यवहारिक अनुसंधान की विधियाँ " नामक कोर्स में किया गया था। इस कक्षा में 16 प्रशासक, 10 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक, 20 माध्यमिक शिक्षक तथा 22 पुरूष तथा 24 महिलायें थीं। इस अध्ययन में सौन्दर्यबोधी मापनी में पुरूषों और महिलाओं में सार्थक अन्तर देखने को मिला, क्योंकि मूल्य समकों में अन्तर 7.03 प्राप्त किया गया जो .01 पर सार्थक सिद्ध हुआ। आर्थिक मापनी के सन्दर्भ में प्रशासकों और माध्यमिक शिक्षकों के समकों में अन्तर .05 स्तर पर सार्थक प्राप्त हुआ। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों के समंकों में अन्तर सौन्दर्यबोधी तथा धार्मिक मापनियों के सन्दर्भ में .05 स्तर पर सार्थक प्राप्त हुआ। ब्लेडसों ने विभिन्न मूल्यों – के समंकों में सहसम्बन्ध प्राप्त किया और ज्ञात किया कि आयु और सौन्दर्यबोधी मापनी के समंकों में धनात्मक सहसम्बन्ध .01 स्तर पर सार्थक है।

एण्डूज (1957) ने मूल्यों के अध्ययन की मापनी का प्रशासन शिकागों के 150 मीटर के अन्दर आने वाले आठ विद्यालयों के सभी संकायों के अध्यापकों तथा प्रधानाचार्यों पर किया। इस अध्ययन में 564 शिक्षकों तथा प्रधानाचार्यों को सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन से यह प्राप्त किया गया कि आठ विषयों के क्षेत्र मे शिक्षकों तथा प्रधानाचार्यों के सन्दर्भ में मापनी के चार क्षेत्रों – सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यबोधी तथा राजनैतिक में सार्थक अंतर प्राप्त हुये। सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों ने शौदंर्यबोधी तथा राजनैतिक मापनियाँ में उच्च अंकों को प्राप्त किया।

डेवीज (1961) के अध्ययन का विषय चुने गये अध्यापकों के शाब्दिक व्यवहार और व्यक्तित्व के गुण दोष, अभिवृत्ति में सम्बन्ध ज्ञात करना था। इन्होंने 25 अध्यापकों के गुणों में से केवल एक या दो मापकों शिक्षण प्रारूप से जिसका दस फलेन्डर वर्गों के साथ निरीक्षण किया, सार्थक रूप में सम्बन्धित पाया।

बोबी तथा भार्गव (1962) ने शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों तथा शाब्दिक व्यवहार के बीच व्याप्त सम्बन्ध का अध्ययन किया। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य थे – (क) – शिक्षकों के भाग लेने की प्रक्रियाओं तथा शिक्षकों के द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली आदर्शात्मक विषय वस्तु जिससे छात्रों के व्यवहार को प्रभावित किया जा सके , का वर्णन तथा वर्गीकरण करना। (ख) – शिक्षकों के शाब्दिक कथनों के इन पक्षों का शिक्षकों के मूल्य व्यवस्था से तुलना करना।

प्रतिदर्श में 49 महिला शिक्षक तथा एक पुरूष शिक्षक को मध्य अठलांटिक राज्यों के देहात के एक पब्लिक स्कूल से सम्मिलित किया गया।शिक्षक के व्यवहार का अध्ययन करने के लिये प्रत्येक शिक्षक के कक्षा कक्ष में तीन बार निरीक्षण किया गया। शिक्षकों के मूल्य से सम्बन्धित आँकड़ों को एकत्र करने के लिये अलपोर्ट, वर्नन तथा लिण्डजे की मापनी का उपयोग किया गया। इस अध्ययन से प्राप्त मुख्य बातें अधोलिखित हैं :–

(1) वे शिक्षक जो उच्च धार्मिक मूल्यों से युक्त थे, उन शिक्षकों की अपेक्षा जिनके पास उच्च राजनैतिक मूल्य था, अधिक सहायता प्रदान करने वाले कथनों को निर्मित करते हैं।

(2) विभिन्न समूहों के शाब्दिक व्यवहार में स्पष्ट अन्तर राजनैतिक मूल्यों के आकार में अन्तर की अपेक्षा धार्मिक मूल्यों के आकार के अन्तर के कारण था।

(3) वे शिक्षक जिनके पास उच्च सामाजिक मूल्य हैं, वे उच्च राजनैतिक मूल्यों से युक्त शिक्षकों की अपेक्षा सामाजिक प्रत्याशाओं पर अधिकाँशतः बल देते हैं।

(4) शिक्षकों के शाब्दिक व्यवहार में अन्तर सामाजिक मूल्यों के ढांचे में अन्तर होने

के कारण होता है। राजनैतिक मूल्यों के ढांचे में अन्तर होने के कारण नहीं।

(5) उच्च राजनैतिक मूल्यों से युक्त शिक्षक उच्च धार्मिक मूल्यों से युक्त शिक्षकों की तुलना में असहयोगी कथनों को निर्मित करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

इस अध्ययन के सामान्य परिणाम् से यह स्पष्ट हुआ कि शाब्दिक व्यवहार में अन्तर शिक्षकों के मूल्यों में अन्तर के कारण होता है।

ग्रे (1963) ने 50 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों, 50 एकाउन्टेन्ट्स तथा 50 अभियन्ताओं का कार्य से सम्बन्धित मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। शिक्षकों ने सामाजिक पुरस्कारों की पसंदगी पर उच्च अंकों को प्राप्त किया, जबकि एकाउन्टेन्ट्स ने जीवन तथा इज्जत के मूल्य पर अधिक अंकों को प्राप्त किया।

कोरिगन और ग्रिस बोल्ड (1963) ने शिक्षा के तीन सिद्धान्तों के बारे में छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का पाँच बिन्दु मापनी द्वारा अध्ययन किया। उन्होनें परिणाम की सत्यता जाँचने के लिये 25 अध्यापकों से साक्षात्कार किया। इससे उन्हें अभिवृत्ति परिवर्तन के बारे में धनात्मक व सार्थक परिणाम मिले।

स्प्रिन्थाल (1964) ने निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के मूल्यों के अन्तर की परीक्षा की गयी। विद्यार्थियों को तीन समूहों (कम उपलब्धि वाले, अतिरिक्त उपलब्धि वाले तथा उत्कृष्ट उपलब्धि वाले) में विभाजित किया गया। मूल्य मापनी के अध्ययन में विभेदकारी विश्लेषण का उपयोग करते हुये यह प्राप्त किया गया कि सब प्रकार का अलगाव चारों समूहों में सार्थक स्तर पर प्राप्त किया गया तथा आर्थिक मापनी अलगाव के लिये एक प्रमुख साधन के रूप में प्राप्त की गयी। वर्गीकरण के ढंग से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक तथा उत्कृष्ट उपलब्धि वाले छात्र मूल्य के क्षेत्र में समान थे। जबकि कम उपलब्धि तथा अतिरिक्त उपलब्धि वाले छात्र मूल्य के सन्दर्भ में समान प्राप्त किये गये। इस अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि शिक्षकों तथा उत्कृष्ट छात्रों के मूल्यों में समानता का तात्पर्य मूल्य अनुरूपता से अधिक है क्योंकि इसके परिणाम स्वरूप पक्षपातपूर्ण प्राप्ताँक की प्राप्ति होगी। दूसरे शब्दों में उत्कृष्ट छात्र समान मूल्य रखने वाले शिक्षकों से मूल्याँकन के सन्दर्भ में पक्षपात के लाभ को प्राप्त करेंगें।

वीटन एण्ड स्प्रिन्थाल (1966) ने पब्लिक हाई स्कूल के अध यापकों के मूल्यों में व्याप्त अन्तर को रिग्रेसन नमूने के प्रसार विश्लेषण तकनीकी के उपयोग से अध्ययन किया। परिणाम से प्राप्त हुआ कि व्यावसायिक समूह में मूल्यों के सन्दर्भ में

सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ तथा इन अन्तरों को सम्बन्ध बढ़ायी जाने वाली विषय वस्तु से प्राथमिक रूप से था। मूल्यों के अध्ययन से सम्बन्धित समंकों में सार्थक अन्तर विषय वस्तु से सम्बन्धित छः मापनियों में से तीन मापनियों (सैद्धान्तिक, सौन्दर्यबोधी तथा आर्थिक) में प्राप्त हुआ। लिंग के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर केवल समाजिक मापनी पर प्राप्त हुआ। राजनैतिक और धार्मिक मापनियों के समंकों के सन्दर्भ में पुरूष तथा महिलाओं अथवा विषयवस्तु के आधार पर निर्मित किये गये समूह में सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ। मूल्यों के इस अध्ययन में वाह्य वैधता प्राप्त हुयी तथा इसमें यह ज्ञात हुआ कि गणित और विज्ञान के अध्यापक आर्थिक मापनी में सर्वोच्च थे, तथा संगीत एवं कला के अध्यापक सौन्दर्यबोधी मापनी में सर्वोच्च थे।

जैकब (1968) ने शिक्षण प्रशिक्षण के अभिवृत्ति परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन किया और अभिवृत्ति का अध्यापक के व्यवहार परिवर्तन में क्या योगदान रहा है, इसका भी अध्ययन किया। न्यायादर्श के रूप में 1007 छात्राध्यापकों को, जो दो समूहों में विभाजित थे, लिया गया। 457 छात्राध्यापक समूह "अ" में थे तथा 550 समूह "ब" में पाये गये। इस प्रभाव को जानने हेतु वालेन्टी–मेलसन सर्वेक्षण का उपयोग किया गया। यह देखा गया कि, अभिवृत्ति में सार्थक परिवर्तन दोनों समूहों मे पाया गया। आरम्भ में व्यवसायिक शिक्षा अधिक स्वतन्त्र पायी गयी जो लोग शिक्षण वृत्ति का कार्य कर रहे थे, वे ज्यादा कठोर एवं औपचारिक हो गये थे। इन्होनें अभिवृत्ति परिवर्तन व सामाजिक, आर्थिक स्तर में कोई भी सम्बन्ध नहीं देखा।

डारोविट्ज (1968) द्वारा अध्यापकों की अभिवृत्ति और छात्र अध्यापन अनुभव का अध्ययन किया गया। इसके लिये इन्होंने अध्यापकों के योगदान का विवरण और अध्यापक व्यवहार सम्बन्धी प्रश्नावली प्रदत्तों के संकलन के लिये प्रयोग किया। इस अध्ययन द्वारा वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि छात्राध्यापकों के शिक्षण अनुभव से उनकी अभिवृत्तियों में सार्थक परिवर्तन होता है।

पैक (1969) ने अमेरिका के टैक्सास तथा मैक्सिकों के छात्रों का मूल्यों व्यवस्था के सन्दर्भ में मूल्य सोपान उपकरणों का उपयोग करते हुये एक तुलनात्मक अध्ययन किया। मैक्सिको विश्वविद्यालय के छात्रों ने जीवन सफलता को प्रथम क्रम प्रदान किया तथा शाक्ति मूल्य को अन्तिम क्रम प्रदान किया। छात्राओं ने स्वास्थ्य को प्रथम तथा धन को पन्द्रहवाँ अनुक्रम दिया।

मेजर (1969) ने अभिवृत्ति और वैयक्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में 53 नये अध्यापकों के अनुपयोगी समूहों को अनवेषित किया एवं इनके ऊपर विशेषीकृत एवं ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया। इन नये

अध्यापकों ने तुरन्त ही अपने पूर्व स्नातक प्रारम्भिक पाठ्यक्रम पूरा किया था। इनको 15 सप्ताह की बसन्तकालीन एवं ग्रीष्मकालीन स्नातक कार्यक्रम का निर्धारण किया गया जिससे ये कक्षा के कक्ष के लिये अभिप्रेरित एवं तैयार हो सकें। इनका प्रायोगिक समूह प्रारम्भिक शिक्षा में स्नातकीय कक्षाओं के सादृश्य था। मेजर ने "सिमेन्टिक डिफरेन्सियल" मापनी और पर्सनल ओरियेन्टेशन सूची (पी0 ओ0 आई0) का प्रयोग प्रदत्त संकलन के लिये किया। इन्होनें यह प्रतिपादित किया कि प्रायोगिक समूह के मूल्याँकन को और बच्चों के अभिभावकों को इच्छित दिशा में बढ़ाया जाये। इस प्रकार इन्होनें यह पाया कि छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सहायता से सार्थकता पूर्वक परिवर्धित किया जा सकता है। विशेषतः अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को छात्रों के अभिवृत्ति परिवर्तन के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जा सकता है।

स्टेन (1972) ने छात्रों के मूल्यों का अध्ययन किया। इस अध ययन से इस निष्कर्ष की प्राप्ति हुयी कि सभी मूल्यों का विकास सम्कालिक नहीं होता और इन पर लिंग, ग्रेड और व्यवसायिक समूह का प्रभाव पड़ता है। व्यक्तिगत मूल्यों पर ग्रेड का प्रभाव स्थिर होता है, परन्तु इस सन्दर्भ में अन्तर परस्पर व्यक्तिगत मूल्यों के सन्दर्भ में प्राप्त होता है। इसके अलावा लिंग और व्यवसायिक समूह का प्रभाव व्यक्तिगत और परस्पर व्यक्तिगत मूल्यों पर भिन्न – भिन्न होता है। इस अध्ययन के लिये प्रतिदर्श का चयन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों से किया गया तथा इनमें नवीं तथा बारहवीं कक्षा के छात्रों को सम्मिलित किया गया था।

ओजुम्बा (1978) ने अफ्रीका में शिक्षकों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित मूल्याँकन के अनुसंधानों की दशा एवं कला का सिंहावलोकन किया । इस अध्ययन का उद्देश्य अफ्रीका में शिक्षकों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित अध्ययनों का सिंहावलोकन करना था। जिससे अनुसंधान के निष्कर्षों की पहचान की जा सके तथा अफ्रीका में नीतियों और भविष्य के अनुसंधानों की रूपरेखा निर्मित की जा सके। इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

(1) – शिक्षकों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित किसी भी अध्ययन में शिक्षकों की प्रभावशीलता के परिप्रेक्ष्य के सैद्धन्तिक सूत्रीकरण का प्रयास नहीं किया गया, बल्कि इनको व्यवहारों, लक्षणों, शिक्षकों की तत्व विशेषताओं, शिक्षणं कार्यो तथा इनके शैक्षणिक परिणामों पर पड़ने वाले प्रभावों के सन्दर्भ में देखा गया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन अध्ययनों की अभिभावी मान्यता यह थी कि शिक्षकों की प्रभावशीलता व्यवहारिक होती है इसलिये तथाकथित प्रभावकारी शिक्षण व्यवहार, कक्षा के व्यवहार तथा व्यक्तिगत व्यवहारों तक ही सीमित होते हैं इसके अलावा शिक्षकों के विद्यालय तथा समुदाय

के वातावरण से सम्बन्धित चरों के विषय में कोई अवलोकन नहीं किया गया।

(2) – अधिकाँश अध्ययनों में जिनका सिंहावलोकन किया गया था, प्रत्यात्मक ढ़ांचे में अध्ययन किये गये आलोचनात्मक चरों का पता नहीं लगाया गया।

(3) – पर्याप्त मात्रा में इस सन्दर्भ में अध्ययनों को अन्तः क्रिया विश्लेषण का उपयोग करके सम्पन्न किया गया। क्योंकि अनुसंधान कर्ताओं का यह विश्वास था कि प्रभावशील शिक्षण अप्रत्यक्ष अन्तः क्रिया से ही सम्पन्न होता है। इसी तकनीकी को अपना कर भारतवर्ष में सम्पन्न हुये अध्ययनों के समान अफ्रीका में भी अध्ययनों में अन्तः क्रिया के परिणामों को छात्रों की उपलब्धियों को कसौटी चर के रूप में ज्ञात नहीं किया गया। जिसके सन्दर्भ में शिक्षकों प्रभावशीलता का अध्ययन किया जाना चाहिये। इसी क्रम में बाद में सम्पन्न हुये अध्ययनों में शिक्षकों के वास्तविक व्यवहारों को जानने का प्रयास नहीं किया गया और न तो इनको मानकों से सम्बन्धित करने का ही प्रयत्न किया गया।

(4) – पर्याप्त मात्रा में अध्ययनों को शिक्षण, अधिगम के परिणामों के सन्दर्भ में शिक्षकों की प्रभावशीलता को जानने में प्रयुक्त किया गया , परन्तु भारतीय परिस्थिति के समान इन अध्ययनों को संज्ञानात्मक परिणामों तक ही सीमित रखा गया।

काक्स (1979) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण कुशलता पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षकों के प्रायोगिक समूह या नियन्त्रित समूह के अभिरूचि प्राप्ताँक में वाँछित दिशा में सार्थक अन्तर नहीं है। यद्यपि शिक्षकों के 8 से 11 चरों पर अपेक्षाकृत उच्च प्राप्ताँक प्राप्त हुये, परन्तु परिणाम में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।

वीनमन (1984) ने अभिवृत्ति से सम्बन्धित अध्ययनों पर पुनर्विचार किया। इस अध्ययन से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि शिक्षकों का शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण सेवा के पूर्व आदर्शात्मक, प्रगतिशील तथा उदार रहता है, परन्तु छात्राध्यापन के समय तथा शिक्षण के प्रथम वर्ष में यह परम्परागत, रूढ़िवादी तथा संराक्षात्मकता की ओर परिवर्तित हो जाता है। इन अध्ययनों से यह सुझाव प्राप्त होता है कि शिक्षक शिक्षा का उपचारात्मक प्रभाव क्षेत्र अनुभव के साथ समाप्त हो जाता है।

रोसेनशिने (1986) ने यह प्राप्त कि जब दक्ष शिक्षक संप्रत्ययों और कौशलों को स्पष्ट रूप से पढ़ाते हैं तो वे निम्नलिखित कार्यों को करते हैं :–

(1) अपने पाठ को उद्देश्यों से सम्बन्धित लघु कथनों से प्रारम्भ करते हैं।

(2) वे अपने पाठों को अधिगम के लिये आवश्यक बातों को संक्षेप में सिंहावलोकन

करके प्रारम्भ करते हैं।

(3) वे अपने विषय वस्तु को छोटे – छोटे पदों में प्रस्तुत करते हैं तथा प्रत्येक पद से सम्बन्धित बातों का छात्राभ्यास करते हैं।

(4) वे स्पष्ट तथा विस्तृत रूप में अपने निर्देशों तथा व्याख्यायों को प्रदान करते हैं।

(5) वे सभी विद्यार्थियों के लिये सक्रिय अभ्यास प्रदान करते हैं।

(6) वे अनेक प्रश्नों को पूँछते हैं, छात्रों की समझ की परीक्षा करते हैं तथा सभी छात्रों से उत्तरों को प्राप्त करते हैं।

(7) वे छात्रों को प्रारम्भिक अभ्यास के समय पथ प्रदर्शन प्रदान करते हैं।

(8) वे क्रमबद्ध ढंग से प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं तथा छात्रों की अशुद्धियों का सुधार करते हैं।

(9) वे नेटवर्क से सम्बन्धित अभ्यास के लिये स्पष्ठ निर्देश तथा अभ्यास प्रदान करते हैं। तथा यदि आवश्यक हुआ तो छात्रों को नेटवर्क के समय सलाह भी प्रदान करते हैं।

(10) वे अभ्यास कार्य को तब तक चलाते हैं जब तक छात्र स्वतन्त्र तथा आत्म विश्वास से युक्त न हो जाये।

तेसू, जे0 एम0 (1993) ने प्रशिक्षणरत शिक्षकों का अध्ययन किया और पाया कि आदिस – अबाबा के प्रशिक्षित अध्यापकों पर उनकी अभिवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव हुआ है जिससे उनके विज्ञान छात्र / छात्राओं की अधिक वृद्वि हुयी। संक्षिप्त रूप में अधिकाँश अध्ययनों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है :–

1– शिक्षकों की शिक्षण कुशलता पर प्रशिक्षण का प्रभाव , प्रायोगिक समूह या नियन्त्रित समूह के अभिरूचि प्राप्तांक में वांछित दिशा में सार्थक अन्तर नहीं है।

2 – छात्राध्यापाकों की अभिवृत्ति, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सहायता से सार्थकता पूर्वक परिवर्धित किया जा सकता है तथा शिक्षण अनुभव से अभिवृत्तियों में सार्थक परिवर्तन होता है।

3 – शिक्षकों का शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण सेवा के पूर्व आदर्शत्मक प्रगतिशील अथवा उदार रहता है परन्तु छात्राध्यापन के समय तथा शिक्षण के प्रथम वर्ष में यह परम्परागत, रूढ़िवादी, तथा संरक्षात्मकता की ओर परिवर्तित हो जाता है।

4 – शिक्षक उत्कृष्ट उपलब्धि वाले मूल्य के क्षेत्र में समान होते हैं तथा कम उपलब्धि वाले छात्र मूल्य के सन्दर्भ में समान प्राप्त किये गये।

5 – राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्य के सन्दर्भ में पुरूष तथा महिला अथवा

विषय – वस्तु के आधार पर निर्मित किये गये समूहों में सार्थक अन्तर नहीं होता।

6 – शिक्षकों ने सामाजिक पुरस्कारों पर एवं एकाउन्टेन्ट तथा इंजीनियरों ने जीवन तथा इज्जत के मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त किये।

समस्या से सम्बन्धित देश में हुये शोधकार्य

बुच (1959) ने शिक्षण व्यवसाय के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का सर्वेक्षण किया। इस अध्ययन के परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि सामान्य रूप से प्रशिक्षण का शिक्षकों को अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है परन्तु इस प्रकार का निष्कर्ष उन अध्यापकों के सन्दर्भ में नहीं प्राप्त किया गया जिनका शिक्षण अनुभव प्रशिक्षण के उपरान्त पाँच वर्ष से अधिक हो गया था इसके अलावा इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि महिला स्नातकों की अभिवृत्ति पुरूष स्नातकों की अपेक्षा अधिक अनुकूल प्राप्त हुयी तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण के पूर्व प्राप्त किये गये औपचारिक शिक्षा और अभिवृत्ति के बीच व्याप्त सह सम्बन्ध में विपरीत अनुपात है।

जयम्मा (1962) ने शिक्षण दक्षता की भविष्यवाणी करने के लिए पाँच महत्वपूर्ण चरों की पहचान की ये हैं :–

(1) व्यावसायिक ज्ञान तथा कौशल।

(2) मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से अवगत होना।

(3) कक्षा व्यवस्था।

(4) अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध।

(5) व्यक्तिगत गुण जैसे विनोद प्रियता, धैर्य एवं सहानुभूति।

इन्होनें यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि शैक्षिक योग्यता के साथ शिक्षण दक्षता बढ़ती है।

भटनागर (1963) ने कला विज्ञान तथा वाणिज्य के तीन पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों का अध्ययन मूल्य के आयामों पर किया। इस अध्ययन से प्राप्त हुआ है कि विभिन्न समूहों में मूल्य के सन्दर्भ में अन्तर है इसके अलावा यह भी देखा गया कि विद्यार्थियों की सामान्य जनसंख्या का समूहों के बीच में भी इस सन्दर्भ में अन्तर व्याप्त है। तीन समूहों में सैद्धान्तिक मूल्यों को सबसे अधिक माना गया है तथा इसके बाद सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों को क्रमशः महत्वपूर्ण माना गया।

बीना राय (1965) ने शिक्षकों तथा छात्राध्यापकों के सफलता बीच व्याप्त सह – सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिये अपने अध्ययन में प्रयास किया। इस

अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य विद्यालयों में चलाये जाने वाले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी था। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक की प्रभावशीलता का सह–सम्बन्ध उन व्यक्तियों के शैक्षिक एवं व्यवसायिक अनुभवों से हैं, व्यक्तियों में अधिक पाया गया, जिसके पास इस अनुभवों का अभाव था।

प्रमोद कुमार (1965) ने विद्यार्थियों के नेतृत्व से सम्बन्धित व्यक्तित्व का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह देखा गया कि विद्यार्थियों के नेता सैद्धान्तिक तथा धार्मिक मूल्यों में निम्न प्रतीत होते हैं, परन्तु आर्थिक तथा सामाजिक मूल्यों में उच्च है। अन्य मूल्यों के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर विभिन्न समूहों में नहीं प्राप्त हुआ।

शुक्ला (1965) ने उ0प्र0 के पाँच विश्वविद्यालयों के कला और विज्ञान संकायों के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के मूल्य समंकों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह देखा गया कि दो समूहों के विद्यार्थी आर्थिक तथा धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक रूप में एक – दूसरे से भिन्न हैं।

जोशी तथा शर्मा (1968) ने दसवीं कक्षा के साठ किशोर तथा साठ किशोरियों का अध्ययन किया पूरे अध्ययन समूह को चार समूहों में विभाजित किया गया। इस समूह के सदस्यों की सामाजिक, आर्थिक दशा समान थी तथा इनको अशैक्षिक परिस्थितियों से चुना गया था। इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

(क) अनेक समान मूल्य के ढ़ाँचे किशोर तथा किशोरियों मे स्थित हैं परन्तु इन मूल्यों के क्रम में सार्थक अन्तर की प्राप्ति हुई तथा प्रत्येक समूह में किन्ही दो अधिमाला के क्रम माला के अन्तराल में भी सार्थक अन्तर देखने को मिला।

(ख) लड़कों के लिये मूल्यों का समूह सर्वोत्तर भार के साथ पूर्णतः आर्दशवाद धर्म अहिंसा तथा राष्ट्रीयता से सम्बन्धित था।

(ग) लड़कियों में सामानान्तर समूह को प्राप्त किया गया। इसके अलावा समूह के अन्दर मूल्यों के सापेक्षिक स्थानों में मामूली परिवर्तन ज्ञात हुआ।

(घ) लड़कियों ने सर्वोच्च्व अधिभान धार्मिक मूल्य को तथा लड़कों ने सर्वोच्च्व अधिभान पूर्णतः तथा आर्दशवाद को प्रदान किया।

(च) मुद्रा से संबंघित मूल्य के संदर्भ में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

(छ) लड़कियों ने वीरता तथा वल के मूल्य को पसंद किया।

वर्मा (1968) ने शिक्षकों के मूल्यों अभिवृत्तियों व्यक्तिगत समस्याओं तथा सामन्जस्य पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अघ्ययन का मुख्य

उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना था कि क्या शिक्षक प्रशिक्षण का अनुकूल प्रभाव छात्राध्यापकों के मूल्यों , अभिवृत्तियों , व्यक्तिगत समस्याओं तथा सामान्जस्यों पर पड़ता है , तथा यह चर आपस में किस प्रकार संबन्धित हैं।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ है कि सार्थक रूप में छात्रों ने सैद्धान्तिक मूल्यों को खो दिया है इसका यह अर्थ हुआ कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को झेलने के लिये परिणामस्वरूप वौद्दिक क्रियाओं का उनकी रूचियों में हास्य हुआ। अर्थिक मूल्यों को भी सार्थक स्तर पर उन्होने खो दिया था। जिसका अर्थ यह हुआ कि व्यवसायिक तथा वित्तीय मामलों में भी उनकी रूचियों में कमी हुयी परन्तु सौन्दर्यबोधी मूल्यों में सार्थक सुधार प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुआ। प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक मूल्यों में शिक्षक प्रशिक्षण से न तो सुधार हुआ न हृास। इसी तरह का परिणाम राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में प्राप्त हुआ इस सन्दर्भ में न तो प्राप्ति हुयी और न ही हानि। परन्तु छात्राध्यापकों के धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित रूचियों में सुधार की प्रवृत्ति को देखा गया परन्तु यह परिणाम सार्थक स्तर पर प्राप्त नहीं हुआ। वास्तव में छात्राध्यापकों में बालकों तथा विद्यालयों के कार्यो के प्रति अभिवृत्तियों में लगातार अनुकूल परिणाम प्रशिक्षण के फलस्वरूप परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ तथा इन समंकों को भी सार्थक स्तर पर प्राप्त किया गया। इन बातों के अलावा छात्राध्यापकों की समस्याओं में प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप सार्थक रूप में कमी प्राप्त की गयी और अन्त में इस निष्कर्ष की प्राप्ति हुयी कि प्रशिक्षण ने प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक, आर्थिक तथा व्यावसायिक सामंजस्य में सार्थक रूप में योगदान प्रदान किया है।

सक्सेना (1969) ने कैटेल ने " सम्पर्क व्यक्तित्व तत्व प्रशिक्षण" को उ0प्र0 के 139 शिक्षकों पर प्रसारित किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की अभिवृत्तियों तथा व्यक्तित्व चरों को शिक्षण क्षमता के सन्दर्भ में अध्ययन करना था। शिक्षकों को निम्न क्षमता (31) . औसत क्षमता (75) तथा उच्च क्षमता (33) वाले शिक्षकों के रूप में निम्न तथा उच्च चतुर्थांश के आधार पर विभाजित किया गया था। इस अध्ययन से यह पता चला कि तत्व "यच" तथा निम्न शिक्षण क्षमता के बीच सह – सम्बन्ध गुणाँक 60 है तथा तत्व ए0 से .42 है। इसके अलावा शिक्षण क्षमता के निम्न औसत एवं उच्च स्तरों तथा एच तत्व के बीच सह – सम्बन्ध गुणाँक क्रमशः .60, .06 तथा .36 प्राप्त हुये जो इस बात का धौतक है कि इनके बीच सह – सम्बन्ध वक्र रेखीय है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि तत्व "एच" पर अधिक अंक की प्राप्ति निम्न शिक्षण क्षंमता का धोतक है तथा "एच" तत्व पर सामान्य से थोड़ा अधिक अंक पाना सफल शिक्षक का परिचायक है।

देवनाथ (1971) ने शिक्षण क्षमता, इसका मापन तथा इसके कुछ निर्धारक तत्वों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षण क्षमता के कुछ निर्धारकों को पता लगाना था। इस में पूरे कालाँश तक पाठों के किये गये आलोचनात्मक अवलोकन पर आधारित आलोचनात्मक निर्णयों की सापेक्षिक क्षमता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया। प्रश्नावली से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हुआ कि व्यवसायिक प्रशिक्षण बुद्धि, शिक्षण में रूचि, मित्रता, प्रजातान्त्रिक व्यवहार, दूसरों की प्रतिक्रियाओं का निर्णय करने की योग्यता तथा सम्पूर्ण सूचनाओं की प्राप्ति आदि चरों का शिक्षण क्षमता से सम्बन्ध पाया जाता है। कक्षा के कक्षों में किये गये वास्तविक अवलोकनों से प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ है कि उम्र, शिक्षणं अनुभव, शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण आदि चर शिक्षण क्षमता से सार्थक रूप से सम्बन्धित है। शिक्षण क्षमता तथा उम्र अनुभव, शैक्षिक उपलब्धि और प्रशिक्षण में सह सम्बन्ध गुणाँक क्रमशः .21, .24, .19 तथा .31 प्राप्त हुये तथा अन्तिम निष्कर्षों के रूप में यह प्राप्त किया गया कि उम्र, अनुभव, शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण शिक्षण क्षमता के महत्वपूर्ण निर्धारक है।

कक्कड़ (1971) ने शिक्षण सूमूह से सम्बन्धित कालेज शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का अध्ययन ए0व्ही0एल0 पद्धति से किया। शिक्षकों ने सर्वाधिक अंक राजनैतिक मूल्यों पर प्राप्त किये इसके बाद सैद्धान्तिक तथा सामाजिक मूल्यों पर उनके अंक प्राप्त हुये। प्रशिक्षणार्थियों ने सामाजिक मूल्यों को प्रथम वरीयता प्रदान की। तथा इसके पश्चात् उनकी वरीयता क्रमशः सौन्दर्यबोधी तथा सैद्धान्तिक मूल्यों पर प्राप्त की गयी।

सामान्तो राय (1971) ने शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा शिक्षण कार्य क्षमता से इसके सम्बन्ध , से सम्बन्धित एक अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य परिकल्पनायें थीं –

(1) शिक्षकों की अभिवृत्ति कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। (2) शिक्षकों का सामन्जस्य शिक्षण कार्य को प्रभावित करता है। इस अध्ययन में 320 स्नातकों के आँकड़ों को एकत्र किया गया, जिनमें से 258 पुरूष तथा 62 महिलायें थीं। काईवर्ग परीक्षण ने यह प्रदर्शित किया कि इन दोनो चरों में कुछ सीमा तक धनात्मक सह– सम्बन्ध व्याप्त था। दूसरे शब्दों में उच्च कार्य क्षमता तथा अनुकूल अभिवृत्ति साथ – साथ पायी जाती है तथा निम्न कार्य क्षमता और अनुकूल अभिवृत्ति के बीच विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। इस अध्ययन में यह भी ज्ञात किया गया कि सामान्जस्य और शिक्षण कार्य क्षमता में धनात्मक सह – सम्बन्ध पाया जाता है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जिसमें उच्च कार्य

क्षमता होगी उसमें अच्छा समान्जस्य होगा तथा विपरीत दशा में सामन्जस्य अच्छा नहीं होगा।

शर्मा (1971) ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित भविष्यवाणी करने वाले तत्वों के बीच व्याप्त सम्बन्ध तथा एक वर्ष के शिक्षण के अनुवर्तन का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की विशेषताओं तथा शिक्षकों की प्रभावशीलता के बीच व्याप्त सम्बन्ध के विषय में जानकारी प्राप्त करना था जिससे शिक्षकों की सफलता के विषय में भविष्यवाणी की जा सके।

वर्मा (1971) ने अपने अध्ययन को राजस्थान के 120 पुरूष तथा 120 महिला अध्यापकों पर सम्पन्न किया। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षण के प्रभाव के कारण शिक्षकों के सौन्दर्यबोधी तथा धार्मिक मूल्यों में सुधार हुआ। इसके अलावा अध्यापकों के समंक सैद्धान्तिक सौन्दर्यबोधी तथा सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में महिलाओं की तुलना में अधिक प्राप्त हुये।

वर्मा (1971) ने 82 छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का शिक्षण व्यवसाय के संदर्भ में अध्ययन किया। इन्होने अभिवृत्ति का मापन करने के लिए विदेशों में विकसित किए गए तीन मापनियों का उपयोग किया। अभिक्रिया के पूर्व तथा पश्चात् की दशा में छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का मापन किया गया। आँकड़ों को व्यवस्थित करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति पर कोई सार्थक परिवर्तन नहीं प्राप्त हुआ तथा लिंग एवं शहर तथा देहात के अन्तर का भी अभिवृत्ति परिवर्तन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं हुआ।

कुरेशी (1972) ने शिक्षकों के व्यक्तित्व, अभिवृत्ति तथा कक्षा कक्ष व्यवहार का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे – (क) – शिक्षकों के व्यवहार के चार आयामों , अप्रत्यक्ष व्यवहार का प्रत्यक्ष व्यवहार से अनुपात, नियन्त्रित व्यवहार से अभिप्रेरित करना, शिक्षक व्यवहार से छात्र व्यवहार उत्पन्न करना तथा छात्रों के विचारों को शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व के कुछ शीलगुणों के सन्दर्भ में स्वीकार करना।

मेहरोत्रा (1973) ने शिक्षकों की शिक्षा का सम्बन्धित कार्यक्रमों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में आँकड़ों को सन् 1968 से 1969 के पत्राचार पाठ्यक्रम तथा पूर्णकालिक व्यवस्था से सम्बन्धित विद्यार्थियों से प्राप्त किया गया। अध्ययन से यह प्राप्त हुआ कि (1) – पाठ्यक्रम को पूरा करने वालों की अभिवृत्ति पाठ्यक्रम को न पूरा करने

वालों की तुलना में अधिक अनुकूल थी। (2) – कुछ आयु समूह के विद्यार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति कोर्स के अन्त में, कोर्स के प्रारम्भ की तुलना में कम हो गयी। (3) – उच्च आयु समूह के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति ज्यादा अनुकूल थी तथा 32 – 36 के आयु वर्ग को छोड़कर प्रायः सभी आयु वर्गों की अभिवृत्ति में वृद्वि प्राप्त की गयी। (4) अधिक शिक्षण अनुभव के साथ अभिवृत्ति के अधिक धनात्मक होने की बात पाई जाती है। परन्तु इस निष्कर्ष को 13 – 17 आयु वर्ग में प्राप्त नहीं किया गया।

कौल (1973) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि अध्यापक को वुद्धिलब्धि उनके अध्यापक प्रभावीत्पादकता के आधार पर उच्च एवं निम्न कोटि में वर्गीकृत करने पर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में सहयोग प्रदान करती है। अप्रभावी अध्यापकों की तुलना में प्रभावी अध्यापक बुद्धिमान होते है।

अहलूवालिया (1974) ने शिक्षक अभिवृत्ति से सम्बन्धित एक सूची का विकास किया तथा छात्राध्यापकों के व्यावसायिक अभिवृत्तियों के परिवर्तन का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होनें यह प्राप्त किया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्त में, एक सामान्य नियम के रूप में , छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति अंक , के औसत कम हो गये। विभिन्न संस्थाओं के द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव से अभिवृत्ति अंकों के मध्यमानों में परिवर्तन धनात्मक या ऋणात्मक दिशा में प्राप्त हुये। इसके अलावा लिंग तथा संस्थाओं के आधार पर प्राप्त किये अभिवृत्ति के समंकों के मध्यमानों में अन्तर प्राप्त किया गया परन्तु यह अन्तर सार्थक नहीं था।

सिंह (1794) ने अपने एक अध्ययन में शिक्षकों के मूल्यों को मापने तथा इन्हीं शिक्षको की अभिवृत्ति और कार्य सन्तोष के साथ सहसम्बन्ध को प्राप्त करने का प्रयास किया गया । इस अध्ययन में शिक्षकों के प्रधान मूल्यों को स्पष्ट रूप से जानने का प्रयास किया गया। इसके अलावा यह भी ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल है या प्रतिकूल । प्रतिदर्श में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 517 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन से प्राप्त किया गया कि –

अ – शिक्षक आर्थिक लाभ भौतिक सुविधाओं तथा प्रशासन को छोड़कर कार्य सन्तोष के सभी तत्वों से सन्तुष्ट थे।

ब – आयु के अन्तर के कारण शिक्षकों के सन्तोष स्तर में कोई अन्तर नहीं पाया गया। अविवाहित महिला अध्यापक विवाहित पुरूष अध्यापकों से ज्यादा सन्तुष्ट पायी गयीं।

स – अभिवृत्ति के समंकों तथा सन्तोष के समंकों में धनात्मक सार्थक सह – सम्बन्ध प्राप्त हुआ।

ठक्कर (1977) ने सम्भावित अध्यापकों की प्रभावशीलता तथा उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन उनके छात्रों के साथ सौहार्द्र, उनके उत्तर जीवन तथा उनके व्यवसाय के कार्य सन्तोष के सन्दर्भ में किया। प्रतिदर्श में गुजरात राज्य में बी0एड0 कक्षाओं के 497 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित किये गये जिनमें से 240 पुरूष 257 महिलायें थी अध्ययन में आयु तथा सौहार्द्र में सार्थक नकारात्मक सह – सम्बन्ध तथा कार्य सन्तोष और सौहार्द्र में सार्थक धनात्मक सह – सम्बन्ध प्राप्त किया गया।

सिंह (1980) ने 200 शिक्षकों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 10 संकायों तथा काशी विद्यापीठ और गोरखपुर विश्वविद्यालय के 2 स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन से उन्होने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि आधे से अधिक शिक्षकों ने , जिनकों इस अध्ययन के प्रतिदर्श ने सम्मिलित किया गया था सहमति व्यक्ति की, कि कालेज और विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिये व्यवसायिक जागरण की कोई आवश्यकता नहीं है।

चौबे, नीता गुप्ता और गुप्ता, बाई0 के0 (1985) ने बी0एड0 छात्रों के शिक्षण दक्षता एवं अभिवृत्ति का उनके शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा शिक्षण व्यवसाय के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया। इन्होनें अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि

(1) सभी स्त्री एवं पुरूष अध्यापकों के अध्यापन व्यवसाय एवं शिक्षण दक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
(2) स्त्री एवं पुरूष अध्यापक के शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
(3) शैक्षिक योग्यता का योन भेदों के होने पर भी अध्यापन क्षमता से कोई सम्बन्ध नहीं है।
(4) यौन का कोई महत्व सम्प्राप्ति, अभिवृत्ति एवं अध्यापन प्रभाविकता पर नहीं है।

उपर्युक्त अध्ययनों का साराँश निम्न प्रकार है :–

1. शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा शिक्षण कार्य क्षमता में धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है।
2. प्रशिक्षण अभिक्रिया के पूर्व तथा पश्चात् की दशा में छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति पर कोई सार्थक परिवर्तन नहीं है।
3. प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव से अभिवृत्ति अंकों के मध्यमानों में परिवर्तन धनात्मक तथा ऋणात्मक दिशा में प्राप्त हुये। लिंग तथा संस्थाओं के आधार पर अभिवृत्ति के समंकों के मध्यमानों के अन्तर सार्थक नहीं थे।
4. शिक्षक प्रभावशीलता का सम्बन्ध उन व्यक्तियों के शैक्षिक तथा व्यवसायिक अनुभवों से, ऐसे व्यक्तियों में अधिक पाया गया, जिनके पास इन अनुभवों का अभाव था।

5. प्रशिक्षण का छात्रों के मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. शिक्षकों में सामाजिक, राजनैतिक तथा सैद्धान्तिक मूल्य अधिक होते है जबकि छात्रों में सामाजिक, सौन्दर्यबोधी तथा सैद्धान्तिक मूल्य पर सर्वाधिक अंक प्राप्त किये गये।

श्रीवास्तव, एम0बी0 (1989) में शिक्षण क्षमता जानने का अध्ययन किया और पाया कि अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव, शिक्षण क्षमता पर पड़ता है साथ ही आपने अभिवृत्ति के प्रभाव को स्त्री एवं पुरुष के शिक्षण पर समान माना है।

यादव, जी.एल. (1992) ने अभिवृत्ति का अध्ययन अध्यापक प्रशिक्षण पर किया और पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण पर अभिवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जबकि अन्य परिवर्ती भी प्रभाव डालते हैं लेकिन अभिवृत्ति का सबसे अधिक होता है।

श्रीवास्तव, यज्ञवृत (1992) ने शिक्षकीय अभिवृत्ति पर अध्ययन किया इस कार्य हेतु अपने दस शिक्षा महाविद्यालयों तथा 45 जिला शिक्षा संस्थानों से शिक्षकों का चयन किया। आपने पाया कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा शिक्षकीय अभिवृत्ति पर प्रशिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही अन्य मध्यवर्ती चर शिक्षकीय अभिवृत्ति को प्रभावित करते रहते हैं।

दुबे एवं दास (1994) ने शिक्षा विभाग के एम0एड0 छात्र – छात्राओं के समस्याओं का अध्ययन किया। अपने स्वःनिर्मित समस्या चैक लिस्ट का निर्माण किया ताकि सभी प्रकार की समस्याओं का अध्ययन किया जा सके। परिणाम में पाया गया कि छात्राध्यापक अधिक समस्या ग्रस्त है और छात्राध्यापिकाऐं कम। इनमें व्यक्तिगत, तथा मनोवैज्ञानिक व्यवसायिक समस्याओं का प्रतिशत छात्र–शिक्षकों में अधि ाक पाया गया जबकि छात्रा–शिक्षकों में सवेंगात्मक तथा समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का प्रतिशत अधिक रहा।

बरोट, उर्वशी (1995) ने भाषायी शिक्षकों की अभिवृत्ति जानने के लिये एक अध्ययन किया आपने परिणाम पाया कि भाषायी शिक्षक अन्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सक्रियता दिखाते हैं। भाषायी शिक्षकों की अभिवृत्ति बच्चों के कक्षा पास करवाने की ही न होकर, उनके जीवन को सुन्दर बनाने की भी होती है।

बाजपेयी (2000) ने अभिवृत्ति का अध्ययन एन0सी0सी0 के छात्रों पर किया। आपने चरित्र, निर्माण मैत्री भाव, सेवा भाव, और नेतृत्व क्षमता के साथ – साथ देशभक्ति के प्रति भी अभिवृत्ति जानने की कोशिश की है। इस अध्ययन के निम्न निष्कर्ष

पाये गये।

1– सकारात्मक रूख एन0सी0सी0 के प्रति पाया गया।

2– क्षेत्रीयता का अधिक प्रभाव पाया गया।

3– परिपक्वता प्रवीण छात्र एन0सी0सी0 को पसन्द करते हैं।

4– शिक्षा का, अभिवृत्ति निर्माण पर प्रभाव पड़ता है।

विद्यार्थी (1978) ने सेवा निवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया। आपने अपने शोध के निष्कर्षों में निम्न तथ्य पाये –

1– अधिकाँश सेवानिवृत्ति शिक्षक, जीवन के प्रति सकारात्मक रूख अपनाते हैं।

2– अधिकाँश शिक्षक सेवानिवृत्ति के लिये स्वयं को तैयार नहीं रखते हैं।

3– दैनिक अशांति का कारण – बच्चों की अधूरी शिक्षा, नौकरी का न मिलना, शादी न होना, सेवा का अभाव, पच्छिमी मूल्य प्रभाव और आधुनिक जीवन स्तर, आदि होते हैं।

4– सेवानिवृत्ति शिक्षकों की कम आयु तक जीवित रहने का मुख्य कारण खान–पान में अनियमितता और संस्कार हीन वातावरण होता है।

5– सामाजिक सम्मान में कमी होने से उनमें निराशा, तनाव और कुण्ठा जैसी प्रवृत्तियाँ जन्म ले लेती है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त साहित्य सर्वेक्षण वर्णन के आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालने को बाध्य हो जाता है कि अध्यापकों के प्रशिक्षण, व्यक्तित्व, कक्षा व्यवहार, अभिवृत्ति, प्रेरणा आदि क्षेत्रों पर बहुत शोधकार्य सम्पन्न हुये हैं। सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्याओं पर सिर्फ "विद्यार्थी" जी ने ही शोधकार्य सम्पन्न किया है। आपने सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्याओं को केन्द्र माना है, न कि उनके प्रति उनकी अभिवृत्ति क्या है ?, जानने की कोशिश नहीं की है। अतः जब तक सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति को हम नहीं मान लेते हैं, उनकी समस्याओं का मूल्याँकन, विश्लेषण और समाधान के सुझावों का कोई महत्व नहीं हो सकता है। इसलिये शोधकर्ता ने, सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति और विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना उपयुक्त माना है।

अध्याय - तृतीय

शोध - प्रविधि

१ - शोध न्यादर्श (प्रतिदर्श)

२ - शोध उपकरण (अभिकरण)

३ - प्रदत्त संकलन विधियाँ

४ - प्रदत्त विश्लेषण विधियाँ

अध्याय–तृतीय
शोध प्रविधि

अनुसंघान की कई विधियां हैं। शिक्षा शास्त्र विषय में सामान्य रूप से निम्न तीन विधियोंका प्रयोग किया जाता है।

(क) इतिहास अनुसंघान विधि।

(ख) विवरणात्मक अनुसंघान विधि।

(ग) प्रयोग अनुसंघान विधि।

इतिहास अनुसंघान विधि द्वारा भूतकाल में तथ्यों का निरिक्षण, विश्लेषण एवं व्याख्या करके किसी सामान्य सिद्वान्त का प्रतिपादन किया जाता है जो वर्तमान एवं भविष्य के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी होता है।

विवरणात्मक अनुसंघान विधि वर्तमान की किसी भी समस्या का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण एवं व्याख्या करती है।

प्रयोग अनुसंघान विधि द्वारा किसी भी तथ्य या समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन इस रूप में किया जाता है कि उस तथ्य या समस्या का प्रभाव या स्वरूप भविष्य में कैसा होगा?

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य द्वारा, वर्तमान की दशाओं के परिपेक्ष्य में ही सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है। अतः इस अनुसंधान कार्य की विधि विवरणात्मक प्रकार की है, क्योंकि "विवरणात्मक" (वर्णानात्मक) अनुसंधान, वर्तमान स्थिति की व्याख्या तथा विवेचना प्रस्तुत करता है। इसका संबन्ध उन स्थितियों तथा संबंधों से है जिसका असतित्व वर्तमान में है अथवा उन व्यवहारों से हैं जो कि प्रचलित हैं व उन दृष्टिकोंणों अथवा अभिवृत्तियों से हैं, जिनका प्रचलन है व ऐसे प्रक्रमों से है जो कि सक्रिय हैं तथा उन प्रभावों से है जिनमें अनुभव किया जा रहा हैअथवा उन उपनतियों से है जो कि विकास शील हैं। स्पष्टतः ऐसे अनुसंधान का स्वरूप अत्यधिक व्यापक, विस्तृत तथा विषम होता है। इसके अंर्तगत विभिन्न प्रकार के अध्ययन आते हैं। जिनमें से प्रमुख दो हैं–

(1) सर्वेक्षण अनुसंधान

(2) व्यक्ति वृत्त अनुसंधान

सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अंर्तगत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं (समष्टियों) का अध्ययन

उनमें से चयन किये गये प्रतिदर्शों के आधार पर इस आषय से किया जाता हैताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटना कमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तर संबंधों का ज्ञान उपलब्ध हो सके। दूसरे शब्दों में, जब समाज के विभिन्न चरों के धटित होने की आवृत्ति उनके वितरण एवं पारस्परिक संबंधों का निर्धारण करने के लिये किसी समष्टि (पॉपुलेशन) का अध्ययन उस समष्टि से प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श से प्रदत्त प्राप्त कर किया जाता है, तो उसे सर्वेक्षण अनुसंधान का नाम दिया जाता है।

व्यक्ति वृत्त अनुसंधान में किसी व्यक्ति विशेष या छोटी सी संख्या के किसी समस्या विशेष का ध्यानपूर्वक एवं गहन अध्ययन तथा विश्लेष्ण किया जाता है। दूसरे शव्दों मे जब अध्ययन किसी एक व्यक्ति या किसी एक कारक या छोटे से समूह पर केन्द्रित होता है तो उसे व्यक्ति वृत्त अनुसंधान विधि कहा जाता है।

उर्पयुक्त दोनों प्रकार की अनुसंधान अध्ययन पद्वतियों में से सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है क्योंकि ड़ॉक्टर एच॰के॰कपिल॰ के अनुसार इनकी निम्न विशेषताएं बतायीं जातीं हैं।

(1) सर्वेक्षण द्वारा विशेषतः डाक प्रश्नावली के माध्यम से सामाजिक तथा व्यवहारिक समस्याओं से संबंधित व्यापक तथा अत्यधिक विस्तृत क्षेत्रों का भी सुविधापूर्वक अध्ययन किया जाता है।

(2) सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन के अंर्तगत जब अध्ययनकर्ता धटना स्थल पर प्रत्यक्ष रूप से उत्तर दाता के संर्पक में आता है तब उसे उसके मनोभावों, विचारों तथा अघ्ययन संबंधित अन्य तत्वों का निकट से अध्ययन करने का अवसर मिलता है।

(3) आधुनिक सर्वेक्षण पद्वति, एक वैज्ञानिक पद्वति है। अतः आधुनिक सामाजिक सर्वेक्षणों में विशेषतः वैज्ञानिक सर्वेक्षणों मे अध्ययन का आधार प्रायः यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन रहता है। जिससे समिष्ट से संबंधित परिशुद्व, वस्तुपरक तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संतुलन में सहायता मिलती है। यादिृच्छिक प्रतिदर्श चयन के उपयोग में प्राप्त आंकड़ों के प्रति मानक दृष्टि की भी सरलता पूर्वक गणना की जा सकती है और परिशुद्व सीमांओं के विषय में विश्वस्त औंकलन लगाया जा सकता है। इस प्रकार सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन सामाजिक जीवन का एक प्रकार से शुद्व व सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।

(4) सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन प्रयोग शाला पर आधारित अध्ययनों से अधिक मितव्ययी रहते हैं। क्योंकि सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन में अधिक सूचना सापेक्षिकतः कम खर्च पर तथा कम समय में उपलब्ध होती है।

(5) सामाजिक अनुसंधान का ध्येय प्रायः सैद्वांन्तिक तथा दीर्ध कालीन समस्या

का अध्ययन करना होता है जिसका संबंध भविष्य से रहता है।

(6) सामाजिक सर्वेक्षण अनुसंधान में समस्या का रूप विशिष्ट रूप से अमूर्त तथा बौद्विक होता है।

(7) सामाजिक अनुसंधान द्वारा प्राप्त तथ्यों का ध्येय वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्वि करना होता है और नवान सिद्वांतों एवं विचारों की रचना करना होता है।

(8) सामाजिक अनुसंधान द्वारा प्राप्त ज्ञान का स्वरूप प्रायः सार्वभौमिक होता है।

प्रदत्तों के स्त्रोत :–

अनुसंधान की विधि निश्चित हो जाने के बाद आँकड़े प्राप्त करने के स्त्रोत का निर्धारण किया जाता है। ये आँकड़े (प्रदत्त) कहाँ से एवं कैसे प्राप्त किये जाते हैं, इस संबंध में भी अनुसंधान कर्ता को स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। जिसकी विवेचना नीचे की गयी है।

प्रतिदर्श की आवश्यकता , अर्थ एवं महत्वव :–

व्यवहारिक क्षेत्र में जब अनुसंधान कर्ता को कुछ समस्याओं का समाधान करना होता है तो उसके सामने यह समस्या आती हैकि अपने अनुसंधान के लिये किस जनसँख्या का प्रयोग करें। जनसँख्या निर्धारित हो जाने पर अनुसंधान कर्ता के लिये असंभव ही है कि वह जनसंख्या के सभी सदस्यों के लिये साँख्यिकी का प्रयोग कर सके। जनसंख्या बढ़ी होने पर इसके लिये कोई उपयुक्त साँख्यिकी का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। अतः अनुसंधान कर्ता यह कल्पना कर लेता है कि कोई विशेंष विशेषक जनसंख्या के सभी सदस्यों में समान मात्रा में पाया जाता है। ऐसी स्थिति में यदि हम पूरी जनसंख्या का अध्ययन न करके केवल कुछ चुने हुये व्यक्तियों का ही अध्ययन करें तो हमें उसी अनुपात में परिणाम प्राप्त होगा। फलस्वरूप जनसंख्या के बारे में सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से जनसंख्या से प्रयोज्य समूह का चयन किया जाता है जिसे प्रतिदर्श कहते हैं अर्थात प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अन्श होता है जिसमें अपनी समष्टि (पॉपुलेशन) की समस्या विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। प्रतिदर्श चयन में निम्न बातों को ध्यान में रखा गया है। (क) सम्भाव्यता के नियमों का पालन (ख) समष्टि के सभी स्तरों का समावेश (ग) पर्याप्त आकार (ध) समष्टि का प्रतिनिधित्व (ड़) सामान्यीकरण (च) अभिनति विहीनता (छ) विश्वसनीयता।

सामाजिक अथवा व्यवहार सम्बन्धी विज्ञानों में जिन समष्टियों का

अध्ययन किया जाता है ये प्रायः अपरिमित होती हैं। वे समांगी और एक सूत्र में बँधी न होकर बहुलाँगी तथा कई उपसमूहों में बंटी होती है। उपसमूहों में बंटे होने के कारण कई आधार हो सकते हैं जैसे आयु, लिंग, जाति, अर्थ, धर्म आदि ये आधार इन उपसमूहों के गुण धर्म होते हैं। सामाजिक एवं व्यवहार सम्बन्धी विज्ञानों में अध्ययन किये जाने वाले गोचर, इन गुणधर्मो से सम्बन्धित होने के कारण प्रतिदर्श ग्रहण की प्रक्रिया में उसके प्रतिनिध्यात्म स्वरूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इन आधारों पर बटी समष्टि के सभी उपसमूहों की संख्या एक सो नहीं होती। जब समष्टि का स्वरूप सजातीय होता है तब प्रतिदर्श चयन में कोई कठिनाई नहीं होती है। परन्तु जब समष्टि का स्वरूप विषम होता है तो प्रतिदर्श की इकाईयों के चयन के लिये प्रतिचयन (सैम्पुलिंग) प्रक्रिया का उपयोग करना पड़ता है। एक अच्छे प्रति चयन की निम्न विशेषतायें होती हैं।

(1) – प्रत्येक इकाई का प्रतिनिधित्व होना चाहिये।

(2) – मूल जनसंख्या के सभी गुण होने चाहिये।

(3) – प्रतिदर्श की इकाईयों की जनसंख्या उपयुक्त होनी चाहिये।

(4) – अभिनति (वियास) से मुक्त होना चाहिये। यदि उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर प्रतिचयन का निर्धारण किया जायेगा तो अध्ययनकर्ता को निम्न लाभ प्राप्त होंगे :–

(क) – समय की बचत।

(ख) – धन की बचत।

(ग) – गहन अध्ययन।

(घ) – प्रशासकीय सुविधा।

(ड़) – विश्वसनीयता।

(च) – अध्ययन में उपयुक्तता।

(छ) – बोधगम्यता।

प्रतिचयन के चुनाव में समष्टि के स्वरूप को ध्यान में रखा जाता है और उसी के अनुरूप विधि का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः प्रतिचयन की दो विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(क) – सम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि।

(ख) – असम्भाव्य प्रतिदर्श विधि।

सम्भाव्यता प्रतिदर्श वह योजना है, जिसके अन्तर्गत हम इस बात

की सम्भावना करते हैं कि चुने हुये प्रतिदर्श में मूल जनसंख्या की सभी विशेषतायें विद्यमान है। सम्भांव्यता प्रतिदर्श में जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के चुने जाने की समान सम्भावना अथवा कोई न कोई सम्भांवना अवश्य होती है। किसी प्रतिदर्श की इकाईयों का चुनाव किस रूप में किया जाये। इसके लिये सामान्यतः तीन विधियाँ प्रचलित हैं :–

(1) – सरल अनियत प्रतिदर्श (सिम्पुल रेनडम सैम्पलिंग)

(2) – वर्गवद्ध अनियत प्रतिदर्श (स्ट्रेटीफाइड रैनडम सैम्पलिंग)

(3) – समूह प्रतिदर्श (क्लस्टर सैम्पलिंग)

सरल अनियत प्रतिदर्श में इस बात की संकल्पना होती है कि प्रत्येंक इकाई में सम्पूर्ण वर्ग की सभी विशेषतायें तथा गुण होते है तथा प्रतिचयन में प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिदर्श में चुने जाने की सम्भावना समान होती है। इसमें चुनाव के लिये लाटरी विधि, टिकिट की अंक विधि, निश्चित क्रम विधि तथा ग्रिड विधि का प्रयोग किया जाता है । सरल अनियत विधि द्वारा चयन किये गये प्रतिदर्श को प्रायः प्रतिनिधित्व कारी मान लिया जाता है परन्तु ऐसी भी सम्भावना हो सकती है कि चुने हुये प्रतिदर्श में भिन्न–भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में एवं मूल जनसंख्या के भिन्न–भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में अन्तर हो।

अतः इस अन्तर को समाप्त करने के लिये वर्गबद्ध प्रतिदर्श (स्ट्रेटीफाइड) का प्रयोग किया जाता है जिसका अभिप्राय होता है "समष्टि के सभी सदस्यों में से किसी भी सदस्य को लिये जाने की प्रायिकता का समान होना। अर्थात् समष्टि से किसी दूसरे प्रतिदर्श के लिये जाने की प्रायिकता वही है जो प्रायिकता पहले प्रतिदर्श के लिये जाने की थी।" इसके लिये मूल जनसंख्या को भिन्न–भिन्न विशेषकों के आधार पर विभक्त कर लिया जाता है और इन भिन्न–भिन्न विशेषकों वालों को अलग–अलग समूह मान लिया जाता है। जिस अनुपात में मूल जनसंख्या (समष्टि) में इन विभिन्न वर्गों (स्ट्रेटा) की संख्या होती है, उसी अनुपात में अनियमित विधि से इकाइयां चुन ली जाती हैं। यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन से अनुसंधानकर्ता को निम्न लाभ होता है :–

(1) – अधिक प्रतिनिध्यात्मक – इस विधि द्वारा प्राप्त प्रतिदर्श अपनी समष्टि का अधिक प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इसमें प्रत्येक इकाई के चयन को उसके स्तर के अनुसार भार दिया जाता है।

(2) – कम मानक त्रुटि – इस विधि में प्रत्येंक स्तर की संख्या को उसकी मूल संख्या के आधार पर भार दिये जाने से प्रतिदर्श के स्वरूप में आन्तरिक विषमता कम हो

जाती है। तदनुसार प्रतिदर्श की मानक त्रुटि कम हो जाती है।

(3) – अधिक विश्वसनीयता – जब किसी प्रतिदर्श की मानक त्रुटि कम रहती है तक उसकी विश्वसनीयता का स्तर भी उच्च्य रहता है।

(4) – अधिक वैज्ञानिक – स्पष्टतः जब एक प्रतिदर्श अधिक विश्वसनीय होता है जब उसका स्वरूप भी अधिक वैज्ञानिक होता है।

(5) – गहन अध्ययन – जब समष्टि का स्वरूप उपविभाजन के कारण छोटा होता है तब उसके गहन अध्ययन की भी सम्भावना अधिक रहती है।

(6) – इकाइयों के छूटने की कम सम्भावना – एक समष्टि के विभिन्न स्तरों में विभाजित हो जाने से इकाइयों के छूटने की सम्भावना सापेक्षिकतः कम रह जाती है। अतः शोधकर्ता ने निर्णय किया कि प्रस्तुत शोध कार्य हेतु स्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन हेतु न्यादर्श का निर्धारण :–

चूँकि प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में स्थित झाँसी जिला को चुना गया है। अतः इस प्रक्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षक/शिक्षिकाओं तक ही सीमित है। इसमें भी उन सेवानिवृत्त शिक्षक/शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है जो 1986 से लेकर 1998 तक हुये हैं। इसमें प्राइमरी तथा माध्यमिक दोनों ही स्तरों के शहरी, कस्बे तथा ग्रामीण आदि क्षेत्रों के सेवानिवृत्ति शिक्षकों/शिक्षिकाओं को अध्ययन हेतु लिया गया है। उक्त दोनों स्तरों के सेवा निवृत्ति शिक्षकों/शिक्षिकाओं को 300 + 300 स्तरीकृत यादृच्छित प्रतिचयन के नियमों के अनुसार निम्न प्रकार से किया गया है।

झाँसी जनपद में प्राइमरी तथा माध्यमिक विद्यालय नगर एवं ग्राम्याँचल में स्थित हैं। अतः सेवा निवृत्त शिक्षकों/शिक्षिकाओं का चयन प्रत्येक तहसील में से लाटरी पद्धति से किया गया है। न्यादर्शचयन में सन्तुलन बनाये रखने हेतु उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्तर आयु, वर्ग, जाति का भी ध्यान रखा गया। इस प्रकार से कुल प्रयोज्य संख्या निम्न तालिका में दर्शायी गई हैं :–

तालिका – 3.1

शिक्षक स्तर	माध्यमिक = 300		प्राईमरी = 300	
क्षेत्र	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री
नगरीय	50	50	50	50
कस्वा	50	50	50	50
ग्रामीण	50	50	50	50

अभिकरणों (उपकरणों) का विवरण :–

आज के वैज्ञानिक युग में ज्ञान–विज्ञान के सभी विशिष्ट तथा सामान्य दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अब तक अन्य व्यवहारिक आवश्यकताओं की भाँति मापन की व्यवहारिक आवश्यकता का महत्व रहा है। प्राचीन काल से ही मानव ने प्रकृति के ठोस, तरल एवं वायवीय पदार्थों के मापने का प्रयास किया है। जैसे – ज्ञान – विज्ञान के क्षेत्र में नये आयामों ने करवटें ली, प्रगति ने भी अपने कदम आगे बढ़ाये उसके साथ मनुष्य ने भी नये नये क्षेत्रों में नये नये कार्य आरम्भ किय। उसने स्थूल पदार्थों के अतिरिक्त सूक्ष्म एवं अमूर्त मानवीय, व्यवहारों, भावनाओं तथा सामाजिक सम्बन्धों को भी मापने का निरन्तर प्रयास किया। ज्यों ही बालक गर्भ में आता है और धरती पर अवतरित होता है, उसकी अनेकानेक गतिविधियों को मापने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है जो उसके विकास के साथ – साथ अबाध गति से चलती रहती है। उदाहरणार्थ – गर्भस्थ शिशु के भार एवं श्वसन के मापन का प्रयास, उसके विकास का अनुमान, उत्पन्न होने के पश्चात् उसके आकार –प्रकार, भार का मापन, मापाँकित बोतल से दूध देना, कपड़ों का मापन, लम्बाई चौड़ाई का मापन, शारीरिक विकास का मापन, रूचि, प्रवृत्ति, स्मरण शक्ति, बौद्धिक योग्यता, सामाजिकता, व्यक्तित्व, अभिक्षमता, अभिवृत्ति और उपलब्धि आदि का मापन । इन सभी सम्भावनाओं के मापन हेतु मानसिक तथा भौतिक मापनों का प्रयोग किया जाता है। ज्यों–ज्यों व्यक्ति की व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक भिन्नताओं की जटिलता सामने आती गयी, त्यों–त्यों व्यक्ति की व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक भिन्नताओं की जटिलताओं को भी मापने के लिये मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी।

आधुनिक युग में मनोविज्ञान का क्षेत्र पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गया है। प्रायः हम इन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से विभिन्न विशेषताओं के आधार पर प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूहों को समान करते हैं। मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक अनुसंधानों में परीक्षण एक यन्त्र उपकरण, तथा साधन का कार्य करता है।

अभिकरणों (उपकरण) का प्रयोग

सर्व प्रथम अनुसंधान कर्ता ने प्रस्तुत अनुसंधान के लिये अभिकरणों का चयन किया तथा प्रतिदर्श का निर्धारण किया तथा अभिकरण प्रयोग की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की क्योंकि अभिकरण प्रयोग (प्रशासन) का कार्य सरल नहीं है,। चूँकि परीक्षण कर्ता, उत्तरदाता के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आता है इसलिये परीक्षण कर्ता को परीक्षण

प्रयोग के उद्देश्य, प्रमाणिकता का स्पष्टीकरण का स्पष्टीकरण करना होता है तथा परीक्षार्थी (प्रयोज्य) की जिज्ञासा को शान्त करना होता है। अनुसंधानकर्ता ही दिये गये अभिकरणों के प्रश्नों का शुद्ध – शुद्ध उत्तर देने के लिये परीक्षार्थी को मानसिक रूप से तैयार करता है। सामान्य रूप से सामूहिक परीक्षण ही सरल माने जाते हैं और कम अशुद्धि वाले होते हैं फिर भी उन्में कुछ कमियाँ होती हैं जिसके निम्न कारण हो सकते हैं :– प्रशासन व्यवस्था, मौखिक निर्देश, समय नियन्त्रण तथा अनुक्रिया लेखन आदि।

अभिकरण प्रयुक्त करने के सम्बन्ध में कुछ ऐसी सामान्य समस्याये है जो प्रायः सभी अभिकरण प्रयोग में पायी जाती हैं। क्रानबैक (1960) के अनुसार इनसे सम्बन्धित समस्याओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(अ) – भौतिक दशाओं पर नियन्त्रण

(ब) – समूह पर नियन्त्रण।

यद्यपि यह दोनों ही भाग परस्पर सम्बन्धित हैं, फिर भी दोनों का अलग–अलग अध्ययन समाधीन होगा। भौतिक दशाओं के संबंध में थार्नड़ाइक (1957) ने निम्न तथ्यों को दृष्टिगत रखने की बात कही है।

(1) – परीक्षण कक्ष में शान्ति का वातावरण होना चाहिये।

(2) – कक्ष में प्रकाश एवं वायु के आवागमन की सुन्दर व्यवस्था होनी चाहिये।

(3) – परीक्षार्थी के बैठने एवं लिखने के लिये उचित् आसन होना चाहिये।

(4) – परीक्षण कक्ष का आकार उपयुक्त होना चाहिये, ताकि परीक्षार्थी परीक्षण कर्ता को देख सके, उसकी बातों को सुन सके तथा परीक्षण कर्ता उन पर नियन्त्रण रख सके।

(5) – दो परीक्षार्थियों के बीच में जगह होनी चाहिये जिससे परीक्षण सामग्री को आसानी से परीक्षार्थियों तक पहुँचाया जा सके, तथा उत्तरों का निरीक्षण हो सके।

(6) – परीक्षार्थियों के बीच उचित् दूरी होनी चाहिये, ताकि परस्पर उत्तरों के आदान प्रदान या अनुकरण की प्रवृत्ति को रोका जा सके। दूसरी महत्वपूर्ण समस्या समूह को नियन्त्रित करने की है। सभी मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्री इस बिन्दु पर एक मत हैं कि सामूहिक परिक्षणों को तार्किक रूप से परिपक्व एवं सहयोग शील परिक्षार्थियों पर ही प्रशासित करना चाहिए। विंधम का कथन है कि "एक निपुण परिक्षकर्ता अपने निर्णय, बौद्विक क्षमता, परीक्षार्थियों के व्यवहार के प्रति संवेदनशील तथा मनोमिती तकनीकी के वैज्ञानिक ज्ञान एवं अनुभव का प्रयोग करके समूह का नियंत्रण भली भांति कर सकता है।"

उपर वर्णित अभिकरण प्रयोग नियमों एवं सावधानियों को भली भाँति समझने के पश्चात् अभिकरणों का प्रयोग किया गया। अभिकरणों की जटिलता एवं परीक्षण प्रशासन में एकरूपता बनाये रखने के लिये सभी अभिकरणों को अनुसंधानकर्ता ने स्वयं प्रशासित किया। सर्वप्रथम अनुसंधानकर्ता सभी चयनित विघालयों के प्रधानाचार्यों से मिले और सेवानिवृत्त शिक्षकों /शिक्षकाओं से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किया । उन्हें अपना संक्षिप्त परिचय दिया तथा परीक्षण का स्पष्ट उद्देश्य बताया। अध्यापकों की सहमति एवं उनकी इच्छा पर उन्हें दोनों परीक्षण प्रश्नावली दी गयी तथा पहले सामान्य सूचनायें भरने को कहा गया चूँकि सभी परिपक्व, अनुभवी तथा प्रशिक्षित अध्यापक थे अतः उन्हें अलग से परीक्षण भरने के उद्देश्य दिये गये परंतु जहाँ कहीं भी उन्हें अस्पष्टता दिखी उनका स्पष्टीकरण अनुसंधान कर्ता द्वारा किया गया। चूंकि प्रश्नावली पूर्ण करने की कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है, अतः पूर्ण उत्तरित प्रश्नावली क्रमशः उनसे प्राप्त कर ली गयी।

मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक अनुसंधानों में परीक्षण एक यंत्र, उपकरण तथा साधन का कार्य करता है। जिस तरह भौतिक विज्ञान में किसी अन्वेषण में यंत्रों एवं मशीनों की आवश्यकता होती है उसी तरह से शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक अनवेषणों में भी परिक्षणों की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा के शोध कार्य में वैज्ञानिक दर्जा दिलाने का कार्य इन्हीं परिक्षणों को जाता है। इन परीक्षणों के द्वारा बिषय से संबंधित विभिन्न तथ्यों को एकत्रित किया जाता है, और विभिन्न व्यवहारों की तुलना इन्ही के आधार पर की जाती है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में तथ्यों को एकत्रित करने के लिये शोध कर्ता ने निम्न परीक्षणों का प्रयोग किया है।

1– सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति अनुसूची (स्वविकसित)

2– सेवानिवृत्त शिक्षक समस्या प्रश्नावली (स्वविकसित)

सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति अनुसूची का विकास :–

शिक्षकों की संख्या में प्रसार एवं गुणात्मक सुधार की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर आज सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति एक समस्या बन चुकी है। इस हेतु शिक्षक को सेवानिवृत्त से पहले अपनी मानसिक दशा को संतुलित करते हुये स्वस्थ्य परंपरा का निर्वाह करना होगा, ताकि वे उन दशाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकें जो सेवानिवृत्त होने के बाद आतीं हैं। अतः शोधकर्ता ने सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति अनुसूचि का विकास किया। इसमें कुल 25 कथन हैं। ये सभी कथन शिक्षकों के विभिन्न पाँच क्षेत्रों पर प्रकाश ड़ालते हैं। ये पाँच क्षेत्र निम्न लिखित हैं :–

(1) जीवन के प्रति अभिवृत्ति।

(2) बच्चों के प्रति अभिवृत्ति।

(3) सम्मान के प्रति अभिवृत्ति।

(4) सहयोगियों के प्रति अभिवृत्ति।

(5) व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति।

प्रारंभ में प्रश्नावली में सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति से संबंधित कुल 100 कथन रखे गये, जिसमें प्रत्येक उप–क्षेत्र से 20–20 प्रश्न संबंधित थे। इन 100 कथनों पर मुरादाबाद (हिन्दू कालेज) में आयोजित सेमीनार में आये विभिन्न शिक्षा विदों, मनोवैज्ञानिकों एंव समाज शास्त्रियों ने विचार विर्मश किया। इसके आधार पर कुछ कथनों में संशोधन किया और कुछ को छोड़ दिया गया। इस प्रकार से 60 कथन प्राप्त हुये जिनमें से 12–12 कथन प्रत्येक उपक्षेत्र से थे। फिर इन 60 कथनों का प्रयोग 25 सेवानिवृत्त शिक्षकों पर विश्लेषण हेतु किया और अंत में पाँच उपक्षेत्रों हेतु सिर्फ 25 कथनों को चुना गया। इस प्रकार से प्रत्येक उपक्षेत्र में 05–05 कथन रखे गये। इस प्रकार से शोधकर्ता ने पाँच क्षेत्रों में अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया।

(1) जीवन के प्रति :–

सेवानिवृत्त शिक्षक, स्वंय का विचार, दृष्टिकोंण या मानसिक स्थिति को जीवन के प्रति कैसा बनाते है, इसके प्रति उसकी शोच की जानकारी इससे प्राप्त की गयी है। विचारक जीवन को ईश्वर की वहुमूल्य कृति मानतें हैं। कुछ लोग इसको संर्धशीलता और जीवन में आनन्द लेना मानते हैं। भाग्यवादी लोग जीवन में उन्नति और अवनति को भाग्य मानते हैं। अतः वर्तमान विचारों में से सेवानिवृत्त शिक्षक अपने जीवन के प्रति कैसी अभिवृत्ति रखते हैं, शौधकर्ता ने जानने की कोशिश, जीवन के प्रति अभिवृत्ति से की है।

(2) बच्चों के प्रति :–

सेवानिवृत्त के पश्चात् बच्चों का उत्तरदायित्व, शिक्षक वर्ग कैसा महसूस करते हैं, शोधकर्ता ने बच्चों के प्रति अभिवृत्ति जानने की कोशिश की है। दार्शनिक विचार है कि मोह से हमें संबंध तोड़ देना चाहिए। शिक्षक की प्रसन्नता, निराशा और समायोजन आदि प्रतिकियायें बच्चों के प्रति (व्यवहार और कार्यो) कैसी है ? जानना इस शोधकार्य का उद्देश्य है।

(3) सम्मान के प्रति :–

सम्मान से तात्पर्य सेवानिवृत्त शिक्षकों के व्यक्तिगत सम्मान से

और सामाजिक सम्मान से होता है। परिवार के लोग उनका आदर कैसे और किन रूपों में करते हैं तथा समाज में उनका सम्मान क्या उसी प्रकार से होता है जैसा कि सेवानिवृत्त से पहले हुआ करता था। सेवानिवृत्त शिक्षक की राय लेना, उसे अभिवादन करना, आदि से ही वह गदगद हो जाता है, और अपनी उपयोगिता महसूस करता है।

(4) सहयोगियों के प्रति :—

इस प्रकार की अभिवृत्ति से तात्पर्य सेवानिवृत्त शिक्षकों के प्रति अन्य लोगों के व्यवहार करने और उसकी अन्य लोगों के प्रति व्यवहार करने की प्रतिक्रिया से होता है। सेवानिवृत्त शिक्षक सहयोग की आकाँछा रखता है और सहयोग करने की इच्छा रखता है। उसमें परिवार बाधक तो नहीं होता है या उसको प्रोत्साहन मिलता है इस प्रकार की मनोदशा का विश्लेषण इस अभिवृत्ति के द्वारा माना गया है।

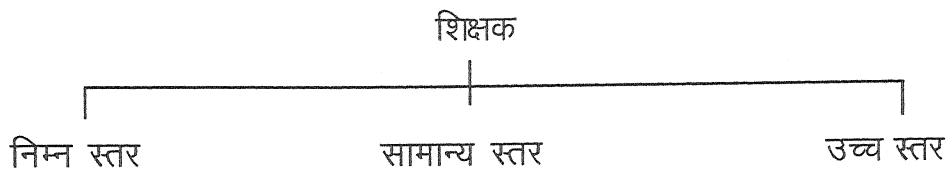
(5) व्यवसाय के प्रति :—

सेवानिवृत्त के पश्चात् शिक्षक स्वंय को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर मानता है या परिवार पर बोझ है, समझता है, या जीने का अर्थ क्या है ! इसकी उलझन में रहता है, आदि विचार मंथन का पता लगाना व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति से तात्पर्य होता है। उसके अनुभव अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक रहे हैं, या नकारात्मक उसने व्यवसाय का पूरा आन्नद उठाया है, या आधे मन से उसे अपनाया है। क्या शिक्षक आज भी अपने व्यवसाय पर और उसकी शुचिता पर गर्व करता है, आदि के संर्दभों में उसकी अभिवृत्ति को जानना आवश्यक है।

(स्कोरिंग एसओरटी) अंक गणना :—

सेवानिवृत्त प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षकों (पुरूष—महिला) के पास जाकर शोधकर्ता ने सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति, अनुसूचि को भरवाया और इस प्रकार से तथ्यों का एकत्रीकरण किया। प्रत्येक कथन के उत्तर— बहुत सहमत, सहमत, और असहमत के रूप में स्थापित किये गये हैं।अतः शोधकर्ता ने बहुत सहमत (02), सहमत (01) और असहमत (00) आदि अंकों में विभाजित किया। इस प्रकार से उत्तरों की गणना स्थापित की गयी। इसके पश्चात् मध्यमान ,मानक विचलन , और मध्यमान त्रुटि प्रत्येक अभिवृत्ति क्षेत्र की ज्ञात की गई। इसके पश्चात् पुरूष और महिला सेवानिवृत्त शिक्षकों की "दी" मान ज्ञात किया गया।

सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति के मापन के लिये तीन बिन्दु मापनी का प्रयोग किया गया। अंक प्रदान निम्न प्रकयार से किया गया।



विश्वसनीयता तथा वैधता :–

समय के आभाव के कारण शोधकर्ता ने सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता और वैधता की सही रूप से गधना नहीं कर पाई। मनोवैज्ञानिक तकनीकि तथा साइकोमेट्रिक प्रोसीजर यह मानता है कि विशेष परिस्थितियों में और परीक्षण की विशेष आवश्यकतानुसार "फेस वैधता और विश्वसनीयता" का प्रयोग किया जा सकता है। प्रस्तुत परीक्षण इस हेतु उचित तथा उपयोगी है, जिससे वह शोध ा के उद्देश्य को पूरा करने में समर्थ और सहायक होता है।

सेवानिवृत्त शिक्षक समस्या प्रश्नावली का विकास :–

शिक्षकों के जीवन को अच्छा बनायें रखने के लिये तथा उनके सम्मान को स्थायित्व बनाये रखने के लिये सेवानिवृत्त शिक्षकों की सतस्या का अध्ययन करना शोध कर्ता ने आवश्यक माना। इसकी समस्याओं को पाँच भागों में बाँटा गया है और प्रत्येक भाग में दस कथन रखे गये हैं। इस प्रकार से इनकी समस्याओं को जानने के लिये कुल पचास कथन लिये गये हैं ये सभी कथन सेवानिवृत्त शिक्षकों से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। ये पाँच समस्यायें निम्न प्रकार हैं :–

(1) मनोवैज्ञानिक समस्यायें :–

मनोवैज्ञानिक समस्या से तात्पर्य मन पर पड़ने वाले उन नकारात्मक प्रभावों से है जो हमेशा अस्तित्वहीन होते हैं। फिर भी वे व्यक्ति को संवेंगात्क अस्थिरता से भर देते हैं और उनके मन में अनावश्यक भय व निराशा का संचार हो जाता है। इस प्रकार से उनका मानसिक सन्तुलन तथा सकारात्मक समायोजन अस्थिर हो जाता है।

(2) शारीरिक समस्यायें :–

सेवानिवृत्त शिक्षकों की शारीरिक समस्याओं से तात्पर्य उनके सामान्य स्वास्थ्य को स्थिर बनाने से होता है। डाक्टरों की राय में आयु के प्रभाव के कारण सेवानिवृत्त शिक्षकों की शारीरिक बीमारियाँ उनकी सही देखभाल न होने से, माना है। इससे उनमें शारीरिक और मानसिक थकान तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में गिरावट आती रहती है।

(3) आर्थिक समस्यायें :–

आर्थिक समस्या से तात्पर्य उपयुक्त धन की उपलब्धि न होना, जिससे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाई होती रहती है। वास्तव में शिक्षक जीवन भर धन कमाता रहा है और पेंन्शन भी मिल रही है, फिर भी धन का अभाव बना रहना आर्थिक समस्या है। इसके कारण परिवार का भरण–पोषण, स्वयं व्यवस्था तथा बच्चों के उचित् व्यवसाय में असफलता आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो उनकी चिन्ता का मुख्य कारण बन जाता है।

(4) समाजिक समस्यायें :–

सामाजिक समस्याओं से तात्पर्य उनके आदर सम्मान में गिरावट होने से है। शिक्षक अपना मत तथा अपने विचारों से समाज को कुछ देना चाहता है, लेकिन वर्तमान की पीढ़ी उनको पुराना या रूढ़ीमत मान कर अवहेलित करती है। परिणामस्वरूप वे स्वयं को अनावश्यक समझ कर एकान्त प्रिय बन जाते हैं।

(5) साँस्कृतिक समस्यायें :–

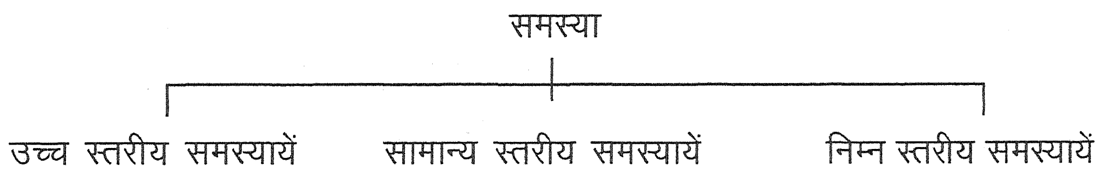
इनसे तात्पर्य सेवा निवृत्त शिक्षकों की धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक अभिरूचि से होता है। शिक्षक को समाज के लोग वह रीढ़ की हड्डी मानते हैं, जिस पर शरीर रूपी समाज टिका हुआ है। शिक्षक से प्रत्येक प्रकार की गुणाँत्मक अपेक्षा की जाती है। यदि वह उससे हट जाता है तो उसके सम्मान में , कमी आ जाती है। अतः वर्तमान की आधुनिकता के साथ वह समझौता करने में असफल रहता है।

अतः उपर्युक्त समस्याओं की प्रश्नावली, विकास का आधार, विद्यार्थी (1978) की अनुसूची को बनाया है। इसी को आधार बनाकर शोधकर्ता ने समस्या अनुसूची का विकास किया जिसमें कुल 75 कथन रखे गये। अतः प्रत्येक समस्या से 15 कथन संबंधित हैं इन 75 कथनों पर हिन्दू कालेज, मुरादाबाद में प्रायोजित सेमीनार में आये मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविदों तथा समाज शास्त्रियों ने विचार विमर्श किया। इसके आधार पर कुछ कथनों में संशोधन किया और कुछ कथनों को हटा दिया। इस प्रकार से प्रत्येक समस्या हेतु 10 कथनों की उपादेयता स्वीकार की गयी। अतः सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्या को जानने की प्रश्नावली अंतिम रूप से तैयार हुई।

सेवानिवृत्त शिक्षक समस्या प्रश्नावली की अंक गणना :–

शोधकर्ता ने स्वंय प्रतयेक सेवानिवृत्त शिक्षक (पुरूष–महिला) के निवास स्थान पर जाकर शोध का उद्देश्य बता कर प्रश्नावली को भरवाया इस प्रकार के तथ्यों का एकत्रीकरण किया। प्रत्येक कथन के उत्तर हाँ अथवा नहीं में रखे गये हैं। अतः शोधकर्ता ने हाँ को (1) अंक तथा नहीं को (0) अंक प्रदान करना निश्चित किया। इस प्रकार से सभी समस्याओं से प्राप्त अंकों को एकत्रित कर लिया और फिर साँख्यिकी गणना के द्वारा मध्यमान, मानक विचलन, प्रतिशत और मध्यमान त्रुटि आदि की गणना की, फिर शिक्षक–शिक्षिकाओं के बीच संबंध जानने के लिये (टी) मूल्य का आंकलन भी आवश्यक माना।

समस्याओं में मापन हेतु तीन बिन्दु मापनी का प्रयोग किया गया। इसी आधार पर प्राप्ताँकों का विश्लेषण निम्न प्रकार से रहा।



विश्वसनीयता तथा वैधता :–

मनोवैज्ञानिक तकनीक तथा साइकोमेट्रिक प्रोसीजर यह मानता है की विशेष परिस्थितियों में और परीक्षण की आवश्यकता के अनुसार "फेस विश्वसनीयता और वैधता" का प्रयाग किया जा सकता है। शोधकर्ता शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। अतः समय का अभाव उसके सामने रहता है। इस कारण सेवानिवृत्त शिक्षक समस्या प्रशनावली की विश्वसनीयता और वैधता की गणना सही रूप से नही कर सका। फिर भी प्रस्तुत परीक्षण शोध समस्या हेतु उचित तथा उपयोगी है और उसके उद्देश्य को पूरा करने में समर्थ और सहायक हो सकता है।

तथ्य संकलन प्रविधि :–

शोधकर्ता ने अपने शोध हेतु तथ्य संकलन के लिये दो प्रकार के अभिकरणों का प्रयोग किया है।

1– सेवानिवृत्त शिक्षक अभिवृत्ति अनुसूचि का प्रयोग अभिवृत्ति को जानने के लिये किया है। इसका विकास स्वंय शोधकर्ता द्वारा किया गया है। उसमें सेवानिवृत्त शिक्षकों के विभिन्न पक्ष जीवन के प्रति, बच्चों के प्रति, सम्मान के प्रति, सहयोगियों के प्रति तथा व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति जानने की कोशिश की है। इस अभिकरण का

विकास शोधकर्ता द्वारा किया गया है।

2– सेवानिवृत्त शिक्षक समस्या प्रश्नावली का प्रयोग शिक्षकों की समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिये किया गया है। ये समस्यायें मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक आदि हैं। इनके अध्ययन एवं मापन के द्वारा शिक्षकों की समस्याओं का प्रभाव उनके व्यक्तित्व और जीवन पर स्पष्ट हो सकेगा। अतः शोधकर्ता ने स्वविकसित प्रश्नावली के द्वारा तथ्य संकलन करना उचित माना।

तथ्य विश्लेषण प्रविधि :–

साँख्यिकी का ज्ञान शोधकर्ता के लिये अत्यंत आवश्यक होता है इसी ज्ञान के फलस्वरूप वह अपने तथ्यों एवं निष्कर्षों को प्रभावीकृत बनाता है। आज के वैज्ञानिक युग में बिना साँख्यिकी ज्ञान या प्रयोग के शोधकर्ता विशसनीय निष्कर्षों पर नहीं पहुँचता है। साँख्यिकी विधियों के प्रयोग से शोध कार्य में वस्तुनिष्ठता , सत्यता , वृहद्‌ता और स्पष्टता आदि वैज्ञानिक दृष्टिकोंण का विकास होता है। इन साँख्यिकी प्रविधियों के प्रयोग से समस्या के प्रदत्तों का विश्लेषण और निष्कर्षों में सरलता प्राप्त होती है। इन साँख्यिकी विधियों का प्रयोग एक सामान्य शोधकर्ता भी आसानी से कर सकता है।

प्रस्तुत शोधकार्य के तथ्यों के साँख्यिकी विश्लेषण में शोधकर्ता मध्मान, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करेंगा, ताकि समस्याओं और अभिवृत्ति के स्तरों का पता लगा सके। साथ ही मध्यमानों की सार्थकता का विश्लेषण (टी) प्रीक्षण के द्वारा स्थापित किया जायेगा। अतः शोधकर्ता प्रथमतः सेवा निवृत्त शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की तुलना करेगा फिर वह उनकी समस्याओं के स्तर की तुलना करेगा। फिर वह अभिवृत्ति और समस्याओं के बीच सम्बन्ध और भिन्नता जानने की कोशिश करेगा।

अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

१ - तथ्यों का संकलन

२ - अभिवृत्ति तथ्यों का विश्लेषण

(अ) नगर क्षेत्र

(ब) कस्बा क्षेत्र

(स) ग्रामीण क्षेत्र

(द) पुरूष-महिला समूह

३ - समस्या तथ्यों का विश्लेषण

(अ) नगर क्षेत्र

(ब) कस्बा क्षेत्र

(स) ग्रामीण क्षेत्र

(द) पुरूष-महिला समूह

४ - अभिवृत्ति तथा समस्याओं की व्याख्या एवं विवेचना।

तथ्य संकलन

प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र झाँसीं मण्डल के अंर्तगत आने वाले सबसे बड़े तथा विकसित झाँसी जनपद को चुना गया है। इस जनपद की पाँच तहसीलों के अंर्तगत ग्रमीण क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा नगर क्षेत्र के सेवा निवृत्त प्राईमरी तथा माध्यमिक 600 अध्यापकों (पुरुष–महिला) को लिया गया है। चूँकि सेवानिवृत्त अधि ाक संख्या में प्राप्त हो सकें अतः शोधकर्ता ने सन् 1988 से 1998 तक के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों पर तथ्य संकलन किया। इस प्रकार से शोधकर्ता ने 300 पुरूष तथा 300महिला सेवानिवृत्त अध्यापकों पर स्वविकसित "अभिवृत्ति परीक्षण" तथा "समस्या परीक्षण " से तथ्यों का संकलन किया। अध्यापक किसी भी स्तर का हो, वह भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि बंधंन में जकड़ा हुआ नहीं होता है। वह तो सिर्फ अपने शिक्षण कौशल से राष्ट्र का गौरव बढ़ाता है। वह किसी समूह से प्रभावित नहीं होता है, बल्कि स्वयं की विशिष्टता का विकास करके शिक्षण के प्रति समर्पित होने के भाव को प्रगट करता है।

प्रस्तुत शोध हेतु झाँसी जनपद की प्रत्येक तहसील में स्थापित प्राईमरी तथा माध्यमिक विधालयों के प्राचार्यों से संपर्क स्थापित करके सेवानिवृत्त अध यापकों के धर के पते लेकर तक्ष्य संकलन की योजना बनाई। इसके साथ प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापक संधों का सहयोग भी लिया। अतः शोधकर्ता ने व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से तथ्य संकलन किया। प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध यापक संधों के अध्यक्ष अथवा सचिवों से मिलकर इनकी बैठक को आयोजित करवाया। उसमें उपस्थित सभी अध्यापक ,अध्यापिकाओं की सुन्दर व्यवस्था की, नास्ता खिलवाया और अपना उद्देशय प्रगट किया। सभी ने इस शोध हेतु पर्याप्त समय एवं सही राय देने का बायदा किया। सर्वप्रथम "अभिवृत्ति परीक्षण " पर तथ्य संकलन किया फिर, चाय–नास्ता देने के पश्चात् "समस्या अनुसूची " को भरवाया गया। इस प्रकार से सामूहिक रूप से तथ्य संकलन संपन्न किया गया।

व्यक्तिगत रूप से तथ्य संकंलन हेतु शोधकर्ता को, स्वंय जाकर परीक्षणों को भरवाना पड़ा तथा डाक सेवा का भी प्रयाग किया गया। नगर और तहसील मुख्यालय पर जाकर शोधकर्ता ने स्वंय व्यक्तिगत तरीके से तथ्य संकलन करवाया । इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में भी कार्य किया। डाक द्वारा अभिवृंत्ति तथा समस्या अनुसूचि को पत्र के द्वारा भेजा तथा उनको डाक द्वारा ही प्राप्त भी किया। इसके साथ

ही खजाने के स्थान पर जाकर पेन्शन प्राप्त करने वाले अध्यापक तथा अध्यापिकाओं को परीक्षण दे दिये तथा अगले माह आने पर उनसे एकत्रित कर लिये।

इस प्रकार तथ्यों का संकलन सेवानिवृत्त अध्यापक संध, पेन्शन प्राप्त स्थान तथा डाक द्वारा और स्व भेंट आदि के माध्यम से संपन्न किया। फिर शोधकर्ता ने सही प्रपत्रों का चयन कर के 300 पुरूष तथा 300 महिला अभिवृत्ति तथा समस्या उत्तरों को छाँट लिया। उनको एक क्रम दिया ताकि अभिवृत्ति और समस्या उत्तर अध्यापक का समान कम रहे ताकि उनकी स्कोरिंग आसानी से क्षेत्रबार और शिक्षा स्तर बार सही रूप से प्राप्त हो सके। इसी प्रकिया को शोधकार्य का तथ्य संकलन तथा न्यादर्श माना गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण :-

तथ्यों का संकलन करने और स्कोरिंग करने के पश्चात् शोधकर्ता ने तथ्यों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया। अंकों का प्रथम रूप उस समय समाप्त हो जाता है जब उन्हें एकत्रित या संग्रहीत कर लिया जाता है। इस रूप में वे इतने अधिक होते हैं कि उनको समझना प्रयोग में लाना एवं उनसे कोई निष्कर्ष निकालना बहुत ही जटिल होता है। इस विशाल अंक समूह या तथ्य समूह को ऐसे ढंग से छाँटा जाता है या रूप या वर्गो में रखा जाता है कि उनका स्पष्ट आशय या अर्थ प्रकट हो जाये। इस प्रकार से सभी एकत्रित तथ्यों को अधिक सरल एवं बोधमम्य "साँख्यिकि वर्गीकरण" के द्वारा बनाया जाता है।

विद्वतवर्ग ने वर्गीकरण को वस्तुओं को, उनकी सहायताओं और संबंधों के अनुसार समूहों एवं वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रकिया के रूप में माना है। ये इकाइयों की विभिन्नता के बीच पाई जाने वाली एकता को प्रकट करता है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि तथ्य वर्गीकरण एक प्रकिया है, जिसके द्वारा फैली हुयी सामग्री को व्यवस्थित किया जाता है। इस व्यवस्था के आधार पर संपूर्ण सामग्री कुछ विशेष कार्यों में विभाजित कर ली जाती है। इसमें प्रत्येक वर्ग का विस्तार समान होता है। अतः समान कार्य विस्तार के आधार पर विस्तृत सामग्री को संक्षिप्त रूप दे देना ही वर्गीकरण होता है। इसके आधार पर दो उद्दीपकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन को सरल बनाया जा सकता है। शोधकर्ता इसका प्रयोग साँख्यिकीय विवेचना को सुव्यवस्थित, सरल तथा निश्चित रूप से स्पष्ट करने के लिये करते हैं। इस प्रकार से एकत्रित तथ्यों का सही एवं उपयुक्त प्रयोग उद्देशय पूर्ति हेतू किया जाता है।

प्रस्तुत शोध हेतु बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के झाँसी जनपद को चुना गया है। जिसमें पाँच तहसीलें विद्यमान हैं। इन तहसीलों को नगर क्षेत्र, कस्वा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र आदि में विभक्त कर प्राइमरी तथा माध्यमिक (पुरूष/महिला) सेवानिवृत्त आदि की अभिवृत्ति तथा समस्या परिवर्तियों का मूल्याँकन किया गया है। इस प्रकार से शोधकर्ता जब तथ्यों का वर्गीकरण कर लेता है, तब फिर सांख्यिकीय विश्लेषण प्रारम्भ करता है।

<u>तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या :–</u>

शोधकार्य की वैज्ञानिकता सिर्फ तथ्यों के संकलन तक ही सीमित नहीं होती हैं, बल्कि तथ्यों के विश्लेषण की उद्देश्यपरायणता एवं परिकल्पनाओं की परीक्षण क्षमता की पूर्णता पर निर्भर करती है। एक अध्यापक की सफलता उसके शिक्षण कार्य से सहसम्बन्धित रहती है, जो उसे आत्म सन्तोष देती है। अध्यापक की सृजनशक्ति सेवा में रहते हुये ही विकसित होती है, और वह सेवा निवृत्ति के पश्चात् भी जारी रहती है, वशर्ते उसका सेवा निवृत्त का समय शान्त तथा सरल तरीके से व्यतीत हो। अतः शोधकर्ता ने प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का आँकलन करके जो तथ्य एकत्रित किये हैं, असकी व्याख्या हेतु साँख्यकी विश्लेषण अतिआवश्यक है। साँख्यिकीय विश्लेषण के द्वारा कार्य में शुद्धता, निर्पेक्षता और सहीपन आसानी से लाया जा सकता है। "बोल्फ" महोदय ने लिखा है कि प्राकृतिक घटनाओं में उसकी जटिलता तथा ऊपरी स्पष्टता के बावजूद, किसी नियम की खोज, विवेचना तथा समन्वय के द्वारा ही सम्भव है।

अतः साँख्यिकी विधियाँ व्याख्या करने में और आसानी से निष्कर्ष निकालने में सहायता प्रदान करती है। शोधकर्ता को यह स्पष्ठ करने में कोई शंका प्रतीत नहीं होती है कि साँख्यिकी विधियों का प्रयोग किये बिना कोई भी प्रयोग कार्य एवं शोध कार्य नितान्त असम्भव होते है, और यदि सम्भव भी हुये तो उनमें वैज्ञानिक विशेषताओं का पूर्ण आभाव रहेगा।

सामान्यतः शोधकर्ता प्रस्तुत अध्याय को चार उप–विभागों में बाँट कर अध्ययन करते हैं :– प्रथम उप–विभाग के अन्तर्गत, तथ्यों का संकलन तथा स्कडेरिंग उपयुक्त परीक्षणों द्वारा किया जाता है, का वर्णन करते हैं। द्वित्तीय उप–विभाग के अन्तर्गत वर्णनात्मक साँख्यिकी के प्रयोग द्वारा तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या करते है। तृतीय उप–विभाग के अन्तर्गत शोध में प्रयुक्त परिवर्तियों के बीच भिन्नता को जानने के लिये यूनिवैरिएट एनालैसिस ऑफ वैरियन्स का ,प्रयोग करके परिवर्तियों का विश्लेषण

एवं व्याख्या की जाती है। चतुर्थ उप–विभाग के अन्तर्गत शोध प्रयुक्त परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध जानने के लिये स्त्री/पुरूष सेवानिवृत्त अध्यापककों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है।

मध्यमान :–

शोधकर्ता द्वारा तथ्यों का संग्रह, उनका समान वर्गों में वर्गीकरण करके साँख्यिकी में प्रस्तुत करके बना लिया जाता है। इसके पश्चात् इन अंकों के आध ार पर एक ऐसा अंक मालूम कर लिया जाता है जो समस्त् अंकमाला का प्रतिनिधि अंक कहलाता है। सामान्यतः यह अंक माला के बीच में स्थित होता है, और इस अंक के आस–पास ही माला के अंधिक अंक रहते हैं। यह अंक समस्त् पदों का सार होता है, और इसीलियें इसे माला का प्रतिनिधि माना जाता है। इसी को मध्यमान कहा जाता है।

प्रमाणिक विचलन :–

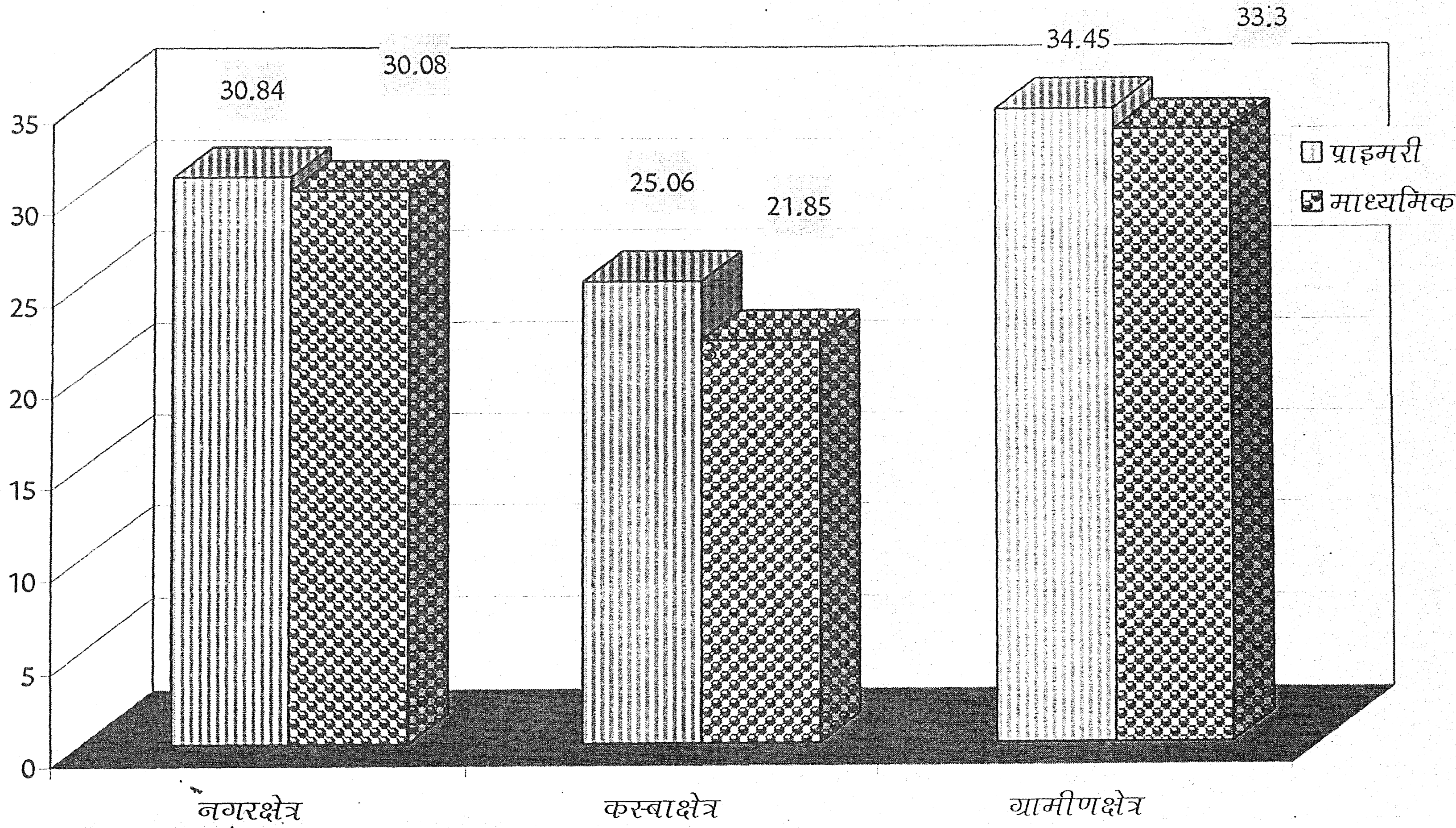
वर्णनात्मक साँख्यिकी की एक माँप प्रमाणिक विचलन भी है। इसको प्रायः प्रभाव विचलन, मानक विचलन, प्रमाणिक विचलन और एस0 डी0 आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। इसको विद्वान सर्वश्रेष्ठ विचलन माँप मानकर प्रयोग करते हैं। साँख्यिकी गणनाओं में इसका प्रयोग वर्ग की समजातीयता और विषम जातीयता को जानने के लिये किया जाता है। शोध कार्यों में और अन्य उच्च गणनाओं में इसका प्रयोग किया जाता है। इसीलिये शोधकर्ता मध्यमान की गणना करके माला के केन्द्रीय अंक का पता लगाता है और फिर वह प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके मध यमान से माला के अंकों या तथ्यों के विखराव या विस्तार अथवा फैलाव का पता लगाते हैं। इस प्रकार से प्रमाणिक विचलन किसी श्रेणी में विभिन्न पदों के समानान्तर मध्यमान से विचलन के वर्गो के योग का वर्गमूल होता है। इसका प्रतीकात्मक स्वरूप (σ) सिगमा भी प्रयोग में लाया जाता है।

मानक त्रुटि :–

साँख्यिकी प्रविधियों की माँपों में कुछ न कुछ त्रुटि पाई जाती है। इस त्रुटि का आधार प्रतिचयन का आकार होता है। प्रतिचयन का आकार यह निश्चित करता है कि त्रुटि कम होगी या अधिक। यानी यदि प्रतिचयन का आकार छोटा होता है तो त्रुटि अधिक होगी और प्रतिचयन का आकार बड़ा होता है तो त्रुटि कम होगी। इस प्रकार की "त्रुटि से हमारा तात्पर्य यह है कि मांप उस मूल्य से कुछ भिन्न होती है जो हम प्रतिचयन, समग्र की यथार्थ माँप से प्राप्त करते हैं।" प्रत्येक प्रतिचयन का गठन एक

मध्यमान

सेवा निवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति अनुसूची



समान पापूलेशन से लिया गया होता है, अतः हम आशा कर सकते हैं कि समस्त् मध्यमान एक समान होंगे। माँपों में त्रुटि का कुछ अंश सदैव प्रवेश कर जाता है, जिस कारण, क्रमिक प्रतिचयनों के मध्यमान एक समान नहीं होते। प्रतिचयन वितरण में इस प्रकार की त्रुटि को "सेम्पलिंग त्रुटि" कहा जाता है। सांख्यिकी विद्वानों ने निदर्शन त्रुटि को ज्ञात करने के लिये कुछ सूत्रों का निर्माण किया है। इनमें से एक सूत्र मानक त्रुटि का है। वह एक ऐसा प्रतिदर्शक है जो न्यादर्श से प्राप्त मध्यमान की विश्वसनीयता का प्राक्कलन करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि सम्भाविता कितनी मात्रा में न्यादर्श, समग्र के मध्यमान के प्रतिनिधिक है। अर्थात् यदि हम न्यादर्श के मध्यमान को समग्र के मध्यमान के समान माने तो त्रुटि की कहाँ तक सम्भावना रहती है।

अध्यापक अभिवृत्ति तथा समस्या तथ्य विश्लेषण :–

शोधकर्ता ने स्वविकसित अध्यापक अभिवृत्ति अनुसूची तथा समस्या अनुसूची के प्रयोग द्वारा तथ्यों का संकलन, प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों जो नगर क्षेत्र, कस्वा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्रों से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, किया है। इसके पश्चात् तथ्य स्कोरिंग तथा वर्गीकरण किया। तत्पश्चात् अध्ययन के उद्देश्यों के परिपेक्ष्य में प्रदत्तों द्वारा साँख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या की गई। अतः प्रत्येक अभिकरण से सम्बन्धित साँख्यिकी विश्लेषण तथा विवरण आगे दिये जा रहे हैं :–

तालिका सं0 4.1

नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवा निवृत्त अध्यापकों की "अभिवृत्ति अनुसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रिटिकल अनुपात" :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटिकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	100	30.84	4.70	0.76	1.4	असार्थक
माध्यमिक	100	30.08	2.8			

तालिका नं0 – 4.1 में प्रस्तुत नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति परिसूची के मूल प्राप्ताकों द्वारा प्राप्त मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटिकल अनुपात को प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि दोनों स्तर के अध्यापकों की समस्यायों के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है। क्योंकि प्राइमरी अध्यापकों का प्राप्त मध्यमान 30.84 है तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों का अभिवृत्ति परिसूची पर मध्यमान प्राप्ताँक 30.08 रहा है। साथ ही इन अध्यापकों का

मध्यमान अन्तर प्राप्ताँक 0.76 अधिक रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राइमरी अध यापकों का सोच सेवानिवृत्त के पश्चात् उत्पन्न समस्याओं के प्रति अधिक सकारात्मक होता है। दोनों समूहों के मध्यमान अन्तरों की सार्थकता के परीक्षण के लिये क्रिटिकल अनुपात (सी0आर0) का प्रयोग किया गया जो 1.4 प्राप्त हुआ है। यह क्रिटीकल अनुपात किसी भी विश्वास स्तर 0.05 या .01 पर सार्थक नहीं रहा है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रायमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति प्राप्ताँकों में साँख्यिकीय दृष्टिकोण से कोई अन्तर नहीं है। निष्कर्ष के तौर पर यह स्पष्ट होता है कि प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों (सेवानिवृत्त) की धनात्मक अभिवृत्ति होती है परन्तु दोनों प्रकार के अध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 4.2

कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति पर प्राप्त मध यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रिटिकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटिकल अनुपात	सार्थकता
प्राईमरी	100	25.06	2.84			
				3.21	8.6	0.01स्तर पर सार्थक
माध्यमिक	100	21.85	2.87			

तालिका नं0 4.2 में कस्बा क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों के अभिवृत्ति प्राप्ताँकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रिटिकल अनुपात प्रस्तुत किया गया है। प्राईमरी सेवानिवृत्त शिक्षकों का मध्यमान प्राप्ताँक 25.06 प्राप्त हुआ है। जबकि माध्यमिक अध्यापकों का मध्यमान प्राप्ताँक 21.85 प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राईमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति सेवानिवृत्ति के प्रति माध्यमिक अध्यापकों की तुलना में अधिक है क्योंकि प्राईमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति 3.21 अधिक रही है। इस अन्तर की सार्थकता के लिये क्रिटिकल अनुपात की गणना शोधकर्ता ने की जो 8. 6 है। यह प्राप्ताँक 0.01 और 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक अध्यापकों की तुलना में प्राईमरी अध्यापकों की सेवानिवृत्ति के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति है।

<u>तालिका संख्या – 4.3</u>

ग्रामीण क्षेत्र के प्राईमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति सूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटिकल अनुपात :

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अंतर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राईमरी	100	34.45	2.86			
				1.15	7.6	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक
माध्यमिक	100	33.30	2.87			

तालिका नं. 4.3 में ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति प्राप्ताँकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रिटिकल अनुपात को प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राईमरी स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों का मध्यमान 34.45 तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का 33.30 रहा है। इससे स्पष्ट होता है की प्राइमरी अध्यापकों की सेवानिवृत्ति के प्रति अभिवृत्ति अधिक है, अपेक्षाकृत माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के। दोनों समूहों के मध्यमानों का अंतर 1.15 आया है जो क्रिटिकल अनुपात 7.6 प्रस्तुत करता है। क्रिटिकल अनुपात का यह मूल्य 0.01 तथा 0.05 विस्वास स्तर पर सार्थक है। अतः शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालता है की प्राइमरी स्तर के अध्यापक अपनी सेवानिवृत्ति के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं, अपेक्षाकृत माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के।

शोधकर्ता ने सर्वप्रथम सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति के मूल प्राप्ताँकों का साँख्यिकी विश्लेषण नगर क्षेत्र के, कस्बा क्षेत्र के, तथा ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर किया है। अतः अब आवश्यक हो जाता है कि प्राइमरी स्तर तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति का साँख्यिकी विश्लेषण यौन आधार पर आँकलित किया जाए ताकि पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति का पता अलग–अलग लग सके और शोध कार्य को विश्वसनीयता प्राप्त हो सके। अतः यौन परिवर्ती का विश्लेषण, अभिवृत्ति को जानने के लिए प्रस्तुत है :–

<u>तालिका सँख्या– 4.4</u>

नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रिटिकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	सँख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अंतर	क्रिटिकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	31.26	4.44			
				0.84	1.0	असार्थक
	50 महिला	30.42	3.97			
माध्यमिक	50 पुरूष	26.36	2.93			
				1.56	2.8	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	27.80	2.66			

तालिका संख्या –4.4 में नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति परिसूची पर एकत्रित किये गये मूल प्राप्ताँकों का विश्लेषण, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात की गणना करके किया गया है। इस तालिका में सर्वप्रथम प्राइमरी पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 31.26 रहा है तथा महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 30.42 रहा है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 0. 84 रहा है जो इनकी अभिवृत्तियों में एक रूपता दर्शाता है। फिर भी शोधकर्ता ने पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर की सार्थकता जानने के लिये क्रांतिक अनुपात (सी. आर.) का आँकलन किया। यह 1.0 आया है। इसके द्वारा प्राइमरी तथा महिला समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का सही पता लग जाता है। क्रांतिक अनुपात 1.0 को 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर देखा तो, पता चला की यह असार्थक है। यानि नगर क्षेत्र के पुरूष तथा महिला सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की अभिवृत्तियों में कोई अन्तर नहीं होता है।

इसके पश्चात् शोधकर्ता ने नगर क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के पुरूष तथा महिला समूहों की अभिवृत्ति के मूल प्राप्ताँकों की साँख्यिकी विश्लेषण की गणना की। माध्यमिक पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 26.36 रहा तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 27.80 रहा। प्रामाणिक विचलन पुरूष का 2.93 तथा महिला का 2.66 रहा। इन

दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 1.56 रहा जो दोनो समूहों मे अभिवृत्ति के अन्तर को बतलाता है। फिर भी गणितीय तरीके का प्रयोग करके "टी" मॉपक के द्वारा अन्तर की सार्थकता को जाना गया। पुरूष तथा महिला समूहों के मध्यमानों का अन्तर 1.56 रहा और क्रांतिक अनुपात 2.80 रहा। यह क्रान्तिक अनुपात अन्तर सार्थकता मूल्य 1. 96 तथा 2.58 से अधिक रहा है। अतः 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर दोनों समूहों की सार्थकता को दर्शाता है। इस आधार पर यह निश्कर्ष निकाला गया की नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

तालिका संख्या– 4.5

कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति प्राप्ताँकों पर आंकलित मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अंतर	क्रिटिकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	31.60	2.95			
				2.08	3.65	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	29.52	2.70			
माध्यमिक	50 पुरूष	22.52	2.50			
				0.88	1.8	असार्थक
	50 महिला	21.64	2.47			

तालिका नं. 4.5 में कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति के, मूल प्राप्ताँकों का साँख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राइमरी अध्यापकों के पुरूषों का मध्यमान 31.60 रहा है, प्रामाणिक विचलन 2.95 रहा है जबकि महिला समूह का मध्यमान 29.52 रहा है और प्रामाणिक विचलन 2.70 रहा है। अतः दोनों के मध्यमानों से अभिवृत्ति का अन्तर स्पष्ट होता है।

दोनों समूहों के अन्तर की सार्थकता जानने के लिये क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। प्रस्तुत 4.5 तालिका में दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 2.08 रहा है। इनका क्रिटिकल अनुपात 3.65 रहा है। यह प्राइमरी के पुरूष तथा महिला समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता दर्शाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि, कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी स्तर के पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

फिर कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्ति माध्यमिक पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति परिसूची के मूल प्राप्ताँकों का साँख्यिकीय विश्लेषण, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रिटिकल अनुपात के माँपकों द्वारा किया गया। इनमें पुरूष समूह का मध्यमान 22.52 तथा महिला समूह का मध्यमान 21.64 रहा है। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 0.88 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरूष तथा महिला माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है। फिर भी इन वर्गो में अभिवृत्ति भिन्नता की स्थिती कितनी है, का सही मूल्याँकन करने के लिये अन्तर की सार्थकता परीक्षण क्रिटीकल अनुपात की गणना करके की। इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 0.88 रहा तथा क्रिटीकल अनुपात 1.8 रहा है। यह क्रिटिकल अनुपात 1.8 न तो 0.01 विश्वास स्तर पर और न 0.05 विश्वास स्तर पर दोनों समूहों की अभिवृत्ति की सार्थकता भिन्नता को दर्शाता है। यानी कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त माध्यमिक पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है।

<u>तालिका संख्या – 4.6</u>

ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति प्राप्ताँकों की गणना मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	24.04	1.95			
				1.46	3.9	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	25.50	1.80			
माध्यमिक	50 पुरूष	24.5	1.72			
				0.4	1.1	असार्थक
	50 महिला	24.1	1.84			

तालिका संख्या – 4.6 में ग्रामीण क्षेत्र के सेवा निवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के पुरूष एवं महिला अध्यापकों के अभिवृत्ति परिवर्ती से सम्बन्धित तथ्यों का साँख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें दोनों के बीच अभिवृत्तियों में अन्तर है, या नहीं जानने के लिये साँख्यिकी के माँपक, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मध्यमान अन्तर, तथा क्रिटीकल अनुपात की गणना की गई है। प्रथमतः ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति जानने के लिये पुरूषों का मध्यमान (24.04) प्रामाणिक विचलन (1.95) तथा महिला समूह का मध्यमान (25.50) प्रामाणिक विचलन (1.80) ज्ञात किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 1.46 रहा। ये मध्यमान अन्तर दोनों समूहों की अभिवृत्तियों के अन्तर को दर्शाता है। फिर भी अन्तर की सार्थकता को स्पष्ट करने के लिये प्राइमरी स्तर के पुरूष तथा महिला समूहों के मध्यमानों का क्रिटीकल अनुपात ज्ञात किया गया, जो 3.9 रहा। यह क्रिटीकल अनुपात 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। अतः शोधकर्ता का यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों में यौन के आधार पर अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

द्वितीयतः ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में अभिवृत्ति के लिये यौन मत अन्तर को जानने का साँख्यिकीय आंकलन किया गया है। इसमें माध्यमिक स्तर के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 24.5, प्रामाणिक विचलन 1.72 रहा है। महिला वर्ग का मध्यमान 24.1 तथा प्रामाणिक विचलन 1.84 रहा है। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 0.4 रहा है जो दोनों समूहों की मनोवृत्ति में अन्तर स्पष्ट नहीं करता है। अतः दोनों समूहों के वर्गो के मध्यमानों की अन्तर सार्थकता को जानने के लिये क्रॉन्तिक अनुपात ज्ञात किया, जो 1.1 रहा है। इसकी सार्थकता, विश्वास स्तर 0.01 तथा 0.05 पर देखने से स्पष्ट होता है कि ये असार्थक है। यानी ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला समूहों में अभिवृत्ति परिवर्ती में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 4.7

नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटीकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	100	21.82	3.48			
				0.49	1.19	असार्थक
माध्यमिक	100	21.33	2.43			

तालिका संख्या 4.7 में नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मूल तथ्यों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, तथा क्रिटीकल अनुपात की गणना प्रस्तुत की गई है। दोनों के मध्यमान अन्तर से स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो के अध्यापकों की समस्यायें सेवानिवृत्ति के बाद समान है। क्योंकि दोनों के मध्यमान, प्राइमरी 21.82 तथा माध्यमिक 21.33 रहा है और दोनों मध्यमान का अन्तर 0.49 आया है। फिर भी सॉंख्यिकीय गणना के आधार पर यह प्राप्त होता है कि प्राइमरी अध्यापक समूह का समस्याओं के प्रति सकारात्मक रूख रहा है। दोनों समूहों के मध्यमान अन्तरों की सार्थकता के परीक्षण के लिये क्रिटीकल अनुपात ज्ञात किया गया जो 1.19 रहा। यह क्रिटीकल अनुपात किसी भी विश्वास स्तर 0.05 या 0.01 पर सार्थक नहीं रहा है। जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि प्राइमरी तथा माध्यमिक समूहों के अध्यापकों की समस्याऐं, सेवानिवृत्ति के बाद अन्तर रखती है। अतः दोनों समूहों के अध्यापकों की समस्यायें सेवानिवृत्ति के बाद समानता रखती है।

<u>तालिका संख्या 4.8</u>

कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटीकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	100	25.36	2.6			
				1.78	3.78	0.01 स्तर पर सार्थक
माध्यमिक	100	23.58	3.92			

तालिका नं0 4.8 में कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रिटीकल अनुपात का ऑंकलन प्रस्तुत किया गया है। सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की समस्यायें अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती है अपेक्षाकृत माध्यमिक अध्यापकों के। इनका मध्यमान 25.36 तथा 23.58 रहा है और प्रामाणिक विचलन 2.6 तथा 3.92 रहा है। कस्वा क्षेत्र के दोनों प्रकार के सेवानिवृत्त अध्यापकों के मध्यमान का अन्तर ज्ञात किया गया। यह अन्तर 1.78 है। इस अन्तर की सार्थकता सॉंख्यिकीय गणना द्वारा प्रमाणित करने के लिये "टी" परीक्षण (क्रिटीकल अनुपात) ज्ञात किया गया जो 3.78 प्राप्त हुआ। यह क्रिटीकल

अनुपात प्राप्ताँक 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक पाया गया। इस विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालता है कि कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी और माध्यमिक अध्यापकों की समस्याओं में अन्तर है।

तालिका संख्या – 4.9

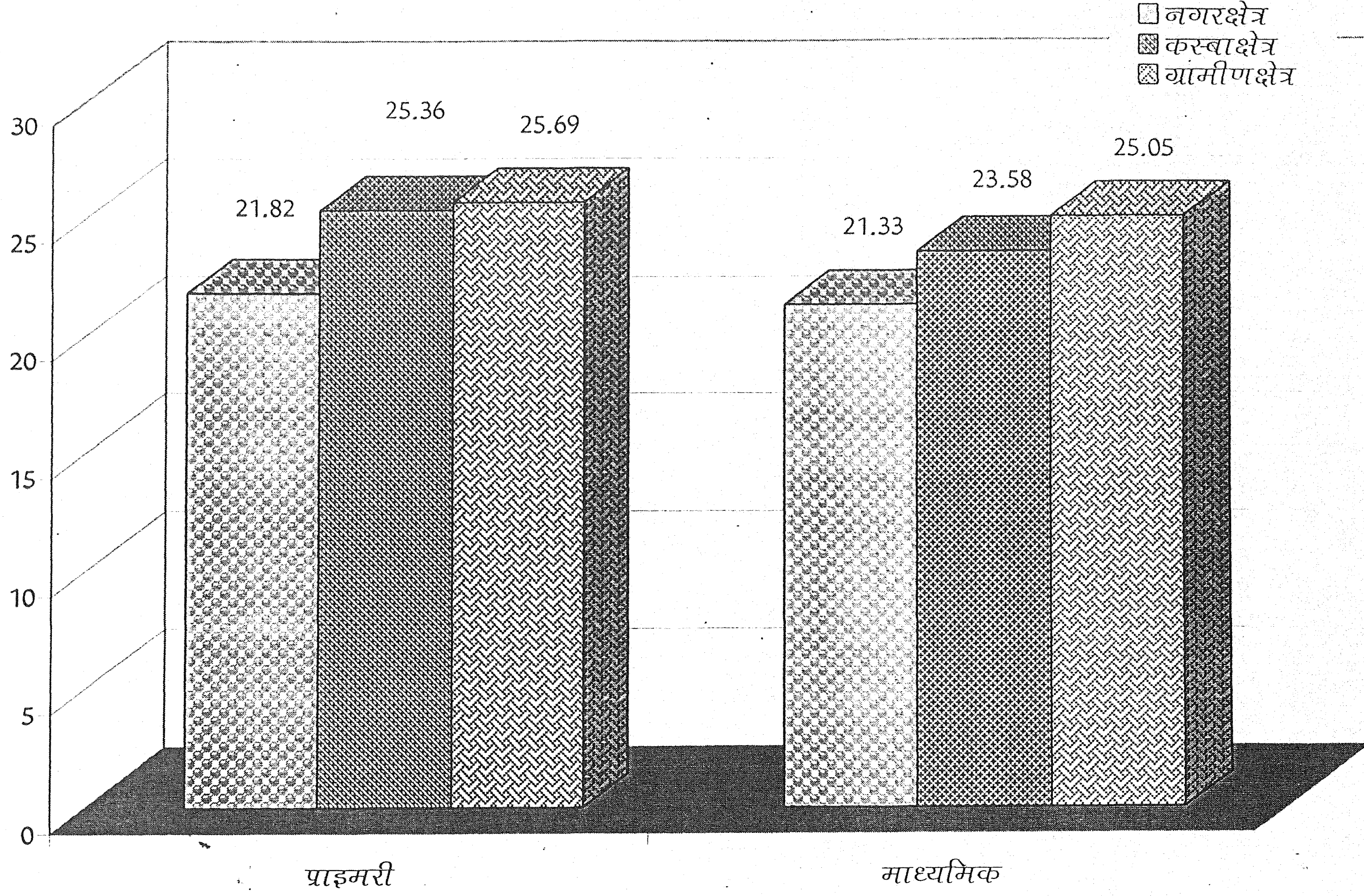
ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक तथा प्राइमरी सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर आँकलित मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रांतिक अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	100	25.69	2.6			
				0.64	1.8	असार्थक
माध्यमिक	100	25.05	2.4			

साँख्यिकी विश्लेषण तालिका 4.9 में ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं किटीकल अनुपात का आँकलन प्रस्तुत किया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त अध्यापकों का मध्यमान 25.69 तथा प्रामाणिक विचलन 2.6 रहा जबकि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का 25.05 तथा प्रामाणिक विचलन 2.4 रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है की प्राइमरी के अध्यापक समस्याओं से अधिक धिरे रहते हैं तुलना में माध्यमिक स्तर के अध्यापको के। इन दोनो समस्याओं में अंतर जानने के लिए शोधकर्ता ने "टी" परीक्षण (किटीकल अनुपात) ज्ञात किया जो 1.8 रहा। प्रस्तुत किटीकल अनुपात प्राप्ताँक 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। अतः इस विश्लेषण से यह निश्कर्ष निकाला गया की प्राइमरी तथा माध्यमिक समूहों के अध्यापकों के सेवानिवृत्त की समस्याओं में समानता अधिक है तथा अंतर नहीं है।

उपर्युक्त तथ्य विश्लेषण में सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की समस्याओं का आँकलन नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के आधार पर किया गया है। अब शोधकर्ता इन्हीं तीनों क्षेत्रों के सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्याओं का विश्लेषण यौनगत भेदों के आधार पर प्रस्तुत करेगा ताकि इनके अंतर की सार्थकता को जान सकें।

मध्यमान


सेवा निवृत्त अध्यापकों की समस्या परसूची
नगरक्षेत्र
कस्बाक्षेत्र
ग्रामीणक्षेत्र
30
25
20
15
10
5
0
21.82
25.36
25.69
21.33
23.58
25.05
प्राइमरी
माध्यमिक

तालिका संख्या – 4.10

नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों (स्त्री–पुरूष) की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटीकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	23.38	3.56			
				2.88	4.17	0.01स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.26	3.31			
माध्यमिक	50 पुरूष	25.48	1.7			
				2.40	4.9	0.01स्तर पर सार्थक
	50 महिला	27.88	2.99			

तालिका नं. 4.10 में नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापक स्तर के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की समस्याओं से संबंधित मूल प्राप्ताँकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं "टी" परिक्षण आदि का आँकलन किया गया। इसमें प्राइमरी स्तर के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 23.38 तथा महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 26.26 रहा। इनमें महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 2.88 अधिक पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राइमरी स्तर की सेवानिवृत्त महिलाओं मे समस्याओं का प्रभाव अधिक होता है अपेक्षाकृत पुरूष वर्ग के। प्राइमरी स्तर की महिला तथा पुरूष वर्ग के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के परिक्षण के लिए क्रिटीकल अनुपात की गणना की गई जो 4.17 आया है। यह क्रिटीकल अनुपात 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। अतः निश्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है की सेवानिवृत्त प्राइमरी (नगर क्षेत्र) पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं में अंतर है।

इसके पश्चात् शोधकर्ता ने नगर क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के पुरूष

तथा महिला अध्यापकों के मूल प्राप्ताँकों का साँख्यिकी विश्लेषण, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रिटीकल अनुपात की गणना करके किया। इससे पुरूष वर्ग का मध्यमान 25.48 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 27.88 रहा है। इससे यह पता चलता है की महिला वर्ग समस्याओं से अधिक ग्रसित है। इन वर्गों की भिन्नता को जानने के लिये क्रिटीकल अनुपात की गणना की, जो 4.9 आया। यह क्रिटीकल अनुपात0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। अतः यह स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है की नगर क्षेत्र के पुरूष तथा महिला माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की समस्याओं में अंतर होता है।

शोधकर्ता, तालिका संख्या 4.10 के साँख्यिकी विश्लेषण को देखने से इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक (पुरूष–महिला) अध्यापकों की समस्याओं में अन्तर है। अतः सेवानिवृत्ति के बाद समस्याऐं, प्राइमरी तथा माध्यमिक दोनों ही स्तरोंकी महिला अध्यापकों में पुरूषों की तुलना में अधिक रही है।

<u>तालिका संख्या 4.11</u>

कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष – स्त्री अध्यापकों की समस्या परिसूची पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रिटीकल अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	25.20	2.11			
				1.32	3.0	0.01 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.52	2.32			
माध्यमिक	50 पुरूष	23.28	1.8			
				0.06	1.05	असार्थक
	50 महिला	23.88	3.7			

तालिका संख्या 4.11 में कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का साँख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसमें प्राइमरी अध्यापकों (पुरूष –

महिला) की समस्याओं में भिन्नता देखने की मिली है। जबकि माध्यमिक स्तर के पुरूष–महिला अध्यापकों में समस्याओं से सम्बन्धित समानता स्थापित हुई है।

कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी स्तर के पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 25.20 रहा है। जबकि महिला अध्यापकों का 26.52 रहा है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 1.32 आया है। पुरूष तथा महिला अध्यापकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण के लिये क्रिटीकल अनुपात की गणना की गई जो 3.0 आया है। यह क्रिटीकल अनुपात 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। इस तरह से निष्कर्ष निकलता है कि कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं में अन्तर है।

तालिका संख्या 4.11 में कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों के समस्या प्राप्तांकों का सॉंख्यिकी विश्लेषण मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना करके किया गया। इसमें पुरूष वर्ग का मध्यमान 23.28 और महिला वर्ग का मध्यमान 23.88 रहा है। इनके मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण के लिये क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया जो 1.05 रहा है। यह क्रांतिक अनुपात 0.01 तथा 0.05 किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं आया है। अतः सॉंख्यिकी विश्लेषण से सिद्ध होता है कि कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्याओं में समानता अधिक होती है, भिन्नता नहीं।

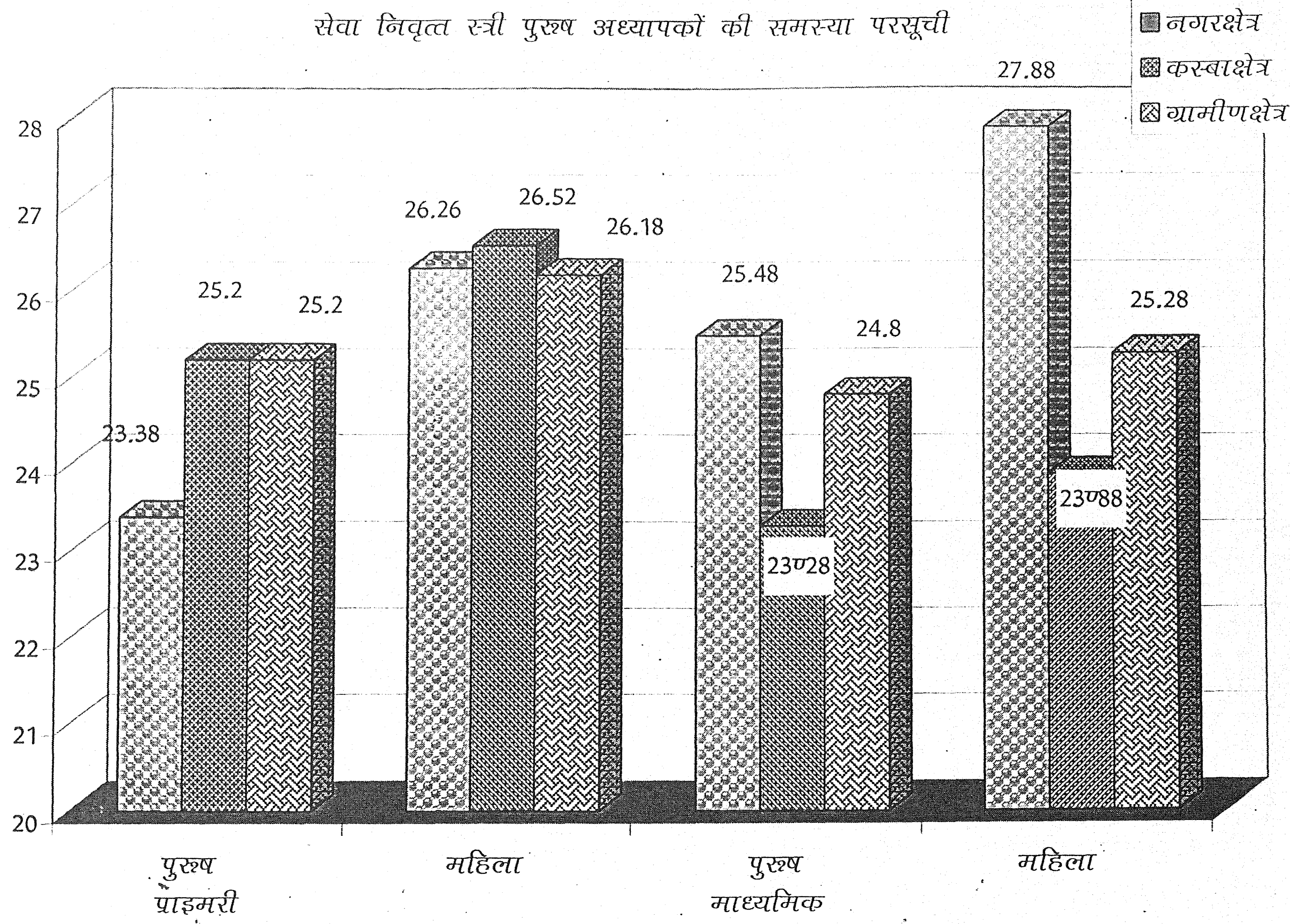
तालिका संख्या 4.12

ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त पुरूष तथा स्त्री अध्यापकों की समस्याओं के प्राप्ताँकों पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात :–

अध्यापक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान अन्तर	क्रिटीकल अनुपात	सार्थकता
प्राइमरी	50 पुरूष	25.20	2.34			
				0.98	2.04	0.05 स्तर पर सार्थक
	50 महिला	26.18	2.45			
माध्यमिक	50 पुरूष	24.80	2.08			
				0.48	1.3	असार्थक
	50 महिला	25.28	1.6			

तालिका संख्या 4.12 में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से सेवानिवृत्त होने वाले पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का सॉंख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इनको देखने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र के दोनों

मध्यमान



सेवा निवृत्त स्त्री पुरुष अध्यापकों की समस्या परसूची
नगरक्षेत्र
कस्बाक्षेत्र
ग्रामीणक्षेत्र
28
27
26
25
24
23
22
21
20
23.38
25.2
25.2
26.26
26.52
26.18
25.48
23०28
24.8
27.88
23०88
25.28
पुरुष
प्राइमरी
महिला
पुरुष
माध्यमिक
महिला

ही अध्यापक समूहों में प्राइमरी स्तर पर अपनी – अपनी समस्याओं में अन्तर रखते हैं, लेकिन माध्यमिक स्तर पर यह अन्तर स्पष्ट नहीं हुआ है। शोधकर्ता ने प्राइमरी स्तर के पुरूष–महिला समूहों की समस्या परिसूची के मूल प्राप्ताँकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना साँख्यिकी आधार पर की है। इसमें पुरूषों का मध्यमान 25.20 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 26.18 रहा है। इनका अन्तर 0.98 है जिसका आँकलित क्रान्तिक अनुपात 2.04 रहा है। जो विश्वास स्तर 0.05 पर सार्थक रहा है। इस क्रान्तिक अनुपात से स्पष्ट होता है कि पुरूष तथा महिला प्राइमरी अध यापकों की समस्याओं में अन्तर होता है।

इसी प्रकार से शोधकर्ता ने ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से सेवानिवृत्ति प्राप्त पुरूष–महिला अध्यापकों की समस्याओं के मूल प्राप्ताँकों का साँख्यिकी विश्लेषण किया। जिसमें पुरूष वर्ग का मध्यमान 24.80 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 25.28 रहा। इन दोनों मध्यमानों की अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो 1.3 रहा। यह क्रान्तिर अनुपात 0.01 तथा 0.05 किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं रहा है। अतः निषकर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त पुरूष–स्त्री अध्यापकों की समस्याओं में कोई भी अन्तर नहीं है, बल्कि समानता अधिक है।

किसी शोध का परिणाम् तब तक सार्थक नहीं होता है जब तक कि शोध में उपयोग किये गये परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध का आँकलन न किया जाये। अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या के परिवर्ती अभिवृत्ति तथा समस्याओं के बीच सह सम्बन्ध की गणना करके तथ्यों का निम्न प्रकार से विश्लेषण प्रस्तुत किया :–

तालिका संख्या 4.13

सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति परिसूची एवं समस्या परिसूची पर प्राप्त सह:सम्बन्ध तालिका :–

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	– 0.067	– 0.052
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.367	+ 0.378
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.137	+ 0.31

तालिका संख्या 4.13 में सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं समस्याओं के बीच प्राप्त समंकों के आधार पर नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र, नगर क्षेत्र एवं

कस्बा क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र के बीच अलग–अलग सह सम्बन्ध गुणाँक मान प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों वर्गों के नगर तथा कस्बा क्षेत्र के अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं समस्याओं के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध है। यह सह सम्बन्ध प्राइमरी अध्यापकों का + 0.367 तथा माध्यमिक अध्यापकों का + 0. 378 सार्थक है। इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी अध्यापकों का सह सम्बन्ध + 0.137 एवं + 0.31 रहा है। इन दोनों प्रकार के अध्यापकों पर समान वातावरण का प्रभाव सार्थक रूप से परिलक्षित होता है। क्योंकि ग्रामीण परिवेश से ही कस्बा क्षेत्र का विकास एवं गठन होता है। तालिका में नगर क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों के बीच सह सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ है। अतः इनका सह सम्बन्ध गुणाँक मान – 0.067 तथा – 0.052 रहा है। इसका मुख्य कारण परिवेश की असमानता में बृद्धि हो सकती है। अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का सार्थक सह सम्बन्ध नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त अध्यापकों के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध होता है, परन्तु नगर क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों के बीच कोई सह सम्बन्ध नहीं होता है।

<u>तालिका संख्या 4.14</u>

सेवानिवृत्ति अध्यापकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं एवं अभिवृत्ति के बीच सह सम्बन्ध ा गुणाँक प्रगट तालिका :–

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	+ 0.167	+ 0.133
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.091	+ 0.178
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	– 0.43	+ 0.265

प्रस्तुत तालिका में सह सम्बन्ध गुणाँक मान नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र, नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र आदि के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं एवं अभिवृत्ति के बीच प्रदर्शित किया गया है। नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध रहा है। सह सम्बन्ध मूल्य प्राइमरी अध्यापक (+ 0.167) तथा माध्यमिक अध्यापकों का (+ 0.133) रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक सोच सेवानिवृत्त अध्यापकों को समस्या समाधान में सहयोग करती है। इसी के साथ ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान

(– 0.43) रहा है जो अभिवृत्ति के साथ मनोवैज्ञानिक समस्याओं का ऋणात्मक सह सम्बन्ध प्रगट करता है। लेकिन माध्यमिक अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान (+ 0.265) रहा है। जो उनकी अभिवृत्ति एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध प्रगट करता है। नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त अध्यापकों (प्राइमरी तथा माध्यमिक) का सह संबंध गुणाँक मान (+ 0.091 तथा +0.178) रहा है। यह संबंध अभिवृत्ति एवं मनोवैज्ञानिक समस्या के साथ सार्थकता स्पष्ट करता है। इस प्रकार से शोधकर्ता इस निश्कर्ष पर पहुँचता है कि अध्यापक अभिवृत्ति का तनोवैज्ञानिक समस्या के साथ धनात्मक संबंध होता है, चाहे वह प्राइमरी स्तर का शिक्षक हो या माध्यमिक स्तर का हो, चाहे वह नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र या ग्रामीण क्षेत्र का हो। क्यों की सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों में ग्रामीण एवं कस्बा क्षेत्र में ही सह संबंध ऋणात्मक आया है और अन्य क्षेत्रों में धनात्मक रहा है।

<u>तालिका संख्या – 4.15</u>

सेवानिवृत्त अध्यापकों की शारीरिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह–संबंध गुणाँक प्रगट तालिका –

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	–0.028	– 0.093
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	–0.097	– 0.084
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	–0.432	– 0.026

प्रस्तुत तालिका में सेवानिवृत्त प्राइमरी एवं माध्यमिक अध्यापकों की शारीरिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह संबंध गुणाँक मान प्रस्तुत किया गया है। इसमें नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र, नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र आदि, निकायों से सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों का सह संबंध गुणाँक मान ऋणात्मक रहा है। इसमें –0.028 , –0.097 , –0.432 आदि मान अध्यापकों के शारीरिक समस्या तथा अभिवृत्ति के बीच नकारात्मक संबंध को स्पष्ट करते हैं। क्योंकि शारीरिक समस्याये उनकी आयु, दैनिक चर्या, खान–पान तथा सामाजिकता पर निर्भर करती है। ये सभी चीजें प्रत्येक व्यक्ति की अपनी भूमिका पर निर्भर करती है। इसी तरह से माध्यमिक स्तर पर (– 0.093 , – 0.084, – 0.026) आदि सह संबंध मान बतलाते हैं की अभिवृत्ति और शारीरिक समस्याओं के मध्य नाकारात्मक संबंध होता है। शारीरिक, समस्याये प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरों पर समान रूप से ही पाई जाती है।इसमें नगर क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र किसी का धनात्मक प्रभाव नहीं होता है।

तालिका संख्या –4.16

सेवानिवृत्त अध्यापकों की आर्थिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह संबंध गुणाँक प्रगट तालिका :–

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	+ 0.248	+ 0.431
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.052	+ 0.182
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.035	+ 0.073

प्रस्तुत तालिका में सेवानिवृत्त प्राइमरी एवं माध्यमिक अध्यापकों की आर्थिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह सम्बन्ध गुणाँक मान प्रस्तुत किया गया है। इसमें नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों का , नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र अध्यापकों का तथा ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान, धनात्क रहा है। यानी प्राइमरी स्तर तथा माध्यमिक स्तर के सभी सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं आर्थिक समस्या का सम्बन्ध सार्थक रहा है। यानी वर्तमान भौतिक वादी युग में सरकार ने सेवानिवृत्त शिक्षकों को पेन्शन, फण्ड और बीमाओं के द्वारा धन देकर आर्थिक असुरक्षा की समस्या से निजात दिलबाई है। अतः नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान + 0.248 तथा माध्यमिक का + 0.431 रहा है। नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र का सह सम्बन्ध गुणाँक मान + 0.052 तथा + 0.182 रहा है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र का सह सम्बन्ध गुणाँक प्राइमरी अध्यापकों का +0.035 तथा माध्यमिक का + 0.073 रहा है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा आर्थिक समस्या के बीच सार्थक प्रभाव स्थापित होता है।

तालिका संख्या 4.17

सेवानिवृत्त अध्यापकों की सामाजिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह – सम्बन्ध गुणाँक :–

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	+ 0.061	+ 0.135
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.089	– 0.158
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	+ 0.097	+ 0.025

तालिका संख्या 4.17 में विभिन्न निकायों से अवकाश प्राप्त प्राइमरी तथा माध्यमिक

अध्यापकों की सामाजिक समस्या एवं अभिवृत्ति के बीच सह सम्बन्ध गुणाँक मान का आँकलन प्रस्तुत किया गया है। इस गणना में माध्यमिक स्तर के नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र के अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान (– 0.158) ऋणात्मक रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि इन निकायों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का सामाजिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच कोई सम्बन्ध नहीं होता है। क्योंकि सामाजिकता व्यक्ति की शिक्षा और वातावरण से प्रभावित रहती है। अतः आत्मनिर्भरता और व्यवहार कुशलता उसकी अभिवृत्ति को प्रभावित करती है। इसके अलावा अन्य निकायों के प्राइमरी अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान + 0.061, + 0.089, + 0.097 आदि रहा है। जो अभिवृत्ति के साथ सामाजिक समस्या का सम्बन्ध धनात्मक प्रगट करते हैं। इसी के साथ माध्यमिक स्तर के विभिन्न निकायों के अध्यापकों की अभिवृत्ति और सामाजिक समस्या, के बीच सह सम्बन्ध गुणाँक (+ 0.135, +0.025) रहा है। अतः स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति उनकी सामाजिक समस्याओं पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

तालिका संख्या 4.18

तालिका संख्या 4.18 में सेवानिवृत्त अध्यापकों की साँस्कृतिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच स्थापित सह सम्बन्ध गुणाँक मान का प्रदर्शन :–

विभिन्न निकाय	प्राइमरी अध्यापक	माध्यमिक अध्यापक
नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र	– 0.035	+ 0.214
नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	– 0.012	– 0.038
ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र	– 0.075	– 0.081

प्रस्तुत तालिका संख्या 4.18 में विभिन्न निकायों के बीच प्राइमरी अध्यापक और माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं साँस्कृतिक समस्या के बीच सह–सम्बन्ध गुणाँक मान को प्रस्तुत किया गया है। इसमें एक को छोड़ कर सभी का सह–सम्बन्ध गुणाँक ऋणात्कम रहा है। नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र, नगर क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र एवं कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं साँस्कृतिक समस्या के बीच सह–सम्बन्ध गुणाँक मान – 0.035, – 0.012, – 0.075 आदि रहा है। इसी प्रकार से माध्यमिक अध्यापकों का सह सम्बन्ध गुणाँक मान + 0.214, – 0. 038, –0.081 आदि रहा है। इसके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि साँस्कृतिक समस्या और अभिवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव सिर्फ नगर क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों (+ 0.214)पर परिलक्षित होता है ! क्योंकि इनका उद्देश्य भौतिकवादी, सॉस्कृतिक

मूल्यों के साथ समझौता करके जीवन को सुखी बनाना और सेवानिवृत्ति के समय को शान्तपूर्ण तरीके से ब्यतीत करना ही उचित है ! इसके अलावा सभी निकायों के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों का सम्बन्ध ऋणात्मक रहा है ! जो इनकी उच्छॅृखलता को प्रगट करते है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग वर्तमान की संस्कृति (उपभोक्तावादी) को आत्मसात नहीं कर पाते हैं और न उपयुक्त समायोजन ही कर पाते हैं। अतः मानसिक स्तर पर तनावयुक्त, तथा चिन्तायुक्त रहकर जीवन के प्रति निराशा प्रगट करते रहते हैं।

<u>तालिका संख्या 4.19</u>

विभिन्न निकायों के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की समस्याओं के प्रतिशत प्रगट करती तालिका :–

निकाय / समस्यायें	नगर क्षेत्र	कस्बा क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र
मनोवैज्ञानिक	46	45.5	44
शारीरिक	32	39	40
आर्थिक	14	11	10
सामाजिक	07	03	04
सॉंस्कृतिक	01	1.5	02

तालिका संख्या 4.19 में विभिन्न निकाय – नगर, कस्बा तथा ग्रामीण आदि के प्राइमरी स्तर के सभी सेवानिवृत्त अध्यापकों को प्रभावित करने वाली समस्याओं का प्रतिशत प्रस्तुत किया गया है। प्रतिशत के द्वारा शोधकर्ता यह प्रगट करना चाहता है कि प्रत्येक समस्या का विस्तार कितना है और निश्चित न्यादर्श के अध्यापक तथा अध्यापिकाऐं कितने प्रतिशत समस्या से ग्रसित हैं। तालिका से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक प्रभावशाली समस्या मनोवैज्ञानिक है और सबसे कम प्रभावशाली सॉंस्कृतिक समस्या। यही विस्तार नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि निकायों में समान रूप से ज्ञात हुआ है। आज का अध्यापक मानसिक रूप से अधिक परेशान दिखलाई दे रहा है, अपेक्षाकृत शारीरिक रूप के।

नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की समस्या प्रतिशत मनोवैज्ञानिक 46 प्रतिशत, शारीरिक समस्या 32 प्रतिशत आर्थिक समस्या 14 प्रतिशत, सामाजिक समस्या 07 प्रतिशत, और सॉंस्कृतिक समस्या 01 प्रतिशत रही है। इससे शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सेवानिवृत्त अध्यापकों का मानसिक धरातल का सोच

सकारात्मक नहीं रहता है। ऐसा देखने को मिलता है कि जो अध्यापक परिवार प्रत्येक प्रकार से खुशहाल होते हैं, फिर भी उनका सेवानिवृत्त वरिष्ठ सदस्य मनोवैज्ञानिक समस्याओं से अधिक ग्रसित होता है। इनमें कुछ शंकायें, भय, डिपरेशन, आत्मसम्मान के प्रति अति जागरूकता और मूल्यों के प्रति चिन्ता आदि समस्यायें प्रमुख होती हैं।

कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की समस्याओं का प्रतिशत मनोवैज्ञानिक समस्या 45.5 प्रतिशत, शारीरिक समस्या 39 प्रतिशत, आर्थिक समस्या 11 प्रतिशत, सामाजिक समस्या 03 प्रतिशत, साँस्कृतिक समस्या 1.5 प्रतिशत रहा है। इसमें सेवानिवृत्त अध्यापकों की संख्या मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक समस्या में सबसे अधिक रही है, बल्कि मनोवैज्ञानिक और शारीरिक समस्या में अन्तर भी कम है। इससे स्पष्ट होता है कि आज का अध्यापक मानसिक संतुलन स्थापित करने में असमर्थ है। अतः उसमें शारीरिक अक्षमता भी प्रारम्भ हो जाती है। भले ही, ये लोग शारीरिक रोगों से दूर रहें, लेकिन मानसिक रोगों के शिकार हो जाते है। ये रोग मनोवैज्ञानिक व शारीरिक समस्याओं को पैदा करते है और खुशहाल जीवन को तनावग्रस्त बना लेते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापकों की संख्या का प्रतिशत मनोवैज्ञानिक समस्या 44 प्रतिशत, शारीरिक समस्या 40 प्रतिशत, आर्थिक समस्या 10 प्रतिशत, सामाजिक समस्या 04 प्रतिशत और साँस्कृतिक समस्या 02 प्रतिशत रही है। इसमें मनोवैज्ञानिक और शारीरिक समस्याओं से ग्रसित सबसे अधिक सेवानिवृत्त प्राइमरी अध्यापक पाये गये हैं। शोधकर्ता को ऐसा प्रतीत होता है कि सेवानिवृत्त अध्यापक "पीढ़ी अन्तर " के शिकार हैं। वे स्वंय को नवीन परिवर्तनों के अनुकूल समायोजित नहीं कर पा रहे हैं। आज की पीढ़ी पर भौतिकवादी सभ्यता का प्रभाव है, जो उनको स्वतन्त्र जीवन जीने को बाध्य करती है। परिणाम् स्वरूप उनके वरिष्ठ सदस्य मानसिक रूप से परेशान होते हैं और शारीरिक रोगी भी बन जाते हैं।

तालिका संख्या 4.20

विभिन्न निकायों के सेवानिवृत्त माध्यमिक अध्यापकों की समस्याओं के प्रतिशत प्रगट करती तालिका :–

निकाय / समस्यायें	नगर क्षेत्र	कस्बा क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र
मनोवैज्ञानिक	50	49.5	48
शारीरिक	40	39	42.5
आर्थिक	6	7	5.5
सामाजिक	2.5	2	3
साँस्कृतिक	1.5	2.5	1

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रसित सेवानिवृत्त माध्यमिक अध्यापक वर्ग है। इनके नगर क्षेत्र 50 प्रतिशत, कस्बा क्षेत्र 49.5 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक 48 प्रतिशत रहे हैं। यानी आधे अध्यापक सिर्फ मनोवैज्ञानिक समस्या से पीड़ित रहते हैं, जिसका कोई भी उपाय आसान नहीं होता है। इसके साथ ही शारीरिक समस्या 40 प्रतिशत, 39 प्रतिशत, 42.5 प्रतिशत रही है। इससे यह प्रगट होता है कि माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की शारीरिक बीमारियों साइकोसिस और साइकोन्यूरोसिस के रूप में होती है जो उनके सेवानिवृत्त जीवन को ख़ुशहाल बनाने से रोकती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक समस्या 6 प्रतिशत , 7 प्रतिशत, 5.5 प्रतिशत रही है। सामाजिक समस्या 2.5 प्रतिशत, 2 प्रतिशत, 3 प्रतिशत आदि में रही है। साँस्कृतिक समस्या 1.5 प्रतिशत, 2.5 प्रतिशत और। प्रतिशत आदि रही है। आज की भौतिक वादी संस्कृति और वातावरण में प्रत्येक सेवानिवृत्त व्यक्ति (अध्यापक) को सबसे अधिक आर्थिक समस्या परेशान करती है। लेकिन प्रस्तुत प्रतिशत तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्यापक के वेतन, पैन्शन, फण्ड, बीमा आदि से सेवानिवृत्त पर मिलने वाला धन उनको खुशहाल बनाने में सहायक होता है। अतः "अर्थ" से जुड़ी समस्यायें न्यूनतम स्थान रखती हैं। इनके स्थान पर मनोवैज्ञानिक समस्या खाली समय का सद्उपयोग न करना, समायोजन न होना, सम्मान का अभाव, क्रियाशीलता का अभाव, रक्तचाप, मधुमेह, उत्साह–विषाद, स्वनियन्त्रण का अभाव, काल्पनिक भय और जीवन की असुरक्षा आदि अनेक मानसिक कारण होते हैं जो उनके जीवन को सुखमय बनाने से रोकते हैं। इनके दुष्परिणाम् के रूप में शारीरिक रोग उनको घेर लेते हैं। शोधकर्ता ने अपने पिता के मित्रों से साक्षात्कार करके मनोवैज्ञानिक समस्याओं का दुष्प्रभाव कितना प्रभावशाली होता है, जानने की कोशिश की है।

सेवानिवृत्त अध्यापक अभिवृत्ति की व्याख्या :–

प्रस्तुत शोधकार्य सेवानिवृत्त अध्यापक और अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति तथा समस्याओं को जानने के लिये किया गया है। इसके तथ्यों के विश्लेषण से रोचक तथ्य प्रगट हुये हैं। जिनकी व्याख्या प्रस्तुत है :–

1 – तालिका संख्या 4.1 में शोधकर्ता ने नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक पुरूष तथा महिला सभी की अभिवृत्ति का साँख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसमें शोधकर्ता ने यह जानने की कोशिश की है कि सेवानिवृत्त प्राइमरी और माध्यमिक अध्यापक अपने प्रति कैसी अभिवृत्ति रखते हैं। मूलतः अध्यापक की प्रकृति एक जैसी ही होती है। वह अपने संकलित व्यक्तित्व (अध्यापक) का विकास अध्यापक प्रशिक्षण के द्वारा करता है (अशोक 1993) यही शिक्षक प्रशिक्षण उसमें अध्यापन के प्रति लगन तथा अभिवृत्ति का विकास भी करते, जो उसे भविष्य का सफल अध्यापक बनाते हैं। यही आदर्श उसे जीवन भर अन्य व्यक्तियों से भिन्नता स्थापित करने में मदद करता है। इस हेतु "टी" मूल्य को ज्ञात किया जो 1.4 प्राप्त हुआ। यह मूल्य 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं रहा। अतः स्पष्ट होता है कि अध्यापक किसी भी स्तर का हो वह मूलरूप से यानी सिद्धान्ततः एक ही आधार पर खड़ा होता है। अन्तर सिर्फ बच्चों की आयु, वातावरण और लक्ष्य का होता है।

2 – तालिका संख्या 4.2 में कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण से सेवानिवृत्त होने वाले पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया गया है। इसमें प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के (100 + 100) अध्यापकों का सामूहिक क्रान्तिक अनुपात 8.6 रहा है। जो 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राइमरी स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति निर्माण और माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति निर्माण एवं विकास में अन्तर होता है। इसका कारण कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का शिक्षा स्तर सामाजिक, आर्थिक, स्तर तथा अन्य बड़े शहरों का रहना तथा अच्छे विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करना आदि हो सकता है। इसका समर्थन पाण्डेय, सर्वानंद (1988) ने भी अपने शोधकार्य से किया है। आज अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों की पवित्रता, परिश्रम तथा समर्पण आदि में काफी अविश्वसनीयता आ चुकी है। परिणाम् स्परूप ऐसे केन्द्रों से आये शिक्षक स्वयं के साथ और शिक्षण के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं। चूँकि प्राइमरी शिक्षा का शैक्षिक स्तर कम होता है, उसका क्षेत्र वही होता है जो ग्रामीण क्षेत्र से लगा होता है, तथा उसके पास ज्ञान पाने के साधनों का आभाव होता है। इन हालात में वह अपनी अभिवृत्ति का निर्माण

एवं विकास परिस्थिति जन्य साधनों के सहारे ही करता है। अतः उसकी धारणां शिक्षा के प्रति,स्वयं के प्रति, समाज के प्रति, तथा राष्ट्र के प्रति संकुचित रूप धारण कर लेती है, जिसका प्रभाव जीवन भर उस पर पड़ता है और वह उसी को स्थायी मान कर (मापदण्ड) प्रत्येक प्रकार के निर्णय करता है।

3– तालिका संख्या 4.3 में ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित प्राइमरी तथा माध्यमिक विधालयों से सेवानिवृत्ति प्राप्त अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें विभिन्नता जानने के लिए कांतिक अनुपात ज्ञात किया गया जो, 7.6प्राप्त हुआ। यह 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्थापित करता है। यानि ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति में अंतर पाया जाता है। इसके पीछे मूल कारण उनकी सोच, परिवार का स्तर तथा जहाँ के वे रहने वाले हैं उन स्थानों के पर्यावरण का प्राभाव मात्र होता है। इनके मध्यमानों से स्पष्ट होता है कि प्राइमरी स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापक अपनी अभिवृत्ति में अधिक सकारात्मक रखते हैं। परिणाम् स्वरूप उनका समायोजन भी सामान्य रूप से अच्छा रहता है। प्राइमरी स्तर के अध्यापकों का चयन और नियुक्ति ग्रामीण क्षेत्रों के लिये अधिकांश ग्रामीण प्रत्याशियों की ही होती है क्योकि शहर या कस्बा वाले अपनी सुविधाओं के आभाव के कारण ग्रामों में रह नहीं पाते है। इसका एक मुख्य कारण उपयुक्त वातावरण का न मिलना भी होता है। इसी प्रकार का निष्कर्ष कल्पना (1990) ने भी अपने शोधकार्य में ज्ञात किये हैं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापक अधिकतर कस्बों या नगरों के शिक्षित तथा उच्च्व परिवारों के हैं। अतः वे अपनी मानसिकता, सोच, धारणां और अभिवृत्ति को ग्रामीण स्तर के समान नहीं बना पाते हैं।साक्षात्कार के दौरान देखा गया है की इनमें समायोजन का आभाव रहा है। ये लोग शिक्षण के प्रति सर्मपित प्रतीत नहीं होते हैं और न स्वयं को संतुष्ट कर पाते हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की मनोवृत्ति में अंतर होता है।

4– तालिका संख्या 4.4 में नगर क्षेत्र के प्राइमरी स्तर के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण किया गया है। इनका मध्यमान लगभग समान ही आया है। कांतिक अनुपात 1.0 से स्पष्ट होता है कि यह अंतर सार्थक नहीं है। इसका मुख्य कारण नगर क्षेत्र की साधन संपन्नता तथा शिक्षत परिवारों का वातावरण आदि हो सकते हैं। अध्यापक के स्तर का प्रश्न नहीं होता है, प्रश्न होता है

अध्यापक की संतुष्टि। एक अध्यापक जो करना चाहता है उसे समझने वाले हों, उसके कार्य का साकारात्मक परिणाम् निकलें ताकि उसे आत्मसंतोष मिल सके। इस लिये अध्यापक अभिवृत्ति में यौन भिन्नता प्राइमरी स्तर पर प्रगट नहीं हो पाई है।

इसी तालिका मं नगर क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों कि अभिवृत्ति का तथ्य विश्लेषण प्रगट किया गया है। इन दोनों में क्रांतिक अनुपात 2.8 रहा है जो 0.01 विश्वास स्तर पर भिन्नता की सार्थकता कों प्रगट करता है। नगर क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के पुरूष–महिला अध्यापकों की शिक्षा–दीक्षा तथा साधन संपन्नता समान होती है। फिर भी महिलाओं का व्यवसाय के प्रति लगाव और परिश्रम करने की क्षमता पुरूष से अधिक प्रभावी रही है, जिसने महिलाओं की कर्तव्यनिष्ठा को बढ़ावा दिया और अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की। अतः प्रस्तुत तालिका 4.4 में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति में यौन भिन्नता के आधार पर अंतर स्पष्ट हुआ है।

5– तालिका संख्या 4.5 में कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति को यौन भिन्नता के आधार पर आँकलित किया गया है। इसमें पुरूष तथा महिला सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण "क्रांतिक अनुपात "के द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसमें प्राइमरी पुरूष तथा महिला अध्यापको के बीच सार्थक अंतर आया है। इसका मुख्य कारण प्राथमिक स्तर के पुरूष अध्यापको में नेतागीरी, कार्य के प्रति उदासीनता तथा अन्य सहायक कार्यों को करते रहना है, जबकि महिला अध्यापक अपने शिक्षण को मन लगाकर करती है, बच्चों में अपने वात्सल्य को देखतीं हैं और उनका विकास मन लगाकर करतीं हैं। वर्तमान में प्राइमरी शिक्षा के अध्यापकों और प्रशासन के द्वारा की जाने वाली अवहेलना ही अपव्यय और अवरोधन का कारण बन रही है। अतः कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में अंतर होना स्वभाविक हो जाता है।

इसी तारतम्य में कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के पुरूष तथा महिला अध्यापकों में अभिवृत्ति परिवर्ती में कोई भी अंतर देखने को नहीं मिला है। शोधकर्ता ने " क्रांतिक अनुपात " ज्ञात किया तो पाया की 1.8 मूल्य रहा है। ये न तो 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक रहा है। इसका मुख्य कारण इस स्तर के अध्यापकों में शिक्षण मूल्य, आर्दश और कर्त्तव्य निष्ठा आदि मानव तथा शिक्षक गुणों का विकास होना हो सकता है। जब एक शिक्षक में इन गुणों का विकास हो जाता है तो

वह अपने कार्य के प्रति सर्मपण प्रगट करता है, जो उसके व्यवसायिक व्यक्तित्व में सकारात्मक सोच और राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरूकता विकसित करता हैं। परिणाम स्वरूप पुरूष तााि महिला सेवानिवृत्त माध्यमिक स्तर के अध्यापको की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है।

6— तालिका संख्या 4.6 में ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के पुरूष तथा महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिनके निष्कर्षों की व्याख्या प्रस्तुत है। ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी अध्यापक महिला तथा पुरूषों की अभिवृत्ति में अंतर स्पष्ट हुआ है। इसका मुख्य कारण अध्यापकीय गुणों का विकास करना और विकास न करना ही है। दोनों के मध्यमानों से स्पष्ट होता है कि महिला अध्यापकों ने अपनी अभिवृत्ति को सेवानिवृत्ति के प्रति अधिक सकारात्मक बना रखा है जबकि पुरूष अध्यापकों ने कम। तथ्य संकलन के दौरान शोधकर्ता ने पाया कि पुरूष अध्यापक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट नहीं, जबकि महिला वर्ग उसी कार्य को विश्वास तथा रूची के साथ कर रही होती हैं। ऐसा प्रतीत भी हुआ की पुरूष वर्ग शिक्षक बनना नहीं चाहता, लेकिन बनना पड़ा। ये भाव भी उनकी अभिवृत्ति में नकारात्मक सोच बनाते हैं, जिससे उनका समायोजन, संतुष्टि अपने व्यवसाय के प्रति नही हो सकी। इसीलिये आज भी उनकी अभिवृत्ति नकारात्मक है जबकि महिला वर्ग की सकारात्मक।

इसके विपरीत माध्यमिक स्तर के पुरूष तथा महिला अध्यापकों में कोई भी सार्थक अंतर नहीं आया है। इसका मुख्य कारण इनकी सोच, व्यवसाय के प्रति लगन, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा समर्पण का भाव आदि हो सकतें हैं। ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विधालयों में जो पुरूष तथा महिला शिक्षण कार्य करते हैं वे पास के नगरों में या कस्बों में निवास करते हैं। उनका वातावरण, उनके साथी और साधन संपन्नता आदि उन्हें अपने व्यवसाय के प्रति न्याय करने के लिये, बच्चों का प्रेरित करने के लिये तथा राष्ट्र निर्माण में सहयोग देने के लिये आत्म प्रेरित करते रहते हैं। इसीलिये आज सेवानिवृत्त के पश्चात् भी वे संतुष्ट और धैर्यशील प्रतीत होते हैं। अतः पुरूष तथा महिला अध्यापको की अभिवृत्ति में कोई भी भिन्नता नहीं हैं।

7— तालिका सेख्या 4.7 में नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के तथ्यों का "समस्या" के संर्दभ में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राइमरी और माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में सेवानिवृत्त समस्याओं से संबंधित सार्थक अंतर नही आया है। इसका मुख्य कारण परिवार का वातावरण, आर्थिक तथा

सामाजिक प्रभाव, शिक्षा–दीक्षा की पूर्णता तथा व्यवसाय का सम्मान आदि हो सकता है। एक शिक्षक जब ये चीजें सकारात्मक रूप में मिल जातीं हैं तो वह अपने में संतुष्ट हो जाता है और "शिक्षक व्यक्तित्व" धारण करके बच्चों में तथा समाज में अपने सकारात्मक प्रभाव को छोड़ता है। परिणाम स्वरूप वह सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी अपनी इसी सोच को समस्याओं के समाधान तथा सामना करने में भी प्रयोग करता है, और सुखी जीवन जीता है।

8– तालिका सेख्या 4.8 में कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की "समस्याओं " का साँख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें सेवानिवृत्त समस्याओं में अंतर स्पष्ट हुआ है। इसका मुख्य कारण माध्यमिक स्तर के अध्यापको के समायोजन में कमी का होना हो सकता है। वर्तमान सेवानिवृत्त पीढ़ी में कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक विधालयों में पढ़ाने वाले पुरूष तथा महिला अध्यापक बड़े शहरों के रहने वाले होते थे। वे वहाँ की सुख–सुविधा, वातावरण, और संगी साथी तथा मानसिक परिपक्वता को छोड़कर कस्बा में नौकरी करने आते हैं। परिणाम्स्वरूप वे न तो न्याय, स्वंय के प्रति कर सके और न शिक्षण व्यवसाय के प्रति। अतः उनकी समस्यायें सेवानिवृत्त के पश्चात् भी उनको सुख से जीवन–यापन नहीं करने देती हैं। जबकि प्राइमरी स्तर की महिला तथा पुरूष अध्यापक उसी क्षेत्र के होते हैं। उनको अपने परिवार के साथ रहकर सभी सुविधायें मिलती हैं, और कोई वातावरण भी परिवर्तित नहीं होता है, अतः वे पूर्ण संतुष्ट जीवन व्यतीत करते हैं। परिणाम्तः कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में समस्याओं के सन्दर्भ में भिन्नता होती है।

9 – तालिका संख्या 4.9 में ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्याओं का साँख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें दोनों ही स्तरों को सेवानिवृत्त अध्यापकों की मध्यमान की समानता दोनों के अन्तर की सार्थकता को नकारते हैं। इन दोनों के मध्यमानों का अन्तर 0.64 रहा है और "क्रान्तिक अनुपात" 1.8 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों में भिन्नता के स्थान पर समानता अधिक है। इसका मुख्य कारण परिवेश तथा मानसिक सोच हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्र अपने शान्तप्रिय परिवेश से व्यक्ति में आत्म शक्ति की प्रबलता को विकसित करता है। यही आत्मशक्ति प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त अध्यापकों को समस्या समाधान में सहयोग देती हैं। ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों में सादा जीवन–उच्च विचार, संवेग नियन्त्रण, सम्मान ग्रहणता और सहयोग आदि के भाव स्वतः ही विकसित हो जाते हैं।

ये सब मिलकर अध्यापक व्यक्तित्व का गठन तथा विकास करते हैं। जब इन अध्यापकों का सोच, व्यवहार, व्यवहारिक कुशलता, समायोजन और समाज सेवा समान रूप से विकसित होती है तो इनकी समस्यायें भी समानता रखती है।

10 –तालिका संख्या 4.10 में नगर क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के महिला तथा पुरूष अध्यापकों की समस्याओं की साँख्यिकी का आंकलन किया गया है। इसमें प्राथमिक और माध्यमिक दोनों ही स्तरों के पुरूष तथा महिला अध्यापकों में सार्थक अन्तर रहा है। इसका मुख्य कारण व्यक्तित्व की विशेषता तथा व्यवसाय के प्रति अभिरूचि का गुणात्मक तथा मात्रात्मक अन्तर होना हो सकता है। यही निष्कर्ष डॉ. वीनाशाह (1990) ने भी अपने शोधपत्र में ज्ञात किये थे। नगर क्षेत्र के अन्दर प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों का परिवारीय वातावरण, आर्थिक तथा सामाजिक स्तर और सोच सुविकसित तथा वैज्ञानक होती है। ये लोग अधिकाँश तौर पर किसी न किसी नगर के ही रहने वाले होते हैं जो प्रत्येक प्रकार से साधन सम्पन्न होते हैं। अतः इनकी समस्यायें भी समान रूप ले लेती हैं। नई शिक्षा नीति 1986 से लोगों के मस्तिष्क में लड़का और लड़की के समान होने की भावना का विकास किया जा रहा है। आज के नागरिक वर्तमान में सुख से रहने के लिये परिवार नियोजन का भी सहारा ले रहे हैं। अतः लड़का–लड़की की समान परिवरिस करते हैं। परिणाम्स्वरूप पुरूष तथा महिला अध्यापकों का विकास समान सोच, समान प्रशिक्षण और समान कर्त्तव्य के तहत सम्पन्न होता है। फिर भी उनके भावनात्मक सम्बन्धों, क्रियाशीलता, और समर्पण के भाव के आधार पर भिन्नता होती है। प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के मध्यमान पुरूष वर्ग के अधिक रहे हैं। इससे स्पष्ट होता होता है कि पुरूष वर्ग अपने शिक्षण क्षेत्र में अधिक सक्रिय तथा सकारात्मक सोच लिये हुये होते हैं। शोध अध्ययनों में सामान्यतः पुरूष को बहिर्मुखी और महिला को अन्तर्मुखी माना गया है, जो अपने – अपने व्यवसायों को प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही दोनों वर्गों के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास भी शिक्षण को प्रभावित करते है। जब कोई व्यक्तित्व विशेषता स्थायित्व प्राप्त कर लेती है तो वह सेवानिवृत्त होने पर भी दैनिक जीवन को प्रभावित करती रहती है। यही निष्कर्ष डॉ. कुसुम अग्रवाल (1999) ने अपने शोधपत्र में ज्ञात किये है। अतः सेवानिवृत्ति के पश्चात् पुरूष अध्यापक स्वयं के व्यापक सोच के साथ – साथ सामाजिक होता चला जाता है। जबकि महिला वर्ग संकुचित रूप धारण करके अपने परिवार के प्रति ही सीमित होती चली जाती है। यानी महिला वर्ग अधिक स्वलोभी बनती है जबकि पुरूष

सामान्यीकरण की ओर चलता है। परिणाम् स्वरूप माध्यमिक तथा प्राइमरी स्तर के पुरूष तथा महिला अध्यापकों में समस्याओं को लेकर भिन्नता होना स्वाभाविक होता है।

11 –तालिका संख्या 4.11 में कस्बा क्षेत्र के सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का वर्णन किया गया है। इसमें प्राइमरी स्तर पर यौन भिन्नता स्पष्ट हुई है, जबकि माध्यमिक स्तर पर यौन भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई हैं। कस्बा क्षेत्र में शिक्षा का विकास प्राइमरी स्तर पर तीव्र और माध्यमिक स्तर पर धीमी गति से हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने प्राइमरी विद्यालयों के विकास में शासकीय तथा व्यक्तिगत नीति का उदारीकरण किया। इससे देश में प्राइमरी शिक्षा देने के लिये गली–मोहल्ले में निजी विद्यालयों की स्थापना हुई। इनमें अंग्रेजी माध्यम् और हिन्दी माध्यम् का प्रारम्भ किया गया। निजी विद्यालयों की शिक्षा ने हमारे बच्चों, और संरक्षकों के मस्तिष्क तथा विचारों का परिमार्जन करके वैज्ञानिक तथा उपयोगिता की सोच भर दी। परिणाम् स्वरूप सेवानिवृत्त अध्यापकों के सामने समस्या उत्पन्न हुई कि वे कैसे वर्तमान पीढ़ी के साथ समायोजन स्थापित करें। यही मानसिक विकार प्राइमरी पुरूष तथा महिला अध्यापकों में अन्तर स्थापित करता है।

इसके साथ ही माध्यमिक स्तर पर यौन भिन्नता में कोई भी अन्तर स्पष्ट नहीं हुआ है। इसका मुख्य कारण कस्बा क्षेत्रों में चलने वाले विद्यालय से जो सेवानिवृत्त अध्यापक हुये हैं, वे सभी नगरों के रहने वाले और साधन सम्पन्न परिवारों के रहे हैं, जिन्होने समृद्धशाली परिवेश में रहकर शिक्षा प्राप्त की है। इस समय के सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापकों के छात्र जीवन में कस्बा में माध्यमिक विधालय न के बराबर थे, और जो नवीन स्थापित किये गये थे उनमें सभी अध्यापक बड़े शहरों या नगरों से आया करते थे। पुरूष तथा महिला दोनों ही विधालयों में शिक्षक तथा छात्र का साकारात्मक संबंध था। इस व्यवसाय की पवित्रतता में और छात्रों के प्रति सर्मपण के भाव का स्थायित्व रखने वाले ही शिक्षक का दायित्व ग्रहण करते थे। अतः दोनो ही समूहों में शिक्षा के प्रति जागरूकता, लगन, तथा कर्तव्यनिष्ठा पायी जाती थी। जो इनमें सेवानिवृत्त के पश्चात् आने वाली समस्याओं के प्रति समानता स्थापित करने में सहायक होती है। अतः माध्यमिक स्तर पर पुरूष तथा महिला अध्यापकों में समस्याओं के प्रति सोच की समानता प्रतीत होती है।

12 –तालिका संख्या 4.12 में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के

विधालयों से सेवानिवृत्त पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं का साँख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राइमरी अध्यापक समूह में यौन भिन्नता में समस्याओं के संदर्भ में अंतर स्पष्ट हुआ है। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों के प्राइमरी विधालयों से सेवानिवृत्ति पाने वाली महिला अध्यापिकाऐं, वे होती हैं जो शहरों या बड़े कस्बों में रहने वाली और समृद्व परिवारों से आती है। 1998 तक सेवानिवृत्त अध्यापिकाओं का जन्म 1938 में हुआ होगा और उन्होने हाई–स्कूल परीक्षा 1958 में पास की होगी। अतः पच्चास के दसक में भारतीय ग्रामीण एवं कस्बों के परिवारों का सोच लड़कियों कों नौकरी कराना नहीं रहा होगा। सरकारी आँकड़े भी इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं। अतः शहर के तथा बड़े कस्बों की लड़कियाँ ही देहात में अध्यापक बनकर आतीं हैं। इनका चिंतन, जीवन स्तर, समाज के प्रति दृष्टिकोंण नवीनता लिये हुये होता है। इस प्रकार से ये महिला अध्यापिकाएँ पुरूष अध्यापकों से सर्वथा भिन्न व्यवहार करतीं हैं। चूँकि पुरूष अध्यापक उसी ग्रामीण क्षेत्र एवं परिवेश का होता है, इसलिये उसका सोच, व्यवहार, परिपक्वता तथा दृष्टिकोण सीमित रहता है और उसकी समस्याये भी सीमित तथा विशेष होतीं हैं। परिणाम स्वरूप ग्रामीण प्राइमरी पुरूष तथा महिला अध्यापिकाओं की समस्याओं में अंतर होना स्वभाविक है।

इसी प्रकार से ग्रामीण क्षेत्र, से सेवानिवृत्त माध्यमिक पुरूष तथा महिला अध्यापकों की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं रहा है। इसका मुख्य कारण दोनों ही समूहों की शिक्षा–दीक्षा अच्छे विद्यालयों में हुई, समृद्ध परिवारों से आये हैं, तथा उनका शिक्षा व्यवसाय के प्रति सोच भी, समानता लिये हुये है। वर्तमान में शिक्षा की माँग और लक्ष्यों की पूर्ति को उनका मानसिक सोच, सजग एवं कर्त्तव्य परायण है, जिससे वे अपने व्यवसाय के प्रति समान न्याय करते रहे हैं, और उनके मूल्यों का विकास करते रहे हैं। आज वे सेवानिवृत्त हो चुके हैं फिर भी उनकी समस्यायें समान हैं, और उनका समाधान भी समान तरीकों या उपायों से सोचते हैं।

13 –तालिका संख्या 4.13 में सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं के बीच सह–सम्बन्ध क्षेत्रों के हिसाब से आँकलित किया है। इसमें नगर क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्या के बीच नाकारात्मक सह संबंध रहा है। इसका मुख्य कारण दोनों क्षेत्रों के वातावरण तथा सामाजिकता में अंतर का होना है। जिस दसक के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं के बीच संबंध देखा गया है। उसमें भौतिक–वादी

दृष्टिकोंण और वैज्ञानिकता का सर्वोत्तम विकास मानव हित में हुआ है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव मानव विकास पर आज परिलक्षित हो रहा है। आज के व्यक्ति को जो स्वतंत्रता क्षमता प्रयोग के अवसर और सुख प्राप्त के साधन प्राप्त हैं उनके पीछे वैज्ञानिकता की छाप स्पष्ट रूप से दिखलाई देती है। इसका सबसे अधिक प्रभाव नगरों पर रहा और धीरे–धीरे ग्रामीण क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहा है। इस भौतिकवादी प्रभाव से उत्पन्न परिवेश तथा सामाजिक परिवर्तन ने नगर क्षेत्रों को अधिक प्रभावित किया है और ग्रामीण क्षेत्रों को कम। अतः उनके सोच में तथा समस्या समाधान में नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के बीच कोई संबंध स्पष्ट नहीं हुआ है। इसके विपरीत नगर क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं के बीच धनात्मक संबंध रहा है।इसका मुख्य कारण उनके परिवेश की समानता का, तथा समान साधन सम्पन्नता का होना हो सकता है। मूल रूप से गाँव का समृद्व तथा शिक्षित व्यक्ति अपने को कस्बे में सुरक्षित मानता है। साथ ही कस्बे में भैातिक सुविधायें भी होतीं हैं जो व्यक्ति को सुख प्रदान करतीं हैं। अतः वे लोग कस्बों को अपना स्थायी निवास बना लेते हैं। इस प्रकार से उनकी मनोवृत्ति और समस्या के बीच धनात्मक संबंध स्थापित होता है। इसी प्रकार से नगर क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्या के बीच धनात्मक संबंध स्थापित होने के कारण नौकरी हेतु नगर के कस्बों की ओर जाना और फिर वहीं निवास करके भौतिक समृद्दि को जुटाना हो सकता है। जब शहर के लोगों को नौकरी अपने नगर में नहीं मिलती है तो वे कस्बों की ओर जाते हैं और जीवन यापन के साधनों को शिक्षा व्यवसाय के रूप में ग्रहण करते हैं। परिणाम् स्वरूप उनकी अभिवृत्ति एवं समस्या के बीच सकारात्मक सोच विकसित होती है जो दोनो परिवर्तियों के बीच धनात्मक संबंध स्थापित करने में सफल रही है।

14 –तालिका संख्या 4.14 में सेवानिवृत्त अध्यापकों की मनोवैज्ञानिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच सहसंबंध प्रदर्शित किया गया है। इसमें नगर क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र और नगर क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र दोनों के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों में धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। इसका मुख्य कारण दोनों का वर्तमान की परिस्थितियों में विश्वास करते हुये जीवन यापन करना। इसमें वास्तविकता के साथ सांजस्य स्थापित करना तथा मानसिक तनाव को कम करना आता है। दोनों ही समूह अपने परिवेश के प्रति सकारात्मक सोच रखतें हैं और उपलब्ध साधनों के साथ अच्छा जीवन यापन करने

की कोशिश करते हैं। अतः सेवानिवृत्ति के पश्चात् प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का सोच जीवन की यथार्थता के प्रति सकारात्मक होता है, परिणाम स्वरूप मनोवैज्ञानिक समस्याये भी उसी रूप में अपना प्रभाव छोडतीं हैं। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के बीच सह संबंध ऋणांत्मक रहा है। इसका कारण दोनो के रहन–सहन का तरीका और सामाजिक सोच हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्र का व्यक्ति संकुचित विचार वाला, परिवारिक कार्यों का विकास करने वाला, और संयुक्त परिवार में विश्वास रखने वाला होता है, जबकि कस्बा क्षेत्र के अध्यापकों पर नगर क्षेत्र का प्रभाव होता है। वे एकांगी परिवार तथा बेहतर जीवन की ओर अग्रसर होते हैं।अतः उनमें सामाजिकता की अवहेलना करने की इच्छा बलवती होती है। परिणांम् स्वरूप दोनों की अभिवृत्ति और मनोवैज्ञानिक समस्या में ऋणांत्मक संबंध रहा है। ग्रामीण तथा कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापको की अभिवृत्ति तथा मनोवैज्ञानिक समस्या के बीच धनात्मक संबंध रहा है। यानि जैसा अध्यापकों का सोच होता है वैसी ही मानसिकता और, उससे जुड़ी समस्याओं का भी सृजन होता है। अतः इन दोनो के रहन–सहन, साधन–संपन्नता, शिक्षा–दीक्षा आदि पर समान परिवेश का प्रभाव परिलक्षित होता है जो दोनों के बीच विधेयात्मक संबंध बनाता है।

15 – तालिका संख्या 4.15 में सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की शारीरिक समस्या तथा अभिवृत्ति के बीच सहसंबंध गुणाँक का विशलेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें नगर क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक, नगर क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के अध्यापक और ग्रामीण क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के अध्यापक, प्राइमरी और माध्यमिक दोनों का सहसंबंध ऋणांत्मक रहा है। यानि इन क्षेत्रों के अध्यापको की अभिवृत्ति का उनकी शरीरिक समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। निष्कर्षात्मक तौर पर कहा जा सकता है कि उनकी सकारात्मक अभिवृत्ति उनकी शरीरिक समस्या को हल नहीं कर पाती है। जबकि की उनकी नाकारात्मक सोच का कोई प्रभाव नहीं होता है। यानि सेवानिवृत्त शिक्षकों की समस्या अपनी तरह से प्राभावित करती है, और अभिवृत्ति अलग तरह से।

16 – तालिका संख्या 4.16 में नगर क्षेत्र तथा ग्रातीण क्षेत्र में, नगर क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र, और ग्रामीण क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के अध्यापक प्राइमरी और माध्यमिक वालों की अभिवृत्ति तथा आर्थिक समस्या के मध्य सह–संबंध विधेयात्मक रहे हैं। इसका मुख्य कारण उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा समय–समय पर नये वेतन मान देना, पैन्शन की

व्यवस्था करना, सामूहिक बीमा तथा फण्ड को कटवाना और समय पर मिलते रहना आदि है। आज शिक्षा के क्षेत्र में समान वेतन व्यवस्था और समान पैन्शन नीति तथा अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के कारण नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र पर संशोधनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। बल्कि नगर के अध्यापक पैसे की बचत उतनी नहीं कर पाते हैं, जितनी कस्बा और ग्राम का अध्यापक कर लेता है। इसका कारण उसकी दैनिक आवश्यकताओं का सीमित होना हैं। अतः इनकी आर्थिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच धनात्मक सम्बन्ध होता है।

17 –तालिका संख्या 4.17 में विभिन्न निकायों के प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की सामाजिक समस्या तथा अभिवृत्ति के बीच सह–सम्बन्ध जानने की कोशिश की गई है, जो अधिकाँश रूप से धनात्मक रहा है। इसका कारण वर्तमान समय के परिवर्तन का प्रभाव, धन का प्रचुर मात्रा में होना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समाज में फैलना मात्र है। समाज अब रूढ़िवादी नहीं रहे हैं, उनमें यथार्थता का फैलाव, जीवन के प्रति सजगता और अच्छे जीवन यापन की लालसा आदि का विकास हो चुका है। अध्यायक पुरूष हो या महिला प्राइमरी स्तर हो या माध्यमिक, वह नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो, या ग्रामीण क्षेत्र का, उनकी सोच और नजरिये में नये समाज के प्रति जागरूकता प्रतीत होती है। सेवानिवृत्ति वाला अध्यापक रूढ़िवादी संस्कृति से दूर हो चुकता है लेकिन वह अत्याधुनिकता को अभी भी ग्रहण करने में समर्थ नहीं हैं। परिणामस्वरूप नगर क्षेत्र तथा कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों में समाज के प्रति अपनी अभिवृत्ति को धनात्मक नहीं बना पाये हैं। इसका मुख्य कारण नगर क्षेत्र में व्याप्त भौतिकता का प्रभाव और पाश्चात्य जीवन यापन अभी कस्बा क्षेत्र तक नहीं पहुँच सका है। इसलिये दोनों की सामाजिक मान्यतायें भिन्नतायें रखती हैं। कस्बा के अध्यापक अभी भी सामाजिक नियमों का यथावत पालन करते हैं, जबकि नगर क्षेत्र के अध्यापक अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार उनमें परिवर्तन कर लेते हैं। परिणाम स्वरूप माध्यमिक अध्यापकों (नगर क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र) की सामाजिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच धनात्मक सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाये हैं।

18 – तालिका संख्या 4.18 में सभी निकायों के बीच प्राइमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा साँस्कृति समस्या के बीच सह–सम्बन्ध ऋणात्मक रहा है, सिर्फ नगर क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों के इस धनात्मक सह–सम्बन्ध का मुख्य कारण नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक नगर क्षेत्रों से ही आये हैं। जो

माध्यमिक अध्यापक नब्बे के दशक में सेवानिवृत्त हुआ है, वह नगर का रहने वाला, शिक्षा–दीक्षा नगर से, और उसका सोच भी नगरीय सभ्यता से ओत–प्रोत होता है। इस पीढ़ी में ग्रामीण तथा कस्बा क्षेत्रों में शिक्षा – दीक्षा का इतना विस्तार ही नहीं था जो ग्रामीण परिवेश का व्यक्ति अध्यापक बन पाता है। इसके विपरीत सेवानिवृत्त अध्यापक की अभिवृत्ति का निर्माण अवैज्ञानिक परिस्थितियों में, धनाभाव में, और रूढ़िवादी संस्कृति में हुआ है, जबकि वह सेवानिवृत्त आधुनिक युग में हुआ है। अतः उसकी साँस्कृतिक समस्या तथा अभिवृत्ति के बीच निषेधात्मक सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। वह आधुनिक संस्कृति की ओर आकर्षित होता है, लेकिन प्राचीन जीवन मूल्य उसे ऐसा नहीं करने देते हैं। परिणामस्वरूप वह आधुनिक उपकरणों से पर्याप्त लाभ नहीं ले पाता है और न अपनी सोच को ही बदल पाता है। यही कारण है कि साँस्कृतिक समस्या और अभिवृत्ति के बीच ऋणात्मक सह–सम्बन्ध रहा है।

19 –तालिका संख्या 4.19 में शोधकर्ता ने विभिन्न समस्याओं के फैलाव, व्यापकता या विस्तार को जानने के लिये प्रतिशत साँख्यिकी को ज्ञात किया है। इसके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समस्या का प्रभाव एवं विस्तार नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्राम क्षेत्र आदि में समान रूप से व्याप्त है। इसका मुख्य कारण सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक महिला तथा पुरूष अध्यापक स्वंय को मानसिक रोगों से अधिक ग्रसित पाते हैं जो धीरे–धीरे शारीरिक रोग भी बन जाते हैं। इसके साथ ही ये लोग अनावश्यक भयों से भी ग्रसित रहते हैं, जो इनमें तनाव पैदा करते हैं, तथा इनको उत्साह – विषाद की स्थिति में लाकर खड़ा कर देते हैं। बच्चों का उनकी इच्छानुसार विकास न होना, दूसरों से तुलना करना, नई पीढ़ी का अपने तरीके से जीवन यापन करना आदि उनमें असन्तोष का भाव विकसित कर देता है। परिणाम्स्वरूप मनोवैज्ञानिक और शारीरिक रूप से ,ये समस्या ग्रसित हो जाते हैं। चूँकि वर्तमान शिक्षक को पोषण नीति ने उनको आर्थिक स्तर पर काफी समृद्धिशाली बना दिया है जिससे उनके सामने अर्थाभाव उत्पन्न नहीं होता है। इसीलिये उनकी सामाजिक और साँस्कृतिक समस्यायें निम्न स्तर पर आयीं हैं। धन की उपयुक्त मात्रा शिक्षकों को समाज में सम्मान से रहने के अवसर प्रदान करती है, साथ ही साँस्कृतिक बदलाव के मूल्यों के साथ उन्हें सामायोजित भी कर देती है। इस प्रकार से शोधकर्ता मनोवैज्ञानिक समस्या और शारीरिक समस्या को मिलाकर देखता है तथा आर्थिक समस्या के सहारे सामाजिक तथा साँस्कृतिक समस्या स्थापित होती है। निष्कर्षात्मक तौर पर यह कहा जा सकता है कि भौतिकवादी युग में जहाँ सेवानिवृत्त अध्यापकों को आर्थिक साधन प्रचुर मात्रा में दिये हैं, वहीं पर मनोवैज्ञानिक समस्या के रूप में विकराल बीमारी सभी अध्यापकों को दे दी

है। जिससे छुटकारा पाना बहुत ही मुश्किल प्रतीत होता है।

सेवानिवृत्त अध्यापक अभिवृत्ति के निष्कर्ष :–

विभिन्न निकायों के प्राइमरी तथा माध्यमिक पुरूष–महिला सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण – मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात और सह – सम्बन्ध आदि साँख्यिकी विधियों के प्रयोग के द्वारा किया गया है। इसमें सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति प्रदर्शित तालिका संख्या 4.1, 4.2, और 4.3 से स्पष्ट होता है कि प्राइमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है अपेक्षाकृत माध्यमिक के। फिर भी दोनों की अभिवृत्ति में अन्तर होना स्वाभाविक है क्योंकि इनके विकास के अवसर समान नहीं हैं :–

1 – प्राइमरी सेवानिवृत्त अध्यापक जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक उसी वातावरण में जीवन–यापन करते हैं जिसमें वे पैदा हुये होते हैं। अतः उनकी जीवन शैली कार्यकुशलता और व्यवसाय, परिपक्वता उनकी सोच को सीमित बना देती है। वे लोग स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति तथा रिश्तेदारों के प्रति ही सहायक सिद्व हो पाते हैं।उनमें बहिर्मुखी व्यक्तित्व के दर्शन नहीं हो पाते हैं अतः उनहें "सैलफिस व्यक्तित्व" का नाम भी दे दिया जाता है।

2 – अभिवृत्ति का विकास वैयक्तिकता पर भी निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्वि, शिक्षा और अनुभवों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अभिवृत्तियों को बनाते हैं। फिर व्यवसाय का प्रभाव तथा अनुभव इनके विकास तथा गठन को अधिक प्रभावित करते हैं।

3 – शिक्षकों में यह पाया गया है कि वो जीवन में संधर्ष करते हैं, जीवन को सुन्दर बनाने की सोच रखते हैं और इसी लिये जीवन के प्रति अभिवृत्ति सबसे प्रमुख रहती है। इस प्रकार से उनके जीवन में इसी अभिवृत्ति की प्रमुखता रही है, जो भौतिकवादी युग की देन भी है।

4 – आज सेवानिवृत्त अध्यापक मानसिक रोगों से पीड़ित हैं। उसमें डिप्रेशन, एंगजाइटी, गिल्ट, टैन्सन, स्ट्रेस, पटीग आदि सामान्य तथा प्रमुख रोग हैं। ये मानसिक रोग सभी शिक्षकों में पाये जाते हैं चाहे वे क्षेत्र विशेष के हों, या शिक्षा स्तर विशेष के अथवा किसी भी यौनि के हों।

5 – समस्या तालिका से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त अध्यापकों की समस्याओं पर उनकी अभिवृत्ति का प्रभाव पड़ता है तथा अभिवृत्ति के आधार पर ही समस्याओं का विकास होता है यह विकास सभी अध्यापकों में वातावरण और परिस्थिति के अनुरूप होता

है, अंतर सिर्फ व्यक्तित्वता का होता है।

6 — प्रत्येक अध्यापक मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रसित रहता है। इसमें सफल और सक्षम अध्यापक भी होते हैं और निष्क्रिय भी।

7 — शारीरिक शिथिलता आयुवृद्वि का परिणाम् होती है। फिर भी जो अध्यापक सेवानिवृत्ति के पश्चात् अनुशासन मय जीवन व्यतीत करते हुये अन्य कार्यो में सक्रियता दिखाते रहते हैं, वे अधिक स्वस्थ एवं निरोग रहते हैं।

8 — परिणामों से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त अध्यापक पैन्शन के कारण आर्थिक समस्या में उलझे रहते हैं। इनमें वे लोग अधिक समस्या ग्रस्त रहते हैं जो धन का सही प्रयोग नहीं करते हैं या धन हानि के भय के कारण न तो उसका स्वयं उपभोग करते हैं और न परिवार या समाज को करने देते हैं। सामान्यतः ऐसे लोग कम ही होते हैं।

9 — आज का सेवानिवृत्त अध्यापक स्वयं से लड़कर अन्य लड़ाई बदलते हुये सामाजिक मूल्यों के साथ लड़ रहा है। सामाजिक समस्यायें समाज के साथ समायोजन स्थापित करने से उत्पन्न होती है। आज का समाज मान्यताओं, मूल्यों, आर्दर्शों आदि को मानव जीवन में सहायता और सुख—समृद्वि के लिये अपनाता हैं। वह उनका आदी नहीं बनता है। अतः सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं के दायित्व को पूर्ण करके इस परिवर्तन से अपनी आँखें फेर लेता है। परिणामस्वरूप सामाजिक समस्या इनको कम प्रभावित करती है।

10 —आज परंपरागत संस्कृति से हट कर पाश्चात्य, भौतिक तथा आधुनिक संस्कृति का फौलाव संसार में हो रहा है। इसनें स्त्री—पुरूष के रिश्तों को भी नये आयाम दिये हैं। सेवानिवृत्त अध्यापक स्वयं को इनसे दूर रखता है और अनके प्रभाव को नकारता है, लेकिन परिवार से इस प्रभाव को दूर नहीं कर पाता है। अतः वह इस कोशिश में लगा रहता है कि भारतीय संस्कृति की मृत्यु न हो जाये, या अपंग न हो जाए।

शोधकर्ता ने उपरिवर्णित निष्कर्ष ज्ञात किये हैं जो सेवानिवृत्त अध्यापकों में समानता, स्वतंत्रता तथा भाईचारे के भावों को फैलाते हैं। आज का सेवानिवृत्त अध्यापक "परंपरागत मूल्यों" और "परिवार मूल्यों" के बीच लटका हुआ है। वह न तो परंपरागत को छोड पा रहा है, और न परिवर्तित मूल्यों को ग्रहण कर पा रहा है। परिणाम स्वरूप वह विभिन्न समस्याओं का शिकार हो रहा है। ये समस्यायें व्यवसाय तथा उसके पारिवारिक वातावरण के साथ जुड़ी हुयीं है, जिनसे छुटकारा पाना जीवन पर्यन्त संभव नहीं हो पाता है। इनके साथ समायोजन स्थापित करना ही सामान्य जीवन

यापन हो सकता है। समस्याओं के विकास तथा अभिवृत्ति के गठन एवं सेवानिवृत्त अध्यापकों पर प्रभाव के अध्ययन को दुबे एवं दास (1994), बरोट (1995), बाजपेयी (2000) तथा विधार्थी (1978) आदि ने इसी रूपमें अपने–अपने शोध निष्कर्षों के द्वारा प्रमाणित किया है।

अध्याय - पंचम्

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

१ - अध्ययन के निष्कर्ष

२ - अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

3 - शिक्षारत तथा सेवानिवृत्त शिक्षकों के लिये सुझाव

४ - व्यवहारिक सुझाव

५ - भविष्य के शोध कर्ताओं हेतु सुझाव

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य "सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना है", का परीक्षण किया गया है शोधकर्ताओं ने इसके अन्तर्गत सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जीवन के प्रति अभिवृत्ति, सन्तान के प्रति अभिवृत्ति, सामाजिक सम्मान के प्रति अभिवृत्ति , सहयोगियों के प्रति अभिवृत्ति, तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति जानने की कोशिश की है। समस्या के चयन के समय शोधकर्ता ने विभिन्न क्षेत्रों के सेवानिवृत्त अध्यापकों से विचार – विमर्श किया था, कि उनकी अभिवृत्ति के कौन – कौन से क्षेत्र हो सकते हैं। निष्कर्षात्मक रूप से उपर्युक्त क्षेत्रों में व्याप्त उनकी अभिवृत्ति जानने की कोशिश की, तो पाया कि अध्यापक स्त्री हो या पुरूष दोनों की अभिवृत्तियाँ उपर्युक्त क्षेत्रों में समान रूप से विकसित होती है। इसका प्रमुख कारण है भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पारिवारिक प्रभाव। हम भारतीय कितने ही आधुनिक तथा पाश्चात्य सभ्यता में रंग जाये, लेकिन हमारी सोच अपनी मूल सभ्यता, मूल्यों और आधारों से हट नहीं पाती है। परिणाम्स्वरूप हमारा सोच सकारात्मक होकर परिवार से प्रारम्भ होता है और "वसुधैव कुटुम्बकम् " पर पहुँचता है। इसी भाव का प्रदर्शन शोध प्रयुक्त शिक्षक–शिक्षिकाओं ने अपनी अभिवृत्ति प्रदर्शन में किया है।

तालिका नं. 4.1, 4.2, 4.3 के आधार पर स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अभिवृत्ति सम्बन्धी समानता स्थापित हुई है। इसका कारण दोनों शिक्षक स्तरों के शिक्षको का सोच, समानता रखता है और उसका निर्माण एक ही प्रकार के पर्यावरण, आदर्श तथा शिक्षा के प्रति समान धारणा, का व्याप्त होना है। यदि शिक्षक में लगन, परिश्रम तथा समर्पण के भाव हैं तो वह किसी भी स्तर का शिक्षक हो, उसका सोच सभी क्षेत्रों में समानता रखने वाला ही होता है। इसका समर्थन "डेवीज (1961)", कोरिगन (1963), जैकब (1968) आदि प्रभृत्ति विद्वानों ने भी किया है।

इसके साथ ही तालिका सं. 4.4, 4.5, 4.6 में प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरों के शिक्षकों की अभिवृत्ति को, यौन भिन्नता के आधार पर आँकलन करके प्रस्तुत किया गया है। इनके मध्यमान से स्पष्ट होता है कि अभिवृत्ति निर्माण, विकास तथा सम्बर्द्धन में स्त्री – पुरूष तथा प्रायमरी स्तर के स्त्री–पुरूष की अभिवृत्ति में असमानता देखने को मिली है और शेष में नहीं। इसका कारण शिक्षकों का परिवारिक प्रभाव, शिक्षा का प्रभाव, और क्षेत्रीयता का प्रभाव हो सकता है। प्रस्तुत अध्यन में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवेशों से सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति को

जानने की कोशिश की गई है। अतः जो शिक्षक–शिक्षिकायें शिक्षण में रूचि रखते हैं या शिक्षण को ही अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं वे किसी भी क्षेत्र के रहने वाले होते है और किसी भी क्षेत्र में जाकर कार्य करते हैं। इस प्रकार से उनके नगर क्षेत्र का रहन–सहन, शिक्षा–दीक्षा और सोच आदि का प्रभाव ग्रामीण या कस्बा क्षेत्र के शिक्षण व्यवसाय को प्रभावित करता है। अतः उनकी अभिवृत्तियों में अन्तर आना स्वाभाविक है, : जिसको विद्वानों ने सामान्य नहीं माना है। इसका समर्थन मेहरोत्रा (1973) अहलूवालिया (1974), वीनमन (1984), तथा तेसू (1993) आदि विद्वानों ने अपने शोध निष्कर्षों में किया है।

अभिवृत्ति निर्माण पर व्यक्ति की मानसिक योग्यता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। आज शिक्षण–प्रशिक्षण को "कौशल" मानकर व्यवसाय अपनाने को कहा गया है। इसीलिये अध्यापक चयन प्रशिक्षण टेस्ट, तथा अध्यापक चयन टैस्ट के आधार पर सम्पन्न होते है। उच्च मानसिक योग्यता वाले व्यक्तियों में अधिक क्रियाशीलता, धैर्यवानता, सामयिक शिक्षण साधनों का प्रयोग करना तथा बच्चों के प्रति समर्पण आदि की अधिकता होती हैं, जबकि सामान्य मानसिक योग्यता वाला अपने कार्य को सामान्य नियमपूर्वक पूरा करता है। अतः अतिरिक्त सोच के कारण स्त्री–पुरूष, प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अन्तर होना स्वाभाविक है। इसका समर्थन मित्तल (1990), मिश्र (1988), आदि विद्वानों ने "सृजनशील व्यक्तित्व" का नाम देकर किया है। अतः शौध कार्य का प्रथम उद्देश्य शिक्षकों की अभिवृत्ति निर्माण में समानता का समर्थन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना "सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है ", का परीक्षण किया गया। इस परिकल्पना को जाँचने के लिये तालिका नं. 4.4, 4.5, 4.6 को देखा तो पता चला कि नगर क्षेत्र से सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षक / शिक्षिकाऐं, अपनी अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं रखती है। इस समय जो शिक्षक (स्त्री–पुरूष) सेवानिवृत्त हुये हैं वे ऐसे परिवारों से आये थे जो शिक्षित थे, सामाजिक आर्थिक स्तर से उन्नत थे और उनके अन्दर शिक्षक बनने की जिजीविषा थी। इनको अपने परिवार जैसा ही वातावरण मिला और ये लोग स्वयं को समायोजित करने में सफल रहे। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वंशानुक्रम का प्रभाव, परिवार के वातावरण का प्रभाव आदि, शिक्षकों के व्यवसाय में अन्तर को समाप्त करता है। यहाँ पर स्त्री–पुरूष प्रायमरी शिक्षक को वातावरण की समानता मिली है। इसीलिये दोनों के मध्यमानों में भी समानता है जिनका अन्तर 0.84 रहा है जिसका क्रान्तिक अनुपात 1.0 रहा है जो 0.01 तथा 0.05 किसी भी विश्वास स्तर

पर सार्थक नहीं रहा है। अतः यह सिद्ध होता है कि नगर क्षेत्र के प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) की सेवानिवृत्ति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार के निष्कर्ष "डोरोषी (1952), डेवीज (1961) तथा वर्मा (1968) और कुरेशी (1972) ने भी अपने शोधों के निष्कर्षों से दिये हैं।

सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र की तालिका को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि दोनों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) के मध्यमान का अन्तर 2.08 रहा है। इसका क्रिटीकल अनुपात 3.65 रहा है जो दोनों वर्गों की अन्तर की सार्थकता प्रगट करता है। चूँकि कस्बा क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों से आकर बसे हुये लोगों से होती है। अतः प्रायमरी स्तर के जो शिक्षक या शिक्षिकायें 1998 तक में सेवानिवृत्त हुये हैं, उनमें कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र दोनों ही परिवेश के लोग सम्मिलित हैं। इन दोनों में क्षेत्र का, शिक्षा का, मूल्यों का, परिवार के संस्कारों आदि का अन्तर होता है। यह अन्तर इनके सोच को व्यवहारिक बनाता है, जिसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर भी परिलक्षित हुआ है। इस प्रकार के निष्कर्षों वीराराघवन (1987), पीटर (1978), शमसेरी (1982) आदि के शोध निष्कर्षों से भी प्राप्त हुये हैं।

इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी स्तर के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तालिका 4.6 को देखने से प्रतीत होता है कि दोनों वर्गों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। इनके मध्यमानों का अन्तर 1.46 रहा है तथा क्रिटीकल अनुपात 3.9 रहा है जो दोनों वर्गों के अन्तर की सार्थकता को प्रगट करता है। इनका मुख्य कारण दोनों वर्गों की जागरूकता, समर्पण तथा कर्तव्य निष्ठा आदि के भावों में भिन्नता का होना है। हमारें देश में शिक्षा स्तर (महिलाओं) बहुत ही गिरा हुआ रहा है। जो स्त्री शिक्षक 1988 से 1998 तक में सेवानिवृत्त हुये हैं, वे तीस के दशक में जन्में होंगे। उस समय हमारे देश में अंग्रेजों का शासन रहा था और शिक्षा का विकास भी बहुत कम था। जो भी स्त्री–पुरूष शिक्षित थे वे नगरों तथा कस्बों से आये थे। ये लोग कम वेतन पर इसीलिये जीवन यापन करते थे कि वे अपने देश वासियों को साक्षर बनाना चाहते थे। जबकि पुरूष शिक्षक की मानसिक दशा भिन्न थी। वे शिक्षक बनना एक व्यवसाय मानते थे, जबकि साथ में खेती का कार्य भी देखते थे। इस प्रकार से स्त्री शिक्षिका की पूरी ऊर्जा बच्चों के शिक्षण में लगती थी और वे उनको एक आदर्श बालिका बनाना चाहती थी। इसके साथ ही पुरूष शिक्षक, शिक्षण को व्यवसाय के रूप

में लेता था और बच्चों को नियमित ज्ञान देने की कोशिश करता था। परिणाम् स्वरूप दोनों वर्गों के सोच में भिन्नता होनी स्वाभाविक है। अभिवृत्ति के उक्त अध्ययन जैकब (1968), डेवीज (1961), अहलूवालिया (1974), सर्वानंद (1988) मेजर (1969) आदि द्वारा प्रस्तुत निष्कर्षो से प्रमाणित होते हैं।

उपर्युक्त विवेचना से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। यदि इनकी अभिवृत्ति के निर्माण पर प्रभाव डालने वाले कारक आपस में भिन्नता लिये हुये हैं तो दोनों वर्गों की अभिवृत्ति में अन्तर होना स्वाभाविक होता है। यदि दोनों वर्गों के प्रायमरी शिक्षकों को समान पर्यावरण मिले तो इस अन्तर को कम किया जा सकता हैं, समाप्त नहीं। अतः प्रस्तुत परिकल्पना सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है, स्वीकृत एवं सिद्ध नहीं हुई है।

शोधकार्य की द्वितीय परिकल्पना, "सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है," का परीक्षण किया गया। इस हेतु शोध कर्ता ने तालिका सं. 4.4, 4.5, 4.6 का अवलोकन किया और पाया कि माध यमिक स्तर के शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का आकलन, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र आदि में अलग–अलग से देखना होगा। उनमें नगर क्षेत्र के, सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसका प्रमुख कारण उनके व्यक्तित्व की विशेषतायें तथा प्रशिक्षण का प्रभाव हो सकता है। शिक्षक वर्ग व्यवसायिक तथा भौतिकवादी बनता जा रहा है। उसमें शिक्षा क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने की लालसा रहती है। वह अपनी बुद्धि का प्रयोग व्यवसाय, राजनीति, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी करता है ताकि वह समाज में अधिक सम्मान पा सकें। इसके विपरीत महिला शिक्षिकायें स्वयं की क्षमता को अपने शिक्षण कार्य के प्रति ही समर्पित करती है। वे सिर्फ अपने परिवार और विद्यालय तक ही सीमित रहती है। उनका व्यक्तित्व विकास अन्तर्मुखी रहता है। परिणाम् स्वरूप उनके प्रभाव का क्षेत्र बहुत ही सीमित रहता है। इसीलिये पुरूष तथा स्त्री अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर प्रतीत हुआ है। इसका समर्थन व्यक्तित्व और व्यवसायिक अभिवृत्ति के अध्ययनों, सर्वानंद (1988), अशोक (1993), तेसू (1993), फ्लैन्डर्स (1970), गुप्ता (1979) आदि द्वारा किये गये है।

कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई भी अन्तर नहीं आया है। इनके मध्यमान अन्तर 0.88 तथा 0.4 रहे है। इनके क्रान्तिक अनुपात 1.8 तथा 1.1 रहे हैं। ये दोनों ही

मूल्य किसी विश्वास स्तर पर अपनी सार्थकता प्रगट नहीं करते हैं। इन दोनों क्षेत्रों के स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति में अन्तर न होने का कारण उनके परिवेश का प्रभाव तथा उनके संस्कार और प्रशिक्षण की प्रतिवद्धता हो सकते है। पामर (1908), बार (1929), कल्पना (1992), मेहरोत्रा (1973), आदि ने अपने अध्ययनों से शिक्षक परिवेश को अभिवृत्ति के विकास में सहायक माना है, जिससे उनमें समान सोच पैदा होता है और वे क्रियाशील रहते हैं। गाँवों के द्वारा ही कस्बों का निर्माण होता है। उनके वातावरण और ग्राम के वातावरण में अधिक अन्तर नहीं होता है। पीढ़ी का सोच तथा पारिवारिक विशेषतायें एक दम से नहीं बदलती है। ये संस्कार के रूप में परिवार में, समाज में और समुदाय में जीवित रहती है जो सदस्यों को प्रभावित करती है। तालिका संख्या 4.17 में कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षकों के बीच सहसम्बन्ध प्रदर्शित किया गया है जो धनात्मक रहा है। यह भी स्पष्ट करता है कि अभिवृत्ति सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित होती है। इसके साथ ही शिक्षण प्रशिक्षण का प्रभाव कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। वे इसे पवित्र और अनौखा मानते हैं। "शिक्षक" शब्द का आज भी कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सम्मान–आदर है। प्रत्येक व्यक्ति इनको विशेष व्यक्तित्व के रूप में देखता है क्योंकि वे नौनिहालों को कल का नागरिक बनाते हैं। ये शिक्षक बड़े ही मनोयेग से प्रत्येक बच्चे को ज्ञान देते हैं। इनमें किसी भी प्रकार की जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि की भिन्नता नही की जाती है। इस निष्कर्ष का समर्थन कोरिगन (1963), वर्मा (1968), जैकब (1968), कुरेशी (1972) आदि ने अपने अध्ययनों से किया है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र में अन्तर नहीं होता है, लेकिन नगर क्षेत्र में अन्तर होता है। शोधकर्ता का अनुभव इस अन्तर को नकारता है। अतः शोधकार्य में ये परिकल्पना स्वीकृत तथा सिद्ध होती है कि माध्यमिक शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत अध्ययन की तृतीय परिकल्पना–"नगर, कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया। ये परिकल्पना माध्यमिक तथा प्रायमरी स्त्री–पुरूष अध्यापकों जो, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि कहीं से सेवानिवृत्त हुये हों, उनकी अभिवृत्ति से सम्बन्ध रखती है। मध्यमान तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक तथा प्रायमरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता अधिक प्रकट

हो रही है और भिन्नता कम। इसका मुख्य कारण शिक्षक व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास माना जा सकता है। शिक्षक व्यक्तित्व उनके वंशानुक्रम, वातावरण और प्रशिक्षण आदि परिवर्तियों से मिलकर विकसित होता है। वैयक्तिकता के आधार पर सभी व्यक्तियों में समानता और असमानता होती है, लेकिन उनका विकास संस्कारों के आधार पर होता है। इस प्रकार से वह शिक्षा प्राप्त करके स्वयं सफल नागरिक बनता है, फिर वह शिक्षा व्यवसाय का चुनाव करके प्रशिक्षण लेता है, जो सभी छात्राध्यापकों के लिये समान होता है। 1970 के दशक में "प्लैण्उर्स" महोदय ने अपने शोधकार्य के द्वारा "शिक्षक व्यक्तित्व" को समानता के आधार पर विकसित करने की कोशिश की है। प्रशिक्षण द्वारा, प्रत्येक अध्यापक छात्र–छात्रा में बच्चों को समझना व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षण विधियों का प्रयोग, विद्यालय प्रबन्ध करना, आधुनिक तकनीकि को बताना तथा इतिहास और वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता में सामंजस्य बनाना आदि में निपुणता प्रदान की जाती है। इस प्रकार से सभी प्रशिक्षणर्थियों का समान विकास होता है। परिणाम्स्वरूप शिक्षकों में भी अभिवृत्ति का समान विकास होता है। इसके साथ ही शिक्षक व्यवसाय के प्रति जागरूकता, समर्पण तथा विकास की दिशायें जुटाना भी समानता स्थापित करतीं हैं। शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता का होना का समर्थन "पमर" (1908), काफमैन (1954), डेवीज (1961), भार्गव (1962), कोरिगन (1963), आदि विद्वानों ने अपने–अपने शोध निष्कर्षो से किया है। अतः शोध कर्ता की यह परिकल्पना "शहरी, कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक – शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है, "स्वीकृत एवं सिद्ध होती है।

शोधकार्य की चतुर्थ परिकल्पना सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है, का परीक्षण किया गया। इस हेतु तालिका संख्याः 4.10, 4.11 तथा 4.12 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुरूष तथा महिला शिक्षकों की समस्याओं में सार्थक अन्तर आया है। नगर क्षेत्र का क्रिटीकल अनुपात 4.17, कस्बा क्षेत्र का 3.0 तथा ग्रामीण क्षेत्र का 2.04 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि शोधकर्ता ने जिन समस्याओं (मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक) को जानने की कोशिशकी है, वे अपने–अपने प्रभाव विस्तार में प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं में अन्तर स्पष्ट करती है।

1990 का दशक, संसार में परिवर्तन और परिमार्जन लाने वाला रहा है। इसने जहाँ मानव हितों का ध्यान व्यक्तिगत विकास के लिये रखा है, वहीं पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का विकास यू0 एन0 ओ0 के माध्यम् से बिना किसी , धर्म जाति और सम्प्रदाय के किया है। आज संसार के सभी स्त्री–पुरूषों की स्वतन्त्रता, समानता,

सहकारिता के जनतंत्रीक मूल्यों का विकास करने के अधिक से अधिक अवसर मिले हैं। परिणाम् स्परूप प्राइमरी शिक्षक भी इससे प्रभावित हुआ है। इनमें भौतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक परिवर्तन हुये हैं। इन शिक्षकों के समायोजन सिद्धान्त के कारण एक वर्ग आधुनिक बना, द्वितीय पुरातन के साथ आधुनिक तथा तृतीय पुरातन में संशोधन करके आधुनिक बना। अतः इस वैज्ञानिक भौतिवादी (भोगवादी) संस्कृति के प्रभाव ने प्रायमरी शिक्षकों की समस्याओं को भी प्रभावित किया है। परिणाम् स्वरूप उनकी समस्याओं में अन्तर स्पष्ट होता है। इसका समर्थन समाजिक शोधकर्ताओं "बार" (1929), डोरोथी (1952), बोबी (1962), ग्रे (1963), तेसू (1993) आदि ने किया है।

यदि हम प्राइमरी शिक्षक के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि पुरूष–महिला शिक्षक चाहें वह नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का हो, में समानता और भिन्नता होती रही है। इस पर उनके परिवार, शिक्षा, संस्कार, मूल्य तथा प्रशिक्षण के प्रभाव के कारण परिवर्तन होते हैं। यही परिवर्तन उनमें भिन्नता स्थापित करने के कारक बनते हैं। पर्यावरण वादी इस बात को मानते हैं कि व्यक्ति जिस वातावरण में, क्षेत्र में निवास करता है, व्यवसाय करता है, उसका प्रभाव उसके दैनिक जीवन पर पड़ता है। यही दैनिक प्रभाव धीरे–धीरे स्थायी होकर उनके व्यक्तित्व की विषेशता बन जाता है। यही व्यक्तित्व विषेशताऐं उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को प्रभावित करती है। परिणाम् स्परूप व्यक्तिगत रूप से सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षकों की समस्याओं में अन्तर होता है। इस प्रकार के निष्कर्ष "प्रतिभा (1983), ओइपेन (1976), झा (1990), आदि ने अपने निष्कर्षों में दिये हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "शिक्षण सृजनशीलता" पर हुई गोष्ठी ने अध्यापक पर कल्पनाशील और यथार्थवादिता के प्रभाव को भी भिन्नता का एक कारक माना है। जो शिक्षक कल्पनाशील होते हैं, वे नये–नये प्रयोग करते हैं तथा उनके द्वारा इस विशिष्टता को अध्यापक वर्ग में प्रगट करते हैं। इसके विपरीत जो लोग यथार्थवादी और परम्परागत होते हैं, वे स्वयं को शिक्षण तकनीक के अनुसार चलाते हैं और उसी को छात्रों पर भी लागू करते हैं। शिक्षक–वर्ग में एक समूह ऐसा भी होता है जो स्वयं को कल्पनाशील बनाते है। लेकिन सही निष्कर्ष न मिलने पर निराश भी शीघ्र हो जाते हैं। अतः विचारशीलता, कल्पनाशक्ति, यथार्थता, और परम्परागत विचार भी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) में भिन्नता स्थापित करते हैं। इनका समर्थन प्रशिक्षकों (स्त्री–पुरूष) मे भिन्नता स्थापित करते है। मनोवैज्ञानिक "गार्ड" (1948), थार्नडायक (1930) तथा वाटसन आदि ने किये हैं। अतः शोधकार्य की परिकल्पना सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं

होता है, पूर्णरूप से अस्वीकृत होती है।

शोधकर्ता की पंचम परिकल्पना "सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है," का परीक्षण किया गया। नगर क्षेत्र से सेवानिवृत्ति शिक्षक–शिक्षिकाओं की आंकलन तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पुरूष वर्ग का मध्यमान 25.48 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 27.88 रहा है। दोनों मध्यमानों का अन्तर 2.40 रहा है। इनका क्रिटीकल अनुपात 4.9 रहा है। यह मूल्य 0.01 विश्वास स्तर पर दोनों वर्गों में भिन्नता स्पष्ट करता है। विद्वानों के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दो शिक्षित वर्गो में या व्यवसायों में अन्तर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा आदर्श और मूल्यों के द्वारा स्थापित कर्त्तव्य परायणता के कारण होता है। दोनों वर्ग व्यवसाय से प्राप्त धन में समानता रखते हैं, लेकिन दोनों के स्वभाव में, धन के व्यय करने के तरीकों में, तथा सामाजिक और पारिवारिक आवश्यकताओं के कारण होने वाले अन्तर के कारण धन की आपूर्ति और व्यय में भिन्नता हो सकती है। धन की भिन्नता दोनों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में असमानता पैदा करती है। इसके साथ ही महिला वर्ग धन की बचत करता है, इसका सही उपयोग करता है, दिखावा न करके यथार्थ पर ही व्यय करता है तथा कम में ही कार्य–करता है जबकि पुरूष वर्ग दिखावे में विश्वास करता है, धन व्यय को अपना सम्मान मानता है, तथा धन को सम्मान का प्रतीक मानता है। इन निष्कर्षों का समर्थन "विनिकेट (1968), दयाल (1983), अंजुम (1985), सन्तोष (1991) आदि के शोध निष्कर्षो से भी मिलता है।

इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त माध्यमिक स्तर के स्त्री–पुरूष वर्ग में समस्याओं से सम्बन्धित कोई भी भिन्नता देखने को नहीं मिली है। इन क्षेत्रों के दोनों वर्ग के शिक्षकों की समस्याओं में समानता होने का कारण क्षेत्र की समानता, सोच की समानता, तथा जीवन स्तर की समानता का होना हो सकता है। क्षेत्रीय दृष्टिकोण से देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि बड़े गाँवों का विकास ही आज कस्बा का रूप ले लेता है। ये कस्बे क्षेत्र विशेष के गाँवों के प्रशासनिक सुविधायें देते हैं तथा उन पर नियन्त्रण भी स्थापित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग इन कस्बों में आकर अपने रोजाना के कार्यों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। अतः कस्बा क्षेत्र तथा गाँव क्षेत्र की भौगोलिक, साँस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी आवश्यकतायें एक जैसी होती है। यही आवश्यकतायें उनकी समस्याओं का जन्म व विकास भी करती हैं। जो शिक्षक समान पर्यावरण में रहता है और समान आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तो उसका सोच चिन्तन भी एक ही तरह का होता जाता है जो उसकी समस्याओं को

प्रभावित करता है। इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक और ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता मिलती है। वे भाषा का प्रयोग, मितव्ययिता, सामान्य रहन–सहन, परिवार तथा समाज के प्रति जागरूकता, तथा व्यवसायिक सम्मान को भुनाना, आदि में भी समानता रखते हैं। इन लोगों में बनावटीपन कम होता है और यथार्थ की बात हमेशा सोचते हैं। ये सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली को अपनाते हैं। जबकि नगर के माध्यमिक शिक्षक "उच्च जीवन" को प्रमुखता देते हैं। इन निष्कर्षों का समर्थन "पायने (1962), सिवधा (1969), सिंह (1962), चौपरा (1966), माथुर (1972), आदि विद्वानों के निष्कर्षो से होता है। अतः स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत परिकल्पना नगर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों पर सिद्ध नहीं होती है तथा कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्रों के सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर सिद्ध (स्वीकृत) होती है।

शोधकार्य की छटवीं तथा अंतिम परिकल्पना "सेवानिवृत्त शहरी (नगर) कस्बा, तथा ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं होता है," का परीक्षण किया गया। प्रस्तुत परिकल्पना में "समस्या" को केन्द्र बिन्दु मानकर शोधकर्ता ने सम्पूर्ण प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) का अध्ययन किया है। अतः हम यहाँ पर अपनी परिकल्पना में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के आधार पर सभी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की समस्याओं पर प्रकाश डालेंगे। तालिका संख्या 4.13 से स्पष्ट होता हैं कि नगर क्षेत्र बनाम ग्रामीण क्षेत्र में अन्तर है जबकि नगर क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र में कोई भी अन्तर नहीं आया है बल्कि धनात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ है।

तालिका संख्या 4.14 से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) की मनोवैज्ञानिक समस्याओं और अभिवृत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जो यह प्रगट करता है कि व्यक्ति का सोच, विचार, दूष्टि कोण तथा अवधारणायें इनकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं। तालिका संख्या 4.15 से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्ति शिक्षकों की अभिवृत्ति का उनकी शारीरिक समस्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि शारीरिक समस्या आयु के कारण अधिक उत्पन्न होती है। तालिका संख्या 4.16 में अभिवृत्ति और आर्थिक समस्या को स्पष्ट किया गया है। इसमें तीनों ही क्षेत्रों के प्रायमरी तथा माध्यमिक अध्यापक (स्त्री–पुरूष) प्रभावित हो रहे हैं। यानी धन की प्रचुरमात्रा उनके जीवन के सुखी बनाती है। इसी प्रकार से सामाजिक समस्या का प्रभाव भी धनात्मक रहा है। क्योंकि व्यक्ति का मन ही दुःख और सुख का कारण बनता है। अतः

सामाजिक परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करना ही मन को दृढ़ता प्रदान करता है। इसमें सिर्फ माध्यमिक स्तर का उच्च वर्ग ही भिन्नता रखता है। तालिका संख्या 4.18 में अभिवृत्ति और सांस्कृतिक समस्या के संबंध को स्पष्ट किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि सभी क्षेत्रों के प्रायमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों (स्त्री–पुरूष) का समायोजन साँस्कृतिक परिवर्तनों के साथ नहीं हो पा रहा है। परिणाम् स्वरूप इनमें ऋणात्मक सहसम्बन्ध स्थापित हुआ है।

यदि हम तालिका संख्या 4.19 तथा 4.20 को देखें तो स्पष्ट होता है कि नगरक्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के प्रायमरी तथा माध्यमिक (स्त्री–पुरूष) अध्यापकों में समस्या सम्बन्धी समानता है। इनमें समस्याओं का प्रीफरेन्स क्रम मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तरों पर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तरों के स्त्री–पुरूष शिक्षकों में समस्याओं का वितरण समान रूप से होता है। उनमें गुणात्मक अन्तर होता है न कि मात्रात्मक। शोधकर्ता ने शोधक्षेत्र में वार्तालाप से ज्ञात किया कि मन की भावना, विचारों की धारणा तथा भविष्य निर्धारण के भाव आदि समस्याओं के विकास में सहयोग देते हैं। यही विचार मैंकडुगल, लियोडर तथा जेम्स आदि मनोवैज्ञानिकों के रहे है।

समाज शास्त्रियों का मानना है कि सेवानिवृत्त व्यक्ति किसी भी क्षेत्र का हो, या किसी भी व्यवसाय का हो, उसे समस्याओं का सामना करना ही होता है। यदि उसके पास सभी साधन मौजूद हैं फिर भी वह अपने मानक से विचलित होता ही रहता है। इसी को आध्यात्मवादियों ने संसार का प्रभाव माना है। मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं से सभी व्यक्ति जूझते हैं अन्तर सिर्फ उनके सामना करने के तरीके में तथा समाधान में होता है। आज के मनोविज्ञानी तथा समाज शास्त्री मानव समाज के विघटन के बारे में परेशान हैं। ये विघटन इन्हीं समस्याओं की तीव्रता के कारण और इनके साथ समायोजन न हो पाने के कारण हो रहे है।

सेवानिवृत्त माध्यमिक तथा प्रायमरी स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का विवेचन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण समान होने पर भी, माध्यमिक तथा प्रायमरी स्तर और पुरूष तथा स्त्री वर्ग के व्यक्तित्व तथा स्वभाव बनावट की भिन्नता, अभिवृत्ति निर्माण तथा समस्याओं का सामना करने में भिन्नता स्थापित करते हैं। समस्यायें समान होती हैं, लेकिन उनके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को शिक्षक को ही महसूस करना होता है। अतः समस्या प्रमुख नहीं होती है बल्कि वह व्यक्ति प्रमुख होता है, जो समस्या से प्रभावित हो

रहा है। इस प्रकार से शोधकर्ता ने समस्याओं और अभिवृत्तियों पर सेवानिवृत्त शिक्षकों से सम्बन्धित निम्न निष्कर्ष ज्ञात किये हैं :–

1.) सेवानिवृत्त अध्यापक – अध्यापिका वर्गों में अभिवृत्ति का विकास एवं निर्माण समानता लिये हुये पाये गये, लेकिन उनका प्रकाशन किन्ही क्षेत्रों में भिन्नता लिये हुये हैं।

2.) कुछ अभिवृत्तियों में पुरूष वर्ग सेवानिवृत्त अध्यापक प्रमुख रहे हैं और कुछ में अध्यापिका वर्ग।

3.) अभिवृतित्त का सम्बन्ध सेवानिवृत्ति की समस्याओं के साथ धनात्मक रहा है चाहे वे नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक या प्राइमरी स्तर के हों।

4.) पुरूष तथा महिला अध्यापकों में सेवानिवृत्त समस्यायें समान रूप से और समान स्तर पर समानता लिये हुये पाई गई।

5.) शिक्षा के दोनों ही स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों में समस्याओं के गुणात्मक अन्तर स्थापित हुये हैं, मात्रात्मक नहीं।

6.) सबसे प्रमुख समस्या मनोवैज्ञानिक रही है और सबसे कमजोर समस्या साँस्कृतिक रही है।

7.) सेवानिवृत्त शिक्षक या शिक्षिका, सामाजिक प्राणी होने के कारण अपनी वैयक्तिकता से प्रभावित होते हैं। अतः उनकी अभिवृत्ति और समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उनके निष्कर्षों में अन्तर आना स्वाभाविक हो जाता है। इसलिये शोधकर्ता ने अध्ययन अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है ताकि उनका सही आँकलन प्रस्तुत हो सके। इस प्रकार से शोधकर्ता की परिकल्पना शिक्षक समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है, स्वीकृत एवं सिद्ध होती है।

शोध के विस्तुत निष्कर्ष :–

शोधकार्य की परिकल्पना की स्वीकृत तथा अस्वीकृति की सिद्धि का वर्णन करने के पश्चात् अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षों को प्रस्तुत करना शोधकर्ता का प्रमुख कर्त्तव्य हो जाता है। शोधकार्य के कुछ तथ्यात्मक निष्कर्ष निम्नांकित हैं :–

1.) प्रस्तुत अध्ययन झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों में सेवानिवृत्त हुये प्राइमरी तथा माध्यमिक स्त्री–पुरूष शिक्षकों पर किया गया है। इनको नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विभक्त करके तथ्यों का संकलन किया गया है। इनकी अभिवृत्तियों को जीवन के प्रति, संतान के प्रति, सामाजिक सम्मान के प्रति, सहयोगियों के प्रति तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति और समस्याओं को मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक

तथा साँस्कृतिक आदि क्षेत्रों में बाँट कर अध्ययन किया गया है। इन दोनों परीवर्तियों में पूर्ण सार्थक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है। इसका कारण शिक्षक व्यवसाय का प्रशिक्षण तथा शिक्षक की कर्तव्य निष्ठा होता है। विद्यार्थी (1978), ने स्पष्ट किया है कि शिक्षक जीवन भर बच्चों के भविष्य को बनाता है, लेकिन संकुचित दृष्टिकोण (व्यवसाय) के कारण वह अपने साथ न्याय नहीं कर पाता है। जिससे सेवानिवृत्ति के पश्चात् वह समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। अतः सेवानिवृत्त अध्यापक को समस्याओं से निजात दिलवाने के लिये या उनके साथ सकारात्मक दृष्टिकोंण अपनाने के लिये निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये।

(अ) शिक्षकों को समान वेतन–भत्ते, पैन्सन, मेडिवलेम, ग्रेच्युटी आदि की व्यवस्था प्रशासन को करनी चाहिये चाहे वह शिक्षक नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का हो।

(ब) शिक्षक, एक व्यवसायिक जाति, के रूप में परिभाषित होना चाहिये, चाहे वह उच्च शिखा, माध्यमिक या प्रायमरी स्तर का हो। इससे सभी में समानता, सहयोग और भाई चारे का भाव जागृत होता है।

(स) शिक्षकों को स्वावलम्बी तभी बनाया जा सकता है जब प्रशासन एवं समाज उनको मान सम्मान दे और उनके कार्य को नौकरी व्यवसाय न मानकर "मानवसेवा" माने। इस प्रकार से समाज के सकारात्मक सोच के कारण उनकी समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जायेगा।

(द) प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्तियों में स्त्री–पुरूष आधार पर कोई भी भिन्नता नहीं रही है। लेकिन नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में अन्तर रहा है। अतः हमें शिक्षकों के क्षेत्र या स्तर पर नहीं बाँटना चाहिये बल्कि "शिक्षक" मानकर ही उसके प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिये।

2.) शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का विशेषज्ञ माना जाता है। जिसके आधार पर वह बच्चों को उनकी मन चाही शेप देता है और उनका सर्वागींण विकास भी करता है। इसी मनोविज्ञान का प्रयोग सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं की अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने के लिये और समस्या समाधान से निम्न प्रकार से कर सकता है :–

(अ) जीवन के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापकों को व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये, जिससे उनके मन में जीवन के प्रति मोह विकसित न हो सके बल्कि परिवर्तन का भाव विकसित हो।

(ब) भारतीय संस्कृति की विशेषता "कर्तव्य करो, फल की चिन्ता न करो," पर पूर्ण

विश्वास रखना चाहिये। इससे शिक्षक के मन में निराशा के भाव, और सफलता के भाव जागृत न हो सकेंगे।

(स) शिक्षा का अर्थ व्यवसाय निपुणता के साथ–साथ मानवीय गुणों का विकास भी मानना चाहिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों के द्वारा समाज और राष्ट्र का भला कर सकता है।

(द) मनोविज्ञान का ज्ञान व्यक्ति के व्यवहार मूल्याँकन से प्रारम्भ होकर सकारात्मक निदान तक समाप्त होता है। इससे सेवानिवृत्त व्यक्ति (स्त्री–पुरूष) शिक्षक स्वयं का अध्ययन आसानी से कर सकता है। और उसके आधार पर अन्य का अपने प्रति सकारात्मक व्यवहार बना सकता है।

(य) परिवार या समाज से मिले संस्कार या व्यवहार को मनोविज्ञान जानने वाला व्यक्ति डिफेन्स मैकेनिज्म के द्वारा सकारात्मक बना सकता है। इस प्रकार से उसमें निराशा के भाव, तनाव, भावना ग्रन्थियाँ आदि उत्पन्न नहीं हो पायेंगी और मनोवैज्ञानिक रूप से वे बीमार नहीं हो पायेंगें।

3.) सेवानिवृत्त शिक्षकों को अपनी क्रियाशीलता को जारी रखना चाहिये ताकि उनके अनुभव, ज्ञान और विचार परिपक्वता से समाज लाभान्वित हो सके और सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे लोग निष्क्रिय भी न रहे। शोधकर्ता निम्न बातें आवश्यक मानता है :–

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षक–शिक्षिकायें अपने परिवार में, पड़ोस में और समाज में बच्चों में नागरिक तथा मानवीय गुणों का विकास करने में सहयोग दें, ताकि बच्चों में नागरिक चेतना का भाव विकसित हो सके।

(ब) आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा का वातावरण बनायें, इससे बच्चों में शिक्षकों के प्रति तथा शिक्षा के प्रति सम्मान स्थापित हो सके।

(स) भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के विकास को सेवानिवृत्ति के पश्चात् आसानी से किया जा सकता है। उनमें सत्यं, शिवम् तथा सुन्दरम् के भावों का विकास अपने सोउद्देश्य तर्कों के द्वारा किया जाना चाहिये।

(द) शिक्षा प्रसार, परिवार नियोजन, अहिंसा का प्रचार सेवानिवृत्ति के पश्चात् शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। इससे स्वयं को क्रियाशील रखकर सामाजिक शिक्षा का प्रसार भी होगा।

(य) बच्चों में मनोरंजन के साधन, देशाटन, खेलकूद, शारीरिक सौष्ठव और साँस्कृतिक पर्व आदि का आयोजन करके स्वंय को क्रियाशील बनायें ताकि स्वयं को सेवानिवृत्ति की भावना ग्रन्थि से दूर रख सकें।

4.) अभिवृत्ति और समस्याओं की सहसम्बन्ध तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर पर धनात्मक सम्बन्ध रहा है। अतः सेवानिवृत्त अध्यापकों (स्त्री–पुरूष) में समानता अधिक रही है और भिन्नता कम। सेवानिवृत्त शिक्षकों में स्वतन्त्र भाव, प्रभुत्व, सामाजिकता, अनुशासन, तनाव आदि विशेषतायें देखने को मिलती है। ये सामान्य व्यक्तियों की विशेषतायें हैं, लेकिन इनकी स्वीकृति व्यक्ति में सक्रियता तथा अस्वीकृति व्यक्ति में निष्क्रियता का सृजन करती है। अतः सेवानिवृत्त शिक्षक को समाज द्वारा स्वीकार करके भविष्य का नेतृत्व पल्लवित किया जा सकता है।

5.) नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्रों से सेवानिवृत्त हुये शिक्षकों की अभिवृत्ति समान रही है। इसमें प्रशासन तथा समाज को समान सम्मान के भाव का विकास करना चाहिये। इनके सम्मेलन के आयोजन होने चाहिये ताकि सभी की समस्याओं का समाधान हो सके। इस हेतु शोधकर्ता निम्न बातों पर ध्यान आकर्षित करता है :–

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षकों का एक संगठन बने जो सभी की समस्याओं का समाधान समान रूप से करें।

(ब) सेवानिवृत्त शिक्षकों को सामयिक निर्देशन एवं परामर्श मिलता रहे ताकि वे अपने मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दुष्परिणामों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण बना सकें।

(स) परिवार में उनको सम्मान, स्वतन्त्रता तथा अधिकार मिले, जिससे उनके मन से "अनवान्टेड व्यक्ति" का दुर्भाव निकल सके।

(द) सरकार को, सामाजिक संस्थाओं को समय–समय पर गोष्ठियाँ, सेमीनार, वार्तायें आयोजित करनी चाहिये, जिसमें ये लोग भाग लेकर अपने विचारों को रख सकें और हम उनका हल खोज सकें।

6.) प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सेवा निवृत्त शिक्षकों को दोहरी भूमिका का सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी निर्वाह करना होता है। एक तरफ उनको परिवार का बोझ ढोना होता है तथा दूसरी तरफ समाज की अपेक्षाओं को पूरा करना होता है। इस हेतु सामान्य तथ्य प्रस्तुत हैं :–

(अ) सेवानिवृत्ति के समय "प्रतिभा पलायन" को शिक्षा के क्षेत्र में भी रोकना चाहिये ताकि उनके परिपक्व अनुभवों से राष्ट्र का लाभ हो सके।

(ब) सेवानिवृत्ति के समय सभी प्रकार के देयों का भुगतान एकदम से होना चाहिये ताकि वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करके सन्तोष प्राप्त कर सकें।

(स) आर्थिक स्वावलम्बन, हेतु सेवानिवृत्त व्यक्ति को समय पर पैन्सन का, बैंक द्वारा भुगतान होना चाहिये ताकि वे खजाने की बेईमानी से बच सकें और ससम्मान जीवन यापन कर सकें।

(द) समय–समय पर चिकित्सकों द्वारा कैम्प लगाये जायें ताकि उनमें वे निःशुल्क उनमें वे निःशुल्क शारीरिक जाँच करवा सकें और आने वाले रोगों से अपना बचाव कर सकें।

(य) सेवानिवृत्त शिक्षकों को आध्यात्मिक केन्द्रों पर भी जाना चाहिये ताकि उनमें "सदभाव" का विकास हो सके। इस प्रकार से सुख तथा दुःख का प्रभाव निषक्रिय हो जायेगा।

(र) वर्तमान पीढ़ी और समाज के बीच "जनरेसन गैप" की बात हमें समाप्त करना चाहिये। क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। दोनों को ही समाज, और राष्ट्र के हित में कार्य करना है। अतः बदले हुये मूल्य औद आदर्शों में अच्छाई खोज कर स्वीकार करें ताकि मानव समाज समृद्धि पा सके।

शिक्षारत अध्यापकों तथा अन्य सेवानिवृत्त को सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व उन सभी सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष के लिये हो सकता है जो शासकीय अर्द्धशासकीय, तथा अशासकीय सेवाओं में लगे हुये हैं या सेवानिवृत्त होने वाले हैं, या सेवानिवृत्त हो गये हैं। शिक्षकों को आधार मानकर जन साधारण के सोच तथा जीवन–यापन में आने वाली समस्याओं को केन्द्र मानकर यह अध्ययन किया गया है। शिक्षक एक सामाजिक प्राणी है, साथ ही साथ वह एक निर्देशन देने वाला भी है जिससे भविष्य के नागरिक तथा राष्ट्र निर्माता तैयार होते हैं। अतः शोधकर्ता अपने अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है :–

(1) महात्मा गाँधी का कथन है कि व्यक्ति की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिये। अतः शिक्षा के क्षेत्र से जो शिक्षक सेवानिवृत्त हुये हैं उनको चाहिये कि वे जो सलाह, आदर्श अन्य लोगों को बता रहे हैं, उनका व्यवहार में पालन स्वयं करें, ताकि उनसे प्राप्त निष्कर्षों से सभी लाभान्वित हो सकें। शिक्षक अपनी सेवा में सभी छात्र–छात्राओं को अच्छा तथा आदर्श बनने की शिक्षा देता रहता है, लेकिन वह स्वयं कितना आदर्शवान है, या अपने बनाये गये आदर्शों का कितना पालन करता है, पर विचार करें। इस तरह से सेवानिवृत्त शिक्षक को अपनी कथनी और करनी में समानता रखकर कार्य (जीवन–यापन) करना चाहिये ताकि उसका व्यक्तित्व एक दिखावा या काल्पनिक बनकर न रह जाये बल्कि वास्तविक लगे।

(2)– शिक्षा का प्रारूप पूर्ण भारतीय होना चाहिये। इसमें शिक्षक का व्यक्तित्व भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से ओत–प्रोत हो जिससे वह बच्चों को समझ सके, प्रेरित कर सके, और शारवत मूल्यों का उनमें समावेश कर सके। यह कार्य सेवारत शिक्षक ही

नहीं करेंगे बल्कि सेवानिवृत्त शिक्षक अपने परिवार में, पड़ोसियों में, मित्रों में तथा अन्य सामाजिक व्यक्तियों को अपने अनुभव तथा ज्ञान से लाभान्वित कर सकते हैं। सेवानिवृत्त शिक्षक का सबसे बड़ा कार्य निरीक्षण तथा परिवीक्षण करना होता है। इससे समाज के सभी वर्गों तथा आयुवर्ग के लोगों को उपयुक्त दिशा निर्देश प्राप्त होता रहता है।

(3) आज मनोविज्ञान का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। जीवन को सफल बनाने के लिये सहयोग, सहानुभूति तथा प्रतियोगिता की आवश्यकता होती है। सेवानिवृत्त व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने ज्ञान, अनुभव के द्वारा अन्य लोगों का भरसक सहयोग करे तथा जो बच्चे या लोग पिछड़े हैं उनके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करके उनके मनोबल को आगे बढ़ायें, साथ ही साथ उनको, प्रतियोगी (मेहनत) करने का निर्देश भी दें। इस तरह से सेवानिवृत्त शिक्षक अपने मनोविज्ञान का प्रयोग करते हुये स्वयं को क्रियारत रख सकेगा।

(4) आज सेवानिवृत्ति का अर्थ "जीवन का अन्त" बदल चुका है। इस का नवीन अर्थ जीवन को नई दिशा देना और अपने बारे में शांतिपूर्वक बैठकर सोचना तथा उन सभी इच्छाओं को पूरा करना, जिनको आपने पदानुरूप न समझकर छोड़ दिया था। मनोचिकित्सकों का मत है कि सेवानिवृत्ति की तैयारी स्वंय व्यक्ति को भी करनी है और साथ ही परिवार के सदस्यों को भी। अतः हमारा सुझाव है कि सेवानिवृत्ति शिक्षक या जन सामान्य को, मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करना और परिवार के अन्य सदस्यों को इसमें सहयोग बनाये रखना, आवश्यक हो जाता है।

(5) सेवानिवृत्त शिक्षक को अधिक क्रियाशील होकर घर–परिवार को मद्द करनी चाहिये। इससे उनके शारीरिक अवयव सक्रिय रहेंगे और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। मनोचिकित्सक डॉ0 अग्रवाल का भी मत है कि सेवानिवृत्त लोगों को सुबह जग कर घर के उपयोगी कार्यों को निपटाना चाहिये, पूजापाठ करना चाहिये, उपयुक्त नास्ता तथा भोजन लेना चाहिये तथा बच्चों को पढ़ने में सहायता करनी चाहिये और हलके व्यायाम करके शरीर को स्वस्थ्य रखना चाहिये।

(6) सेवानिवृत्त व्यक्ति को अधिक से अधिक आत्मनिर्भर बनना चाहिये ताकि परिवारी सदस्य उसको बोझा न समझे बल्कि उनको उपयुक्त सम्मान भी दें। उनको घर के कार्यों में हाथ बढ़ाना चाहिये और ऐसे कार्यक्रम बनाये जो परिवार के लिये, बच्चों के लिये और समाज के लिये लाभदायक भी हों।

(7) आज भौतिकवादी संस्कृति के प्रभाव में सम्पूर्ण संसार आ रहा है। यदि सेवानिवृत्त

शिक्षक अपने ट्रेडिसनल मूल्यों पर ही अड़ा रहता है, तो वह अपने और परिवार के बीच पीढ़ी का अन्तर स्थापित कर लेता है, जिसके कारण वह परिवार से कट सा जाता है। अतः स्वयं को पुराने विचारों से दूर रखकर नवीन के साथ जुड़ना चाहिये ताकि जीवन का आनन्द सभी के साथ बाँट कर लिया जा सके।

(8) आज शिक्षा का पूंर्ण व्यवसायीकरण हो चुका है। अतः नई पीढ़ी अपनी उपयोगिता के आधार पर शिक्षा प्राप्त करती है। इसमें यदि सेवानिवृत्त शिक्षक अपनी पसन्द या ना पसन्द को लागू करना चाहता है, तो वह रूकावट या हतासा ही पैदा करती है। अतः बच्चों के सोच में सशक्त आधार देकर उनको प्रोत्याहित करें ताकि वे अपनी पसन्द और ना पसन्द के द्वारा जीवन को आगे बढ़ा सकें।

(9) सेवानिवृत्त शिक्षक को सामाजिक–धार्मिक संस्थाओं का क्रियाशील सदस्य बनकर उनका सम्बर्द्धन और मार्गदर्शन करना चाहिये। इससे वे अपने अर्जित ज्ञान का लाभ भी संस्था को दे सकेंगे और उनके आधार को सक्रिय तथा दृढ़ आधार भी प्रदान कर सकेंगे। इस कार्य में मन लगाकर, कार्य करने से स्वयं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा संस्था को निःशुल्क, विश्वासी, सहयोगी, कार्यकर्ता भी प्राप्त होगा।

(10) सेवानिवृत्त शिक्षक या अन्य व्यक्ति को "फंकशनल" रोगों से बचना चाहिये। इस रोग का जन्म काल्पनिक विचारों से उत्पन्न विभिन्न "भ्रम और व्यामोह" से होता है, जो धीरे–धीरे सेवानिवृत्त व्यक्ति को मनोदैहिक रोगी बना देते हैं। इसमें नकारात्मक मानसिक सोच के कारण व्यक्ति में उच्च्य रक्तचाप, मधुमेह, एन्जायना, हार्टअटैक, एलर्जी, जोड़ो के दर्द, दमा, श्वाँस फूलना, पैप्टिक अल्सर, नपुंसकता, मासिक बन्द होना, गंजापन आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अतः इन लोगों को अपने अर्ध चेतन मन में भ्रम और व्यामोह को कोई भी स्थान नहीं देना चाहिये। इस प्रकार से वे समय तथा धन दोनों की बर्बादी को बचाकर स्वयं भी शान्ति से रह सकते हैं और परिवार को भी सेवानिवृत्त चिन्ता से मुक्त करा सकते है।

(11) शोधकर्ता के अनुसार सेवानिवृत्त शिक्षकों को निम्न बातों पर ध्यान करना चाहिये :–

(अ) जीवन में अनुशासन का पालन प्रत्येक क्षेत्र में करना चाहियें ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सही रहे।

(ब) मेडिक्लेम पालिसी का उपयोग करें।

(स) अपने मित्रों से मिलें, गपशप करें और उनके घर जायें और बुलायें।

(द) प्रतिदिन व्यायाम, योगा अवश्य करें।

(य) सक्रियता बनाये रखने के लिये सामाजिक कार्यों को करें।

(र) पुराने दिनों की बातों को न करें, जब भी करें तो वर्तमान के लाभ की बातें करें।

(ल) पुराने और नवीन विचारों में सामंजस्य बिठाकर जीवन का आनन्द लें, ताकि पूरा परिवार तुम्हारा बना रहे।

(व) बच्चों को टोकें नहीं, अपने सिद्धान्त थोपें नहीं, बल्कि तर्क की कसौटी पर कसकर उपयोगी दृष्टिकोण अपनायें।

यदि सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकायें उपर्युक्त सुझावों का सामान्य तौर पर पालन करते हैं तो उनका मानसिक सोच सकारात्मक होकर परिवार तथा समाज के लिये सहायक होगा तथा वे अपनी उन इच्छाओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति भी कर सकते हैं जिनकी पूर्ति इस अवस्था में आवश्यक होती है। इसके साथ उनकी मनोवैज्ञानिक , शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदि समस्याओं का समाधान भी स्वतः हो सकेगा।

शोधार्थियों हेतु सुझाव

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक व्यवसाय के साथ जुड़े उन प्रायमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापकों का, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवेसों के आधार पर, अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में यह जानने की कोशिश की गई है कि, सेवानिवृत्त अध्यापक अपनी अभिवृत्ति और समस्याओं के साथ कैसे जीवन व्यतीत करता है। इस हेतु शिक्षा स्तर भिन्नता, यौन भिन्नता, क्षेत्रीय परिवेश भिन्नता आदि के प्रभाव को आंकलन परिवर्ती के रूप में लेकर उनकी समस्याओं के प्रभाव का आंकलन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्नों को जन्म दिया है, जिनके लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है। इससे अध्ययन को भी पूर्णता मिलेगी तथा नये आयामों पर अध्ययन होकर सेवानिवृत्त शिक्षकों के जीवन यापन में लाभ मिलेगा। अतः भविष्य के शोधार्थियों के लिये प्रस्तुत नये तथ्य आकर्षण के केन्द्र बन सकते हैं :–

1.) अध्ययन न्यादर्श सिर्फ 600 सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर किया गया है। इसमें अधिक उपयुक्तता और वैद्यता लाने के लिये बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।

2.) परिवेश को, एक मुख्य परिवर्ती मानकर, स्वतन्त्र रूप से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

3.) वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर गुणात्मक शिक्षा का प्रसार करने वाले केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय तथा विद्या–भारतीय आदि शिक्षण संस्थाओं से निवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4.) सरकारी तन्त्र तथा निजी शिक्षण संस्थाओं से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति, समस्यायें तथा आर्थिक सामाजिक स्तर आदि परिवर्तियों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5.) प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त सवर्ण तथा असवर्ण अध्यापकों की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उत्पन्न समस्याओं और जीवनयापन का अध्ययन किया जा सकता है। इससे अध्यापक समाज में, सामाजिक समानता तथा एकरसता स्थापित की जा सकती है।

6.) सामाजिक – सॉंस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण सेवानिवृत्त व्यक्तियों में समायोजन स्थापना की समस्या विकराल रूप ले रही है। अतः विभिन्न क्षेत्रों में सेवानिवृत्त अध्यापकों का समायोजन तथा अनुकूलन का अध्ययन भी किया जा सकता है।

7.) प्रस्तुत अध्ययन में सबसे अधिक प्रभाव "मनोवैज्ञानिक" समस्या का रहा है। इसके कारण, सामयिक या वंशानुक्रमीय हो सकते हैं, का अध्ययन किया जा सकता है, ताकि सेवानिवृत्त अध्यापकों के मन से "सेवानिवृत्ति का भय" निकाला जा सके।

8.) प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र बुन्देलखण्ड का झाँसी जनपद रहा है जो सभी दृष्टियों से पिछड़ा माना जाता है। अतः इस अध्ययन को विकसित, विकासशील तथा अर्थविकसित क्षेत्रों पर भी किया जा सकता है ताकि अध्यापक समस्या का समाधान सकारात्मक रहे और ये लोग सुखी जीवन–यापन कर सकें।

9.) शोधकार्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है तथा स्वनिर्मित उपकरण के द्वारा तथ्यों का आँकलन किया है। इसी अध्ययन को एक वृहद आकार पर सभी का साक्षात्कार लेकर समस्याओं को जाना जाये, और फिर मुख्य समस्याओं पर एक प्रश्नावली तैयार की जाये इसके पश्चात् एक प्रश्नावली उनसे भरवाई जाये, तथा एक पर स्व निरीक्षण के द्वारा आंकलन किया जाये। इस प्रकार से प्राप्त तुलनात्मक निष्कर्ष सेवानिवृत्त अध्यापकों को एक नई दिशा दे सकते हैं ताकि उनका जीवन सुखमय बन सके।

10.) प्रस्तुत अध्ययन को सेवानिवृत्ति के आधार पर नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में बाँटा गया है। जबकि ये लोग विभिन्न क्षेत्रों के रहने वाले रहे हैं, सिर्फ व्यवसाय के लिये क्षेत्र विशेष में बस गये हैं। इनके व्यक्तित्व गठन, व्यवहार, सोच, तथा निर्देशन आदि पर उनके पारिवारिक तथा शिक्षा प्राप्त क्षेत्रों का प्रभाव रहा है। अतः इस भिन्नता को ध्यान में रखकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

11.) सेवानिवृत्त शिक्षकों के मूल्यों, अभिवृत्ति और समस्याओं को लेकर अध्ययन किया जा सकता है ताकि ट्रेडिसनल मूल्य और परिवर्तित मूल्यों, उनकी सोच तथा समस्याओं पर क्या प्रभाव डालते हैं , पता लगा सके।

12.) प्रस्तुत अध्ययन में महिलायें सकारात्मक अभिवृत्ति वाली और कम समस्या वाली आई है, अतः इनके कारणों का अलग से अध्ययन किया जा सकता है।

13.) उत्तर प्रदेश शासन की आरक्षण नीति के अन्तर्गत अति पिछड़े आरक्षण नीति के आधार पर प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ताकि आरक्षण नीति के दुष्प्रभाव को शिक्षा जगत से निजात मिले और सेवानिवृत्त सभी शिक्षकों के सम्मान में बृद्धि होगी।

संक्षिप्तिका

"बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी एवं माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

से

"शिक्षा शास्त्र" में विद्या वारिधि (पी०एच०डी०)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

<u>शोध – प्रबन्ध</u>

निर्देशक :

डॉ० आर० पी० पाण्डेय,

रीडर, बी०एड० विभाग

बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी।

शोधकर्ता :

रमाकान्त तिवारी

शिक्षा – संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

दिसम्बर 2001

प्रस्तावना

सम्पूर्ण मानव समाज, भारतीय संस्कृति की सनातनता, चिरस्थायित्वता और ओजस्विता से परिचित है। इसमें काल एवं स्थानगत भेदों को आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता है। इस संस्कृति की गुणात्मक पहचान महान् शिक्षकों के द्वारा समय–समय पर दिये गये उपदेशों (शिक्षा) की व्यवहारिकता से होती रही है। अतः आज भी मानव समाज का निर्माण, उत्थान एवं विकास में शिक्षकों का विशेष महत्व है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1990) के द्वारा आयोजित सेमीनार "अध्यापक शिक्षा का नवीनीकरण" में डॉ0 पाण्डेय (नीरसता), प्रो0 मलिक (गिरावट), प्रो0 टी0 पति (असमायोजन) आदि ने शिक्षकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार से शिक्षकों की गुणवत्ता, दक्षता और चरित्र आदि विशेषताओं पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिये (कोठारी आयोग 1966)।

शिक्षकों की भूमिका के प्रति समाज की जागरूकता सिर्फ कार्यरत शिक्षकों के प्रति ही देखने को मिलती है, अवकाश प्राप्त शिक्षकों के प्रति नहीं। शोध कर्ता स्वयं शिक्षा विभाग से जुड़ा हुआ है, अतः उसने अवकाश प्राप्त शिक्षकों के संगठनों से मौखिक वार्तालाप करके उनके विभिन्न दृष्टिकोणों तथा समस्याओं की जानकारी प्राप्त की है। इन शिक्षकों की शक्ति को सामाजिक विकास के प्रति उत्साहित करके समाज सुधार किया जा सकता है। अतः इनकी मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक साँस्कृतिक समस्याओं को जानकर इनके जीवन सम्बन्धी, बच्चों के प्रति, सम्मान के प्रति, सहयोगियों के प्रति एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाया जा सकता है। इस प्रकार से अवकाश प्राप्त शिक्षकों के अनुभवों से हमारा राष्ट्र, समाज और नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच उत्पन्न दरार को पाटने में सहयोगी बन सके। इसीलिये डॉ0 राधाकृष्णनन् (विश्वविद्यालय आयोग) ने शिक्षक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान माना है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तान्तरण करता है। प्रावधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है। वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखाता है, बल्कि सारे राष्ट्र का सदैव मार्ग निर्देशन करता है। "पामर (1908), डेवीज (1961), कोरिगन (1963), मेहरोत्रा (1973), अहुलूवालिया (1974), वीनमन (1984), तेसू (1993) आदि विद्वानों ने अभिवृत्ति का अध्ययन विभिन्न आयामों में करके महत्व स्पष्ट किया है।"

इस परिपेक्ष्य में सेवानिवृत्त शिक्षकों का महत्व और भी बढ़ जाता है। अतः शोधकर्ता ने उनकी समस्याओं का और अभिवृत्ति का अध्ययन करना आवश्यक समझा, ताकि उनके संचित ज्ञान और परिपक्व अनुभव का सदुपयोग हो सके और उनकी समाज के लिये सकारात्मक भूमिका निरन्तर बनी रहे है। अतः शोधकर्ता ने सेवानिवृत्त शिक्षकों पर ध्यान केन्द्रित कर प्रस्तुत शोध कार्य सम्पन्न किया।

समस्या के उद्देष्य :–

1. सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. सेवानिवृत्त प्राइमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का पता लगाना।
3. सेवानिवृत्त कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का पता लगाना।
4. सेवानिवृत्त ग्रामीण क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. सेवानिवृत्त शहरी क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की समस्याओं का अध्ययन करना।
6. सेवानिवृत्त कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की समस्याओं का अध्ययन करना।
7. सेवानिवृत्त ग्रामीण क्षेत्र के प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की समस्याओं का अध्ययन करना।
8. सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों–शिक्षिकाओं की मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और सॉंस्कृतिक आदि समस्याओं का अध्ययन करना।

शोधकर्ता की परिकल्पनायें :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित परिकल्पनायें निर्धारित की गई है।

1. सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. शहरी, कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता हे।
5. सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है।
6. सेवानिवृत्त शहरी, कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है।

शोध न्यादर्श :–

1– शोध कार्य का क्षेत्र बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों को बनाया गया है।

2– शोध तथ्य संकलन 600 सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर किया गया है।

3– पाँच तहसीलों से नगर क्षेत्र (200), कस्बा क्षेत्र (200), तथा ग्रामीण क्षेत्र (200) पर तथ्य संकलन किया गया है।

शोध प्रविधि :–

1– मानक सर्वेक्षण विधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया।

2– स्तरीकृत यादृच्छित प्रतिचयन का तथा लाटरी पद्धति का प्रयोग।

शोध उपकरण :–

1– स्वविकसित अभिवृत्ति अनुसूची।

2– स्वविकसित समस्या अनुसूची।

तथ्य संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

तथ्य संकलन नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि से सेवानिवृत्त हुये प्राइमरी तथा माध्यमिक स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर अलग – अलग से किया गया। स्वनिर्मित एवं विकसित अभिवृत्ति तथा समस्या प्रश्नावली का प्रयोग एक के बाद दूसरे का करके, किया गया। इसके पश्चात् मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, टी, परीक्षण, सहसम्बन्ध तथा प्रतिशत आदि साँख्यिकी का प्रयोग करके साँख्यिकीय विश्लेषण किया। इसके पश्चात् निष्कर्षों की व्याख्या करते हुये परिकल्पनाओं को परीक्षित किया।

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य "सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना है", का परीक्षण किया गया। शोधकर्ता ने इसके अन्तर्गत सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जीवन के प्रति अभिवृत्ति, सहयोगियों के प्रति अभिवृत्ति, तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति जानने की कोशिश की है। समस्या के चयन के समय शोधकर्ता ने विभिन्न क्षेत्रों के सेवानिवृत्त अध्यापकों से विचार–विमर्श किया था कि उनकी अभिवृत्ति के कौन–कौन से क्षेत्र हो सकते हैं। निष्कर्षात्मक रूप से उपर्युक्त क्षेत्रों में व्याप्त उनकी अभिवृत्ति जानने की कोशिश की, तो पाया कि अध्यापक स्त्री हो पुरूष दोनों की अभिवृत्तियाँ उपर्युक्त क्षेत्रों में समान रूप से विकसित होती है। इसका प्रमुख कारण है भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पारिवारिक प्रभाव। हम भारतीय कितने ही आधुनिक तथा पाश्चात्य सभ्यता में रंग जाये, लेकिन हमारी सोच अपनी मूल सभ्यता, मूल्यों और आधारों से हट नहीं पाती हैं। परिणाम् स्वरूप हमारा सोच सकारात्मक होकर परिवार से प्रारम्भ होता है और "वसुधेव कुटुम्बकम्" पर पहुँचता है। इसी भाव का प्रदर्शन शोध प्रयुक्त शिक्षक–शिक्षिकाओं ने अपनी अभिवृत्ति प्रदर्शन में किया है।

तालिका नं0 4.1, 4.2, 4.3, के आधार पर स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अभिवृत्ति सम्बन्धी समानता स्थापित हुई है। इसका कारण दोनों शिक्षक स्तरों के शिक्षकों का सोच समानता रखता है और उसका निर्माण एक ही प्रकार के पर्यावरण, आदर्श तथा शिक्षा के प्रति समान धारणा न व्याप्त होना है। यदि शिक्षक में लगन, परिश्रम तथा समर्पण के भाव हैं, तो वह किसी भी स्तर का शिक्षक हो उसका सोच सभी क्षेत्रों में समानता रखने वाला ही होता है। इसका समर्थन "डेवीज (1961), कोरिगन (1963), जैकब (1968) आदि प्रभृति विद्वानों ने भी किया है।

इसके साथ ही तालिका सं0 4.4, 4.5, 4.6 में प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरों के शिक्षकों की अभिवृत्ति को यौन भिन्नता के आधार पर आँकलन करके प्रस्तुत किया गया है। इनके मध्यमान से स्पष्ट होता है कि अभिवृत्ति निर्माण, विकास तथा सम्बर्द्धन में स्त्री तथा पुरूष शिक्षक समानता लिये हुये हैं। सिर्फ एक स्थान पर

माध्यमिक स्तर के स्त्री–पुरूष तथा प्रायमरी स्तर के स्त्री–पुरूष की अभिवृत्ति में असमानता देखने को मिली है और शेष में नहीं। इसका कारण शिक्षकों का पारिवारिक प्रभाव, शिक्षा का प्रभाव और क्षेत्रीयता का प्रभाव हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवेशों से सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति को जानने की कोशिश की गई है। अतः जो शिक्षक–शिक्षिकायें शिक्षण में रूचि रखते हैं या शिक्षण को ही अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं वे किसी भी क्षेत्र के रहने वाले होते है और किसी भी क्षेत्र में जाकर कार्य करते हैं। इस प्रकार से उनके नगर क्षेत्र का रहन–सहन, शिक्षा–दीक्षा और सोच आदि का प्रभाव ग्रामीण या कस्बा क्षेत्र के शिक्षण व्यवसाय को प्रभावित करता है। अतः उनकी अभिवृत्तियों में अन्तर आना स्वाभाविक है, जिसको विद्वानों ने सामान्य नहीं माना है। इसका समर्थन मेहरोत्रा (1973), अहलूवालिया (1974), वीनमन (1984) तथा तेसू (1993) आदि विद्वानों ने अपने शोध निष्कर्षों में किया है।

अभिवृत्ति निर्माण पर व्यक्ति की मानसिक योग्यता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। आज शिक्षण–प्रशिक्षण को "कौशल" मानकर व्यवसाय अपनाने को कहा गया है। इसीलिये अध्यापक चयन प्रशिक्षण टेस्ट, तथा अध्यापक चयन टैस्ट के आधार पर सम्पन्न होते हैं। उच्च मानसिक योग्यता वाले व्यक्तियों से अधिक क्रियाशीलता, धैर्यवानता, सामयिक शिक्षण साधनों का प्रयोग करना तथा बच्चों के प्रति समर्पण आदि की अधिकता होती हैं, जबकि सामान्य मानसिक योग्यता वाला अपने कार्य को सामान्य नियमपूर्वक पूरा करता है। अतः अतिरिक्त सोच के कारण स्त्री–पुरूष, प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों में अन्तर होना स्वाभाविक है। इसका समर्थन मित्तल (1990), मिश्र (1988) आदि विद्वानों ने "सृजनशील व्यक्तित्व" का नाम देकर किया है। अतः शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य शिक्षकों की अभिवृत्ति निर्माण में समानता का समर्थन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना "सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया। इस परिकल्पना को जाँचने के लिये तालिका नं0 4.4, 4.5, 4.6 को देखा तो पता चला कि नगर क्षेत्र से सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों/शिक्षिकाओं अपनी अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं रखती हैं। इस मसय जो शिक्षक (स्त्री–पुरूष) सेवानिवृत्त हुये हैं वे ऐसे परिवारों से आये थे जो शिक्षित थे, सामाजिक आर्थिक स्तर से उन्नत थे और उनके

अन्दर शिक्षक बनने की जिजीविषा थी। इनको अपने परिवार जैसा ही वातावरण मिला और ये लोग स्वयं को समायोजित करने में सफल रहे। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वंशानुक्रम का प्रभाव, परिवार के वातावरण का प्रभाव आदि शिक्षकों के व्यवसाय में अन्तर को समाप्तर करता है। यहाँ पर स्त्री–पुरूष प्रायमरी शिक्षक को वातावरण की समानता मिली है। इसीलिये दोनों के मध्यमानों में भी समानता है जिनका अन्तर 0. 84 रहा है जिसका क्रान्तिक अनुपात 1.0 रहा है जो 0.01 तथा 0.05 किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं रहा है। अतः यह सिद्ध होता है कि नगर क्षेत्र के प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) की सेवानिवृत्ति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार के निष्कर्ष "डोरोथी (1952), डेवीज (1961), तथा वर्मा (1968) और कुरेशी (1972) ने भी अपने शोधों के निष्कर्षों से दिये हैं।

सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र की तालिका को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि दोनों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। कस्बा क्षेत्र के प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) के मध्यमान का अन्तर 2.08 रहा है। इसका क्रिटीकल अनुपात 3.65 रहा है जो दोनों वर्गों की अन्तर की सार्थकता प्रगट करता है। चूँकि कस्बा क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों से आकर बसे हुये लोगों से होती है। अतः प्रायमरी स्तर के जो शिक्षक या शिक्षिकायें 1998 तक में सेवानिवृत्त हुये हैं, उनमें कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र दोनों ही परिवेश के लोग सम्मिलित हैं। इन दोनों में क्षेत्र का शिक्षा का, मूल्यों का, परिवार के संस्कारों आदि का अन्तर होता है। यह अन्तर इनके सोच को व्यवहारिक बनाता है जिसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर भी परिलक्षित हुआ है। इस प्रकार के निष्कर्ष वीराराघवन (1987), पीटर (1978), शमखेरी (1982) आदि के शोध निष्कर्षों से भी प्राप्त हुये हैं।

इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त प्रायमरी स्तर के शिक्षण तथा शिक्षिकाओं की सेवानिवृत्त तालिका 4.6 को देखने से प्रतीत होता है कि दोनों वर्गों की अभिवृत्ति में अन्तर होता है। इनके मध्यमानों का अन्तर 1.46 रहा है तथा क्रिटीकल अनुपात 3.9 रहा है जो दोनों वर्गों के अन्तर की सार्थकता को प्रगट करता है। इनका मुख्य कारण दोनों वर्गों की जागरूकता, समर्पण तथा कर्तव्य निष्ठा आदि के भावों में भिन्नता का होना है। हमारें देश में शिक्षा स्तर (महिलाओं) बहुत ही गिरा हुआ रहा है। जो स्त्री शिक्षक 1988 से 1998 तक में सेवानिवृत्त हुये हैं, वे तीस के दशक में जन्में होंगे। उस समय हमारे देश में अंग्रेजों का शासन रहा था और शिक्षा का विकास भी बहुत कम था। जो भी स्वी–पुरूष शिक्षित थे वे नगरों तथा कस्बों से आये थे। ये लोग

कम वेतन पर इसीलिये जीवन यापन करते थे कि वे अपने देश वासियों को साक्षर बनाना चाहते थे, जबकि पुरूष शिक्षक की मानसिक दशा भिन्न थी। वे शिक्षक बनना एक व्यवसाय मानते थे जबकि साथ में खेती का कार्य भी देखते थे। इस प्रकार से स्त्री शिक्षिका की पूरी ऊर्जा बच्चों के शिक्षण में लगती थी और वे उनको एक आदर्श बालिका बनाना चाहती थी। इसके साथ ही पुरूष शिक्षक, शिक्षण को व्यवसाय के रूप में लेता था और बच्चों को नियमित ज्ञान देने की कोशिश करता था। परिणाम् स्वरूप दोनों वर्गों के सोच में भिन्नता होनी स्वाभाविक है। अभिवृत्ति के अध्ययन के जैकब (1968), डेवीस (1961), अहलूवालिया (1974), सर्वानंद (1988), मेजर (1968) आदि द्वारा प्रस्तुत निष्कर्ष प्रमाणित होते हैं।

उपर्युक्त विवेचना से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षकों (स्त्री–पुरूषों) की अभिवृत्त में अन्तर होता है। यदि इनकी अभिवृत्ति के निर्माण पर प्रभाव डालने वाले कारक आपस में भिन्नता लिये हुये हैं तो दोनों वर्गों की अभिवृत्ति में अन्तर होना स्वाभाविक होता है। यदि दोनों वर्गों के प्रायमरी शिक्षकों को समान पर्यावरण मिले तो इस अन्तर को कम किया जा सकता है, समाप्त नहीं। अतः प्रस्तुत परिकल्पना सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है, स्वीकृत एवं सिद्ध नहीं हुई है।

शोधकार्य की द्वितीय परिकल्पना, "सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है का परीक्षण किया गया। इस हेतु शोध ा कर्ता ने तालिका सं0 4.4, 4.5, 4.6 का अवलोकन किया और पाया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का आकलन, नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र आदि में अलग–अलग से देखना होगा। उनमें नगर क्षेत्र के सेवनिवृत्त माध्यमिक शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसका प्रमुख कारण उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं तथा प्रशिक्षण का प्रभाव हो सकता है। शिक्षक वर्ग व्यवसायिक तथा भौतिकवादी बनता जा रहा है। उसमें शिक्षा क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने की लालसा रहती है। वह अपनी वुद्धि का प्रयोग व्यवसाय, राजनीति, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी करता है, ताकि वह समाज में अधिक सम्मान पासके। इसके विपरीत महिला शिक्षिकायें स्वयं के क्षमता को अपने शिक्षण कार्य के प्रति ही समर्पित करती है। वे सिर्फ अपने परिवार और विद्यालय तक ही सीमित रहती है। उनका व्यक्तित्व विकास अर्न्तमुखी रहता है। परिणाम् स्वरूप उनके प्रभाव का क्षेत्र बहुत ही सीमित रहता है। इसीलिये पुरूष तथा स्त्री अध्यापकों की अभिवृत्ति में अन्तर प्रतीत हुआ है। इसका समर्थन व्यक्तित्व और व्यवसायिक अभिवृत्ति के अध्ययनों, सर्वानंद (1988), अशोक (1993), तेसू (1993), फ्लैन्डर्स (1970), गुप्ता (1979) आदि द्वारा किया गया है।

कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई भी अन्तर नहीं आया है। इनके मध्यमान अन्तर 0.88 तथा 0.4 रहे हैं। इनके क्रान्तिक अनुपात 1.8 तथा 1.1 रहे हैं। ये दोनों ही मूल्य किसी विश्वास स्तर पर अपनी सार्थकता प्रगट नहीं करते हैं। इन दोनों क्षेत्रों के स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति में अन्तर न होने का कारण उनके परिवेश का प्रभाव तथा उनके संस्कार और प्रशिक्षण की प्रतिवद्धता हो सकते है। पामर (1908), बार (1929), कल्पना (1992), मेहरोत्रा (1973) आदि ने अपने अध्ययनों से शिक्षक परिवेश के अभिवृत्ति के विकास में सहायक माना है, जिससे उनमें समान सोच पैदा होता है, और वे क्रियाशील रहते हैं। गाँवों के द्वारा ही कस्बों का निर्माण होता है। उनके वातावरण और ग्राम के वातावरण में अधिक अन्तर नहीं होता है। पीढ़ी का सोच तथा पारिवारिक विशेषतायें एक दम से नहीं बदलती हैं। ये संस्कार के रूप में परिवार में, समाज में और समुदाय में जीवित रहती है, जो सदस्यों को प्रभावित करती है। तालिका संख्या 4.17 में कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षकों के बीच सहसम्बन्ध प्रदर्शित किया गया है, जो धनात्मक रहा है। यह भी स्पष्ट करता है कि अभिवृत्ति सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित होती है। इसके साथ ही शिक्षण प्रशिक्षण का प्रभाव कस्बा क्षेत्र के तथा ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं पर सकारात्मक रूप से पड़ता है, वे इसे पवित्र और अनोखा मानते है शिक्षक शब्द का आज भी कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सम्मान व आदर है। प्रत्येक व्यक्ति इनको विशेष व्यक्तित्व के रूप में देखता है क्योंकि वे नौनिहालों को कल का नागरिक बनाते हैं। ये शिक्षक बड़े ही मनोयोग से प्रत्येक बच्चे को ज्ञान देते हैं। इनमें किसी भी प्रकार की जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि की भिन्नता नहीं की जाती है। इस निष्कर्ष का समर्थन कोरिगन (1963), वर्मा (1968), जैकब (1968), कुरेशी (1972) आदि ने अपने अध्ययनों से किया है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र, तथा कस्बा क्षेत्र में अन्तर नहीं होता है, लेकिन नगर क्षेत्र में अन्तर होता है। शोधकर्ता का अनुभव इस अन्तर को नकारता है। अतः शोधकार्य में ये परिकल्पना स्वीकृत तथा सिद्ध होती है कि माध्यमिक शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत अध्ययन की तृतीय परिकल्पना–"नगर, कस्बा तथा ग्रामीण की शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता हैं", का परीक्षण किया गया। ये परिकल्पना माध्यमिक तथा प्रायमरी स्त्री–पुरूष अध्यापकों जो नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि कहीं से सेवानिवृत्त हुये हों, उनकी अभिवृत्ति से सम्बन्ध रखती है। मध्यमान तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र,

कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक तथा प्रायमरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता अधिक प्रगट हो रही है और भिन्नता कम। इसका मुख्य कारण शिक्षक व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास माना जा सकता है। शिक्षक व्यक्तित्व उनके वंशानुक्रम, वातावरण और प्रशिक्षण आदि परिवर्तियों से मिलकर विकसित होता है। वैयक्तिकता के आधार पर सभी व्यक्तियों में समानता और असमानता होती है, लेकिन उनका विकास संस्कारों के आधार पर होता है। इस प्रकार से वह शिक्षा प्राप्त करके स्वयं सफल नागरिक बनता है फिर वह शिक्षा व्यवसाय का चुनाव करके प्रशिक्षण लेता है जो सभी छात्राध्यापकों के लिये समान होता है। 1970 के दशक में "फलैण्डर्स" महोदय अपने शोधकार्य के द्वारा "शिक्षक व्यक्तित्व" को समानता के आधार पर विकसित करने की कोशिश की है। प्रशिक्षण द्वारा प्रत्येक अध्यापक छात्र–छात्रा में बच्चों को समझना, व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षण विधियों का प्रयोग, विद्यालय प्रबन्ध करना, आधुनिक तकनीकि को बताना तथा इतिहास और वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता में सामंजस्य बनाना आदि में निपुणता प्रदान की जाती है। इस प्रकार से सभी प्रशिक्षणार्थियों का समान विकास होता है। परिणाम्स्वरूप शिक्षकों में भी अभिवृत्ति का समान विकास होता है। इसके साथ ही शिक्षक व्यवसाय के प्रति जागरूकता, समर्पण तथा विकास की दिशायें जुटाना भी समानता स्थापित करतीं हैं। शिक्षकों की अभिवृत्ति में समानता का होना का समर्थन "ग्रामर" (1908), काफमैन (1954), डेवीज (1961), भार्गव (1962), कोरिगन (1963), आदि विद्वानों ने अपने–अपने शोध निष्कर्षों से किया है। अतः शोधकर्ता की यह परिकल्पना "शहरी कस्बा तथा ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है", स्वीकृत एवं सिद्ध होती है।

शोधकार्य की चतुर्थ परिकल्पना "सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया। इस हेतु तालिका संख्याः 4.10, 4.11, तथा 4.12 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुरूष तथा महिला शिक्षकों की समस्याओं में सार्थक अन्तर आया है। नगर क्षेत्र का क्रिटीकल अनुपात 4.17, कस्बा क्षेत्र का 3.0 तथा ग्रामीण क्षेत्र का 2.04 रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि शोधकर्ता ने जिन समस्याओं (मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक) को जानने की कोशिश की है, वे अपने–अपने प्रभाव विस्तार में प्रायमरी शिक्षक और शिक्षिकाओं में अन्तर स्पष्ट करती हैं।

1990 का दशक, संसार में परिवर्तन और परिमार्जन लाने वाला रहा है। इसंने जहाँ मानव हितों का ध्यान व्यक्तिगत विकास के लिये रखा है, वहीं पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का विकास यू0एन0ओ0 के माध्यम् से बिना किसी ध र्म, जाति और सम्प्रदाय के किया है। आज संसार के सभी स्त्री–पुरूषों का स्वतन्त्रता, समानता, सहकारिता के जनतंत्रीय मूल्यों का विकास करने के अधिक से अधिक अवसर मिले हैं। परिणाम् स्वरूप प्राइमरी शिक्षक भी इससे प्रभावित हुआ है। इनमें भौतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक परिवर्तन हुये हैं। इन शिक्षकों के समायोजन सिद्धान्त के कारण एक वर्ग आधुनिक बना, द्वितीय पुरातन के साथ आध ुनिक तथा तृतीय परातन में संशोधन करके आधुनिक बना। अतः इस वैज्ञानिक भौतिकवादी (भोगवादी) संस्कृति के प्रभाव ने प्रायमरी शिक्षकों की समस्याओं को भी प्रभावित किया है। परिणाम् स्वरूप उनकी समस्याओं में अन्तर स्पष्ट होता है। इसका समर्थन सामाजिक शोधकर्ताओं "बार" (1929), डोरोधी (1952), बोबी (1962), ग्रे (1963), तेसू (1993) आदि ने किया है।

यदि हम प्रायमरी शिक्षक के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि पुरूष–महिला शिक्षक चाहें वह नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का हो, में समानता और भिन्नता होती रही है। इस पर उनके परिवार, शिक्षा, संस्कार, मूल्य तथा प्रशिक्षण के प्रभाव के कारण परिवर्तन होते हैं। यही परिवर्तन उनमें भिन्नता स्थापित करने के कारक बनते हैं। पर्यावरण वादी इस बात को मानते हैं कि व्यक्ति जिस वातावरण में, क्षेत्र में "निवास करता है, व्यवसाय करता है, उसका प्रभाव उसके दैनिक जीवन पर पड़ता है।" यही दैनिक प्रभाव धीरे–ध ीरे स्थायी होकर उनके व्यक्तित्व की विशेषता बना जाता है। यही व्यक्तित्व विशेषतायें उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को प्रभावित करती हैं। परिणाम् स्वरूप व्यक्तिगत रूप में सेवानिवृत्त प्रायमरी शिक्षकों की समस्याओं में अन्तर होता है। इस प्रकार के निष्कर्ष "प्रतिभा" (1983), ओइपेन (1976), झा (1990) आदि ने अपने निष्कर्षों में दिये हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "शिक्षण सृजनशीलता" पर हुई गोष्ठी ने अध्यापक पर कल्पनाशील और यथार्थवादिता के प्रभाव को भी भिन्नता का एक कारक माना है। जो शिक्षक कल्पनाशील होते हैं, वे नये–नये प्रयोग करते हैं तथा उनके द्वारा इस विशिष्टता को अध्यापक वर्ग में प्रगट करते हैं। इसके विपरीत जो लोग यथार्थवादी और परम्परागत होते हैं, वे स्वयं को शिक्षण तकनीक के अनुसार चलाते हैं और उसी को छात्रों पर भी लागू करते हैं। शिक्षक–वर्ग में एक समूह ऐसा भी होता है जो स्वयं को कल्पनाशील बनाते हैं। लेकिन सही निष्कर्ष न मिलने पर निराश भी शीघ्र हो जाते

हैं। अतः विचारशीलता, कल्पनाशक्ति, यथार्थता, और परम्परागत विचार भी शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) में भिन्नता स्थापित करते हैं। इनका समर्थन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक "हिलगार्ड" (1948), थार्नडायक (1930) तथा वाटसन आदि ने किये हैं। अतः शोधकार्य की परिकल्पना सेवानिवृत्त प्राइमरी शिक्षक–शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोइ अन्तर नहीं होता है, पूर्णरूप से अस्वीकृत होती है।

शोधकार्य की पंचम परिकल्पना "सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक – शिक्षिकाओं की समस्याओं में कोई अन्तर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया। नगर क्षेत्र से सेवानिवृत्त शिक्षक–शिक्षिकाओं की आंकलन तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पुरूष वर्ग का मध्यमान 25.48 तथा महिला वर्ग का मध्यमान 27.88 रहा है। दोनों मध्यमानों का अन्तर 2.40 रहा है। इनका क्रिटीकल अनुपात 4.9 रहा है। यह मूल्य 0.01 विश्वास स्तर पर दोनों वर्गों में भिन्नता स्पष्ट करता है। विद्वानों के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दो शिक्षित वर्गों में या व्यवसायों में अन्तर उनके सामाजिक– आर्थिक स्तर तथा आदर्श और मूल्यों के द्वारा स्थापित कर्त्तव्य परायणता के कारण होता है। दोनों वर्ग व्यवसाय से प्राप्त धन में समानता रखते हैं, लेकिन दोनों के स्वभाव में, धन के व्यय करने के तरीकों में, तथा सामाजिक और पारिवारिक आवश्यकताओं के कारण होने वाले अन्तर के कारण धन की आपूर्ति और व्यय में भिन्नता हो सकती है। धन की भिन्नता दोनों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में असमानता पैदा करती है। इसके साथ ही महिला वर्ग धन की बचत करता है तथा सही उपयोग करता है, दिखावा न करके यथार्थ पर ही व्यय करता है तथा कम में ही कार्य करता है, जबकि पुरुष वर्ग दिखावे में विश्वास करता है, धन व्यय को अपना सम्मान मानता है, तथा धन को सम्मान का प्रतीक मानता है। इन निष्कर्षों का समर्थन "विनिकेट (1968), दयाल (1983), अंजुम (1985), सन्तोष (1991) आदि के शोध निष्कर्षों से भी मिलता है।

इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र के सेवानिवृत्त माध यमिक स्तर के स्त्री–पुरूष वर्ग में समस्याओं से सम्बन्धित कोई भी भिन्नता देखने को नहीं मिलती है। इन क्षेत्रों के दोनों वर्ग के शिक्षकों की समस्याओं में समानता होने का कारण क्षेत्र की समानता, सोच की समानता, तथा जीवन स्तर की समानता का होना हो सकता है। क्षेत्रीय दृष्टिकोण से देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि बड़े गाँवों का विकास ही आज कस्बा का रूप ले लेता है। ये कस्बे क्षेत्र विषेश के गाँवों को प्रशासनिक सुविधायें देते हैं तथा उन पर नियन्त्रण भी स्थापित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों

के लोग इन कस्बों में आकर अपने रोजाना के कार्यो तथा आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। अतः कस्बा क्षेत्र तथा गाँव क्षेत्र की भौगोलिक, साँस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी आवश्यकतायें एक जैसी होती है। यही आवश्यकतायें उनकी समस्याओं को जन्म व विकास भी करती हैं। जो शिक्षक समान पर्यावरण में रहता है और समान आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तो उसका सोच, चिन्तन भी एक ही तरह का होता जाता है, जो उसकी समस्याओं को प्रभावित करता है। इसके साथ ही कस्बा क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक और ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता मिलती है। वे भाषा का प्रयोग, मितव्ययिता, सामान्य रहन–सहन, परिवार तथा समाज के प्रति जागरूकता, तथा व्यवसायिक सम्मान को भुनाना आदि में भी समानता रखते हैं। इन लोगों में बनावटीपन कम होता है और यथार्थ की बात हमेशा सोचते हैं। ये सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली को अपनाते हैं। जबकि नगर के माध्यमिक शिक्षक "उच्च जीवन" को प्रमुखता देते हैं। इन निष्कर्षों का समर्थन "पायने (1962), सिवधा (1969), सिंह (1962), चौपरा (1966), माथुर (1972), आदि विद्वानों के निष्कर्षों से होता है। अतः स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत परिकल्पना नगर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों पर सिद्ध नहीं होती है तथा कस्बा क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्रों के सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर सिद्ध (स्वीकृत) होती है।

शोधकार्य की छटवीं परिकल्पना सेवानिवृत्त शहरी (नगर) कस्बा, तथा ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं में कोई अन्तर नहीं होता है, का परीक्षण किया गया। प्रस्तुत परिकल्पना में "समस्या" को केन्द्र बिन्दु मानकर शोधकर्ता ने सम्पूर्ण प्रायमरी तथा माध्यमिक शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) का अध्ययन किया है। अतः हम यहाँ पर अपनी परिकल्पना में नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के आधार पर सभी शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की समस्याओं पर प्रकाश डालेंगे। तालिका संख्या 4.13 से स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र बनाम ग्रामीण क्षेत्र में अन्तर है जबकि नगर क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र बनाम कस्बा क्षेत्र में कोई भी अन्तर नहीं आया है बल्कि धनात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ है।

तालिका संख्या 4.14 से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों (स्त्री–पुरूष) की मनोवैज्ञानिक समस्याओं और अभिवृत्ति में धनात्मक सम्बन्ध है जो यह प्रगट करता है कि व्यक्ति का सोच, विचार ,दृष्टि कोण तथा अवधारणायें इनकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं। तालिका संख्या 4.15 से स्पष्ट होता है कि

सेवानिवृत्त शिक्षकों की अभिवृत्ति का उनकी शारीरिक समस्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि शारीरिक समस्या आयु के कारण अधिक उत्पन्न होती है। तालिका संख्या 4.16 में अभिवृत्ति और आर्थिक समस्या को स्पष्ट किया गया है। इसमें तीनों ही क्षेत्रों के प्रायमरी तथा माध्यमिक अध्यापक (स्त्री–पुरूष) प्रभावित रहे हैं। यानी धन की प्रचुर मात्रा उनके जीवन को सुखी बनाती है। इसी प्रकार से सामाजिक समस्या का प्रभाव भी धनात्मक रहा है। क्योंकि व्यक्ति का मन ही दुःख और सुख का कारण बनता है। अतः सामाजिक परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार करना ही मन को दृढ़ता प्रदान करता है। इसमें सिर्फ माध्यमिक स्तर का उच्च वर्ग ही भिन्नता रखता है। तालिका संख्या 4.18 में अभिवृत्ति और सांस्कृतिक समस्या के संबंध को स्पष्ट किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि सभी क्षेत्रों के प्रायमरी तथा माध्यमिक अध्यापकों (स्त्री–पुरूष) का समायोजन साँस्कृतिक परिवर्तनों के साथ नहीं हो पा रहा है। परिणाम् स्वरूप इसमें ऋणात्मक सहसंबंध स्थापित हुआ है।

यदि हम तालिका संख्या 4.19 तथा 4.20 को देखें तो स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि के प्रायमरी तथा माध्यमिक (स्त्री–पुरूष) अध्यापकों मे समस्या संबंधी समानता है। इनमें समस्याओं का प्रीफरेन्स क्रम मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक स्तरों पर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तरों के स्त्री–पुरूष शिक्षकों में समस्याओं का वितरण समान रूप से होता है। उनमें गुणात्मक अंतर होता है न कि मात्रात्मक। शोधकर्ता ने शोधक्षेत्र में वार्तालाप से ज्ञात किया कि मन की भावना, विचारों की धारणा तथा भविष्य निर्धारण के भाव आदि समस्याओं के विकास में सहयोग देते हैं। यही विचार मैंकडुगल, लियोडर तथा जेम्स आदि मनोवैज्ञानिकों के रहे हैं।

समाज शास्त्रियों का मानना है कि सेवानिवृत्त व्यक्ति किसी भी क्षेत्र का हो, या किसी भी व्यवसाय का हो, उसे समस्याओं का सामना करना ही होता है। यदि उसके पास सभी साधन मौजूद हैं फिर भी वह अपने मानक से विचलित होता ही रहता है। इसी को अध्यात्मवादियों ने संसार का प्रभाव माना है। मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक समस्याओं से सभी व्यक्ति जूझते हैं अंतर सिर्फ उनके सामना करने के तरीके में तथा समाधान में होता है। आज के मनोविज्ञानी तथा समाज शास्त्री मानव समाज के विघटन के बारे में परेशान हैं। ये विघटन इन्हीं समस्याओं की तीव्रता के कारण और इनके साथ समायोजन न हो पाने के कारण हो रहा है।

सेवानिवृत्त माध्यमिक तथा प्रायमरी स्त्री–पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का विवेचन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण समान होने पर भी माध्यमिक तथा प्रायतरी स्तर और पुरूष तथा स्त्री वर्ग के व्यक्तित्व तथा स्वभाव बनावट की भिन्नता, अभिवृत्ति निर्माण तथा समस्याओं का सामना करने में भिन्नता स्थापित करते हैं। समस्यायें समान होती हैं, लेकिन उनके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को शिक्षक को ही महसूस करना होता हैं। अतः समस्या प्रमुख नहीं होती है बल्कि वह व्यक्ति प्रमुख होता है जो उस समस्या से प्रभावित हो रहा है। इस प्रकार से शोधकर्ता ने समस्याओं और अभिवृत्तियों पर सेवानिवृत्त शिक्षकों से संबंधित निम्न निष्कर्ष ज्ञात किये हैं :–

1– सेवानिवृत्त अध्यापक–अध्यापिका वर्गों में अभिवृत्ति का विकास एवं निर्माण समानता लिये हुये पाये गये लेकिन उनका प्रकाशन किन्ही क्षेत्रों में भिन्नता लिये हुये है।

2– कुछ अभिवृत्तियों में पुरूष वर्ग सेवानिवृत्त अध्यापक प्रमुख रहे हैं और कुछ में अध्यापिका वर्ग।

3– अभिवृत्ति का संबंध सेवानिवृत्ति की समस्याओं के साथ धनात्मक रहा है चाहे वे नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र या ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक या प्रायमरी स्तर के हों।

4– पुरूष तथा महिला अध्यापकों में सेवानिवृत्त समस्यायें समान रूप से और समान स्तर पर समानता लिये हुये पाई गई।

5– शिक्षा के दोनों ही स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों में समस्याओं के गुणात्मक अंतर स्थापित हुये हैं, मात्रात्मक नहीं।

6– सबसे प्रमुख समस्या "मनोवैज्ञानिक" रही है और सबसे कमजोर समस्या साँस्कृतिक रही है।

7– सेवानिवृत्त शिक्षक या शिक्षिका सामाजिक प्राणी होने के कारण अपनी वैयक्तिकता से प्रभावित होते हैं। अतः उनकी अभिवृत्ति और समस्याओं का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उनके निष्कर्षों में अंतर आना स्वाभाविक हो जाता है। इस लिये शोधकर्ता ने अध्ययन, अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है ताकि उनका सही आँकलन प्रस्तुत हो सके। इस प्रकार से शोधकर्ता की परिकल्पना शिक्षक समस्याओं में कोई अंतर नहीं होता है, स्वीकृत एवं सिद्ध होती है।

शोध के विस्तृत निष्कर्ष :–

शोधकार्य की परिकल्पना की स्वीकृत तथा अस्वीकृति की सिद्धि का वर्णन करने पश्चात् अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षों को प्रस्तुत करना शोधकर्ता का प्रमुख कर्त्तव्य हो जाता है। शोधकार्य के कुछ तथ्यात्मक निष्कर्ष निम्नाँकित हैं :–

1– प्रस्तुत अध्ययन झाँसी जनपद की पाँच तहसीलों में सेवानिवृत्त हुये प्रायतरी तथा माध्यमिक स्त्री–पुरूष शिक्षकों पर किया गया है। इनको नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र, तथा ग्रामीण क्षेत्र में विभक्त करके तथ्यों का संकलन किया गया है। इनकी अभिवृत्तियों को जीवन के प्रति, संतान के प्रति, सामाजिक सम्मान के प्रति, सहयोगियों के प्रति तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति और समस्याओं को मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक आदि क्षेत्रों में बाँट कर अध्ययन किया गया है। इन दोनों परीवर्तियों में पूर्ण सार्थक भिन्नता स्पष्ट नही हुई है। इसका कारण शिक्षक व्यवसाय का प्रशिक्षण तथा शिक्षक की कर्त्तव्य निष्ठा होता है। विघार्थी (1978), ने स्पष्ट किया है कि शिक्षक जीवन भर बच्चों के भविष्य को बनाता है, लेकिन संकुचित दृष्टिकोंण (व्यवसाय) के कारण वह अपने साथ न्याय नहीं कर पाता है। जिससे सेवानिवृत्ति के पश्चात् वह समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। अतः सेवानिवृत्त अध्यापक को समस्याओं से निजात दिलवाने के लिये या उनके साथ सकारात्मक दृष्टिकोंण अपनाने के लिये निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये।

(अ) शिक्षकों को समान वेतन–भत्ते, पैन्सन, मेडिफ्लेम, ग्रेच्युटी आदि की व्यवस्था प्रशासन को करनी चाहिये चाहे वह शिक्षक नगर क्षेत्र का हो, कस्बा क्षेत्र का हो या ग्रामीण क्षेत्र का हो।

(ब) शिक्षक एक व्यवसायिक जाति, के रूप में परिभाषित होना चाहिये चाहे वह उच्च शिक्षा माध्यमिक या प्रायमरी स्तर का हो। इससे सभी में समानता, सहयोग और भाई चारे का भाव जागृत होता है।

(स) शिक्षकों को स्वावलम्बी तभी बनाया जा सकता है जब प्रशासन एवं समाज उनको मान सम्मान दे और उनके कार्य को नौकरी व्यवसाय न मानकर "मानवसेवा" माने। इस प्रकार से समाज के सकारात्मक सोच के कारण उनकी समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जायेगा।

(द) प्रस्तुत अध्ययन में, अभिवृत्तियों में, स्त्री–पुरूष आधार पर कोई भी भिन्नता नहीं रही है। लेकिन नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में अंतर रहा है। अतः हमें शिक्षकों के क्षेत्र या स्तर पर नहीं बाँटना चाहिये बल्कि "शिक्षक" मानकर ही उसके प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिये।

2 – शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का विशेषज्ञ माना जाता है। जिसके आधार पर वह बच्चों को उनकी मन चाही शेप देता है और उनका सर्वागींण विकास भी करता है। इसी मनोविज्ञान का प्रयोग सेवानिवृत्त शिक्षक स्वयं की अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने के लिये और समस्या समाधान से निम्न प्रकार से कर सकता है :–

(अ) जीवन के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापकों को व्यापक दृष्टिकोंण अपनाना चाहिये, जिससे उनके मन में जीवन के प्रति मोह विकसित न हो सके बल्कि परिवर्तन का भाव विकसित हो।

(ब) भारतीय संस्कृति क़ी विशेषता "कर्तव्य करो, फल की चिन्ता न करों", पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। इससे शिक्षक के मन में निराशा के भाव, और सफलता के भाव ज़ागृत न हो सकेंगे।

(स) शिक्षा का अर्थ व्यवसाय निपुणता के साथ–साथ मानवीय गुणों का विकास भी मानना चाहिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों के द्वारा समाज और राष्ट्र का भला कर सकता है।

(द) मनोविज्ञान का ज्ञान व्यक्ति के व्यवहार मूल्याँकन से प्रारम्भ होकर सकारात्मक निदान तक समाप्त होता है। इससे सेवानिवृत्त व्यक्ति (स्त्री–पुरूष) शिक्षक स्वयं का अध्ययन आसानी से कर सकता है। और उसके आधार पर अन्य का अपने प्रति सकारात्मक व्यवहार बना सकता है।

(य) परिवार या समाज से मिले संस्कार या व्यवहार को मनोविज्ञान जानने वाला व्यक्ति डिफेन्स मैकेनिज्म के द्वारा सकारात्मक बना सकता है। इस प्रकार से उसमें निराशा के भाव, तनाव, भावना ग्रन्थियाँ आदि उत्पन्न नहीं हो पायेंगी और मनोवैज्ञानिक रूप से वे बीमार नहीं हो पायेगें।

3 – सेवानिवृत्त शिक्षकों को अपनी क्रियाशीलता को जारी रखना चाहिये ताकि उनके अनुभव, ज्ञान और विचार परिपक्वता से समाज लाभन्वित हो सके और सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे लोग निष्क्रिय भी न रहे। शोधकर्ता निम्न बातें आवश्यक मानता है :–

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षक–शिक्षिकायें अपने परिवार में, पड़ोस में और समाज में बच्चों में नागरिक तथा मानवीय गुणों का विकास करने में सहयोग दें ताकि बच्चों में नागरिक चेतना का भाव विकसित हो सके।

(ब) आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा का वातावरण बनायें इससे बच्चों में शिक्षकों के प्रति तथा शिक्षा के प्रति सम्मान स्थापित हो सके।

(स) भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के विकास को सेवानिवृत्ति के पश्चात् आसानी से किया जा सकता है। उनमें सत्यं, शिवम् तथा सुन्दरम् के भावों

का विकास अपने सोउद्देश्य तर्कों के द्वारा किया जाना चाहिये।

(द) शिक्षा प्रसार, परिवार नियोजन, अहिंसा का प्रचार सेवानिवृत्ति के पश्चात् शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। इससे स्वयं को क्रियाशील रखकर सामाजिक शिक्षा का प्रसार भी होगा।

(य) बच्चों में मनोरंजन के साधन, देशाटन, खेलकूद, शारीरिक सौष्ठव और साँस्किृतिक पर्व आदि का आयोजन करके स्वयं को क्रियाशील बनायें ताकि स्वयं को सेवानिवृत्ति की भावना ग्रन्थि से दूर रख सकें।

4 — अभिवृत्ति और समस्याओं की सहसम्बन्ध तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर पर धनात्मक सम्बन्ध रहा है। अतः सेवानिवृत्त अध्यापकों (स्त्री–पुरूष) ने समानता अधिक रहा है और भिन्नता कम। सेवानिवृत्त शिक्षकों में स्वतन्त्र भाव , प्रभुत्व, सामाजिकता, अनुशासन, तनाव आदि विशेषतायें देखने को मिलतीं हैं। ये सामान्य व्यक्तियों को विशेषतायें हैं, लेकिन इनकी स्वीकृति व्यक्ति में सक्रियता तथा अस्वीकृति व्यक्ति में निष्क्रियता का सृजन करती है। अतः सेवानिवृत्त शिक्षक को समाज द्वारा स्वीकार करके भविष्य का नेतृत्व पल्लवित किया जा सकता है।

5 — नगर क्षेत्र और कस्बा तथा ग्रामीण क्षेत्रों से सेवानिवृत्त हुये शिक्षकों की अभिवृत्ति समान रही है। इसमें प्रशासन तथा समाज को समान सम्मान के भाव का विकास करना चाहिये। इनके सम्मेलन के आयोजन होने चाहिये ताकि सभी की समस्याओं का समाधान हो सके। इस हेतु शोधकर्ता निम्न बातों पर ध्यान आकर्षित करता है :–

(अ) सेवानिवृत्त शिक्षकों का एक संगठन बने जो सभी की समस्याओं का समाधान समान रूप से करे।

(ब) सेवानिवृत्त शिक्षकों को सामयिक निर्देशन एवं परामर्श मिलता रहे ताकि वे अपने मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दुष्परिणामों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण बना सके।

(स) परिवार में उनको सम्मान, स्वतन्त्रता तथा अधिकार मिले जिससे उनके मन से "अनवान्टेड व्यक्ति" का दुर्भाव निकल सके।

(द) सरकार को सामाजिक संस्थाओं को समय–समय पर गोष्ठियाँ, सेमीनार, वार्तायें आयोजित करनी चाहिये, जिसमें ये लोग भाग लेकर अपने विचारों को रख सकें और हम उनका हल खोज सकें।

6 — प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सेवानिवृत्त शिक्षकों को दोहरी

बोझा ढोना होना है तथा दूसरी तरफ समाज की अपेक्षाओं को पूरा करना होता है। इस हेतु सामान्य तथ्य प्रस्तुत हैं :–

(अ) सेवानिवृत्त के समय "प्रतिभा पलायन" को शिक्षा के क्षेत्र में भी रोकना चाहिये ताकि उनके परिपक्व अनुभवों से राष्ट्र को लाभ हो सके।

(ब) सेवानिवृत्ति के समय सभी प्रकार के देयों का भुगतान एक दम से होना चाहिये ताकि वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करके सन्तोष प्राप्त कर सके।

(स) आर्थिन स्वावलम्बन, हेतु सेवानिवृत्त व्यक्ति को समय पर पेन्सन का बैंक द्वारा भुगतान होना चाहिये ताकि वे खजाने की बेईमानी से बच सकें और ससम्मान जीवन यापन कर सकें।

(द) समय–समय पर चिकित्सकों द्वारा कैम्प लगाये जायें ताकि उनमें वे निःशुल्क शारीरिक जाँच करवा सकें और आने वाले रोगों से अपना बचाव कर सकें।

(य) सेवानिवृत्त शिक्षकों को आध्यात्मिक केन्द्रों पर भी जाना चाहिये ताकि उनमें "सदभाव" का विकास हो सके। इस प्रकार से सुख तथा दुःख का प्रभाव निक्रिय हो जायेगा।

(र) वर्तमान पीढ़ी और समाज के बीच "जनरेसन गैप" की बात हमें समाप्त करना चाहिये क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। दोनों को ही समाज, और राष्ट्र के हित में कार्य करना है। अतः बदले हुये मूल्य और आदर्शों में अच्छाई खोज कर स्वीकार करें ताकि मानव समाज समृद्धि पा सके।

शिक्षारत अध्यापकों तथा अन्य सेवानिवृत्त को सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व उन सभी सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूषों के लिये हो सकता है जो शासकीय, अर्द्धशासकीय, तथा अशासकीय सेवाओं में लगे हुये हैं या सेवानिवृत्त होने वाले हैं, या सेवानिवृत्त हो गये हैं। शिक्षकों को आधार मानकर जन साधारण के सोच तथ्य जीवन–यापन में आने वाली समस्याओं को केन्द्र मानकर यह अध्ययन किया गया है। शिक्षक एक सामाजिक प्राणी है, साथ ही साथ वह एक निर्देशन देने वाला भी है, जिससे भविष्य के नागरिक तथा राष्ट्र निर्माता तैयार होते हैं। अतः शोधकर्ता अपने अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है :–

(1) – महात्मा गाँधी का कथन है कि व्यक्ति की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिये। अतः शिक्षा के क्षेत्र से जो शिक्षक सेवानिवृत्त हुये हैं उनको चाहिये कि वे जो सलाह, आदर्श अन्य लोगों को बता रहे हैं, उनका व्यवहार में पालन स्वयं करें, ताकि उनसे प्राप्त निष्कर्षों से सभी लाभान्वित हो सकें। शिक्षक अपनी सेवा में सभी छात्र–छात्राओं को अच्छा तथा आदर्श बनने की शिक्षा देता रहता है, लेकिन वह स्वयं क़ितना आदर्शवान है या अपने बनाये गये आदर्शों का कितना पालन करता है, पर विचार करें। इस तरह से सेवानिवृत्त शिक्षक को अपनी कथनी और करनी में समानता देखकर कार्य (जीवन–यापन) करना चाहिये ताकि उसका व्यक्तित्व एक दिखावा या काल्पनिक बनकर न रह जाये बल्कि वास्तविक लगे।

(2) – शिक्षा का प्रारूप पूर्ण भारतीय होना चाहिये। इसमें शिक्षक का व्यक्तित्व भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से ओत–प्रोत हो जिससे वह बच्चों को समझ सके, प्रेरित कर सके, और शारवत मूल्यों का उनमें समावेश कर सके। यह कार्य सेवारत शिक्षक ही नहीं करेंगे बल्कि सेवानिवृत्त शिक्षक अपने परिवार में, पड़ोसि में, मित्रों में तथा अन्य सामाजिक व्यक्तियों को अपने अनुभव तथा ज्ञान से लाभान्वित कर सकते हैं। सेवानिघृत्त शिक्षक का सबसे बड़ा कार्य निरीक्षण तथा परिवीक्षण करना होता है। इससे समाज से सभी वर्गों तथा आयुवर्ग के लोगों को उपयुक्त दिशा निर्देश प्राप्त होता रहता है।

(3) – आज मनोविज्ञान का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। जीवन को सफल बनाने के लिये सहयोग, सहानूभुति तथा प्रतियोगिता की आवश्यकता होती है। सेवानिवृत्त व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने ज्ञान, अनुभव के द्वारा अन्य लोगों का भंरसक सहयोग करे तथा जो बच्चे या लोग पिछड़े हैं उनके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करके उनके मनोबल को ओग बढ़ायें, साथ ही साथ उनको, प्रतियोगी (मेहनत) करने का निर्देश भी दें। इस तरह से सेवानिवृत्त शिक्षक अपने मनोविज्ञान का प्रयोग करते हुये स्वयं को क्रियारत रख सकेगा।

(4) – आज सेवानिवृत्ति का अर्थ "जीवन का अन्त" बदल चुका है। इस का नवीन अर्थ जीवन को नई दिशा देना और अपने बारे में शांतपूर्वक बैठकर सोचना तथा उन सभी इच्छाओं को पूरा करना जिनको आपने पदानुरूप न समझकर छोड़ दिया था। मनोचिकित्सकों का मत है कि सेवानिवृत्ति की तैयारी स्वयं व्यक्ति को भी करनी है और साथ ही परिवार के सदस्यों को भी। अतः हमारा सुझाव है कि सेवानिवृत्ति शिक्षक या जन सामान्य को मानसिक़ रूप से स्वयं को तैयार करना और परिवार के अन्य सदस्यों को इसमें सहयोग बनाये रखना आवश्यक हो जाता है।

(5) – सेवानिवृत्त शिक्षक को अधिक क्रियाशील होकर घर–परिवार की मद्द करनी चाहिये। इससे उनके शारीरिक अवयव सक्रिय रहेंगे और स्वाथ्य भी अच्छा रहेगा। मनोचिकित्सक डॉ0 अग्रवाल का भी मत है कि सेवानिवृत्त लोगों को सुबह जग कर धर के उपयोगी कार्यों को निपटाना चाहिये, पूजापाठ करना चाहिये, उपयुक्त नास्ता तथा भोजन लेना चाहिये तथा बच्चों को पढ़ने में सहायता करनी चाहिये और हलके व्यायाम करके शरीर को स्वस्थ्य रखना चाहिये।

(6) – सेवानिवृत्त व्यक्ति को अधिक से अधिक आत्मनिर्भर बनना चाहिये ताकि परिवारी सदस्य उसको बोझा न समझे बल्कि उनको उपयुक्त सम्मान भी दें। उनको घर के कार्यों में हाथ बटाना चाहिये और ऐसे कार्यक्रम बनाये जो परिवार के लिये, बच्चों के लिये और समाज के लिये लाभदायक भी हों।

(7) – आज भौतिकवादी संस्कृति से प्रभाव में सम्पूर्ण संसार आ रहा है। यदि सेवानिवृत्त शिक्षक अपने ट्रेडिसनल मूल्यों पर ही अड़ा रहता है, तो वह अपने और परिवार के बीच पीढ़ी का अन्तर स्थापित कर लेता है जिसके कारण वह परिवार से कट सा जाता है। अतः स्वयं को पुराने विचारों से दूर रखकर नवीन के साथ जुड़ना चाहिये ताकि जीवन का आनन्द सभी के साथ बाँट कर लिया जा सके।

(8) – आज शिक्षा का पूर्ण व्यवसायीकरण हो चुका है। अतः नई पीढ़ी अपनी उपयोगिता के आधार पर शिक्षा प्राप्त करती है। इसमें यदि सेवानिवृत्त शिक्षक अपनी पसन्द या ना पसन्द को लागू करना चाहता है तो वह रूकावट या हतासा ही पैदा करती है। अतः बच्चों के सोच में संशक्त आधार देकर उनको प्रोत्साहित करें ताकि वे अपनी पसन्द और ना पसन्द के द्वारा जीवन के आगे बढ़ा सकें।

(9) – सेवानिवृत्त शिक्षक को सामाजिक–धार्मिक संस्थाओं का क्रियाशील सदस्य बनकर उनका सम्बर्द्धन और मार्गदर्शन करना चाहिये। इससे वे अपने अर्जित ज्ञान का लाभ भी संस्था को दे सकेंगे और उनके आधार को सक्रिय तथा दृढ़ आधार भी प्रदान कर सकेंगे। इस कार्य में मन लगाकर कार्य करने से स्वयं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा संस्था को निःशुल्क, विश्वासी, सहयोगी कार्यकर्ता भी प्राप्त होगा।

(10) – सेवानिवृत्त शिक्षक या अन्य व्यक्ति को "फंकशनल" रोगों से बचना चाहिये। इस रोग का जन्म काल्पनिक विचारों से उत्पन्न विभिन्न "भ्रम और व्यामोह" से होता है जो धीरे–धीरे सेवानिवृत्त व्यक्ति को मनोदैहिक रोगी बना देते हैं। इसमें नकारात्मक मानसिक सोच के कारण व्यक्ति में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, एन्जायना, हार्टअटैक, एलर्जी, जोड़ों के दर्द, दमा, श्वाँस फूलना, पैप्टिक अल्सर, नपुंसकता,

मासिक बन्द होना, गंजापन आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अतः इन लोगों को अपने अर्ध चेतन मन में भ्रम और व्यामोह को कोई भी स्थान नहीं देना चाहिये। इस प्रकार से वे समय तथा धन दोनों की बर्बादी को बचाकर स्वयं भी शान्ति से रह सकते हैं और परिवार को भी सेवानिवृत्त चिन्ता से मुक्त करा सकते हैं।

(11) – शोधकर्ता के अनुसार सेवानिवृत्त शिक्षकों को निम्न बातों पर ध्यान करना चाहिये :–

(अ) जीवन में अनुशासन का पालन प्रत्येक क्षेत्र में करना चाहियें ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सही रहे।

(ब) मेडिक्लेम पालिसी का उपयोग करें।

(स) अपने मित्रों से मिलें, गपशप करें और उनके घर जायें और बुलायें।

(द) प्रतिदिन व्यायाम, योगा अवश्य करें।

(य) सक्रियता बनाये रखने के लिये सामाजिक कार्यों को करें।

(र) पुराने दिनों की बातों को न करें, जब भी करें तो वर्तमान के लाभ की बातें करें।

(ल) पुराने और नवीन विचारों में सामंजस्य बिठाकर जीवन का आनन्द लें, ताकि पूरा परिवार तुम्हारा बना रहे।

(व) बच्चों को टोकें नहीं, अपने सिद्धान्त थोपें नहीं, बल्कि तर्क की कसौटी पर कसकर उपयोगी दृष्टिकोंण अपनायें।

यदि सेवानिवृत्त शिक्षक तथा शिक्षिकायें उपर्युक्त सुझावों का सामान्य तौर पर पालन करते हैं तो उनका मानसिक सोच सकारात्मक होकर परिवार तथा समाज के लिये सहायक होगा तथा वे अपनी उन इच्छाओं तथा आकाँक्षाओं की पूर्ति भी कर सकते हैं जिनकी पूर्ति इस अवस्था में आवश्यकता होती है। इसके साथ उनकी मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदि समस्याओं का समाधान भी स्वतः हो सकेगा।

शोधार्थियों हेतु सुझाव

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक व्यवसाय के साथ जुड़े उन प्रायमरी तथा माध्यमिक सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापको का नगर क्षेत्र कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र आदि परिवेशों के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में यह जानने की कोशिश की गई है कि सेवानिवृत्त अध्यापक अपनी अभिवृत्ति और समस्याओं के साथ कैसे जीवन व्यतीत करता है। इस हेतु शिक्षा स्तर भिन्नता, यौन, भिन्नता, क्षेत्रीय परिवेश भिन्नता आदि के प्रभाव को आंकलन परिवर्ती के रूप में लेकर उनकी समस्याओं के प्रभाव का आंकलन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्नों को ज़न्म दिया है, जिनके लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है। इससे अध्ययन को भी पूर्णता मिलेगी तथा नये आयामों पर अध्ययन होकर सेवानिवृत्त शिक्षकों के जीवन यापन में लाभ मिलेगा। अतः भविष्य के शोधार्थियों के लिये प्रस्तुत नये तथ्य आकर्षण के केन्द्र बन सकते हैं :–

1 – अध्ययन न्यादर्श सिर्फ 600 सेवानिवृत्त स्त्री–पुरूष अध्यापकों पर किया गया है। इसमें अधिक उपयुक्तता और वैद्यता लाने के लिये बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।

2 – परिवेश को एक मुख्य परिवर्ती मानकर स्वतन्त्र रूप से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

3– वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर गुणात्मक शिक्षा का प्रसार करने वाले केन्द्रीयं विधालय, नवोदय विधालय तथा विधा–भारतीय आदि शिक्षण संस्थाओं से निवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं का तुल्नात्मक अध्ययन किया ज़ा सकता है।

4 – सरकारी तन्त्र तथा निजी शिक्षण संस्थाओं से सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति, समस्यायें तथा आर्थिक सामाजिक स्तर आदि परिवर्तियों पर तुल्नात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5 – प्रायमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त सवर्ण तथा असवर्ण अध्यापकों की सेवानिवृत्ति के पश्चात् उत्पन्न समस्याओं और जीवन यापन का अध्ययन्न किया जा सकता है। इससे अध्यापक समाज में सामाजिक समानता तथा एक रस्ता स्थापित की जा सकती है।

6 – सामाजिक–साँस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण सेवानिवृत्त व्यक्तियों में समायोजन स्थापना की समस्या विकराल रूप ले रही है। अतः विभिन्न क्षेत्रों में सेवानिवृत्त अध्यापकों का समायोजन तथा अनुकूलन का अध्ययन भी किया जा सकता है।

7 – प्रस्तुत अध्ययन में सबसे अधिक प्रभाव "मनोवैज्ञानिक" समस्या का रहा है। इसके कारण सामयिक या वंशानुक्रमीय हो सकते हैं, का अध्ययन किया जा सकता है, ताकि सेवानिवृत्त अध्यापकों के मन से "सेवानिवृत्ति का भय" निकाला जा सके।

8 – प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र बुन्देलखण्ड का झाँसी जनपद रहा है जो सभी दृष्टियों से पिछड़ा माना जाता है। अतः इस अध्ययन को विकसित, विकासशील तथा अर्धविकसित क्षेत्रों पर भी किया जा सकता है ताकि अध्यापक समस्या का समाधान सकारात्मक रहे और ये लोग सुखी जीवन–यापन कर सकें।

9 – शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति और समस्याओं को केन्द्र मानकर किया है तथा स्वनिर्मित उपकरण के द्वारा तथ्यों का आँकलन किया है। इसी अध्ययन को एक वृहद आकार पर सभी का साक्षात्कार लेकर उनकी समस्याओं को जाना जाये, और फिर मुख्य समस्याओं पर एक प्रशनावली तैयार की जाये इसके पश्चात् एक प्रश्नावली उनसे भरवाई जाये, तथा एक पर स्व निरीक्षण के द्वारा आंकलन किया जाये। इस प्रकार से प्राप्त तुलनात्मक निष्कर्ष सेवानिवृत्त अध्यापकों को एक नई दिशा दे सकते हैं ताकि उनका जीवन सुखमय बन सके।

10 – प्रस्तुत अध्ययन को सेवानिवृत्ति के आधार पर नगर क्षेत्र, कस्बा क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में बाँटा गया है। जबकि ये लोग विभिन्न क्षेत्रों के रहने वाले हैं, सिर्फ व्यवसाय के लिये क्षेत्र विशेष में वस गये है। इनके व्यक्तित्व गठन, व्यवहार, सोच, तथा निर्देशन आदि पर उनके पारिवारिक तथा शिक्षा प्राप्त क्षेत्रों का प्रभाव रहा है। अतः इस भिन्नता को ध्यान में रखकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

11 – सेवानिवृत्त शिक्षकों के मूल्यों, अभिवृत्ति और समस्याओं को लेकर अध्ययन किया जा सकता है ताकि ट्रेडिसनल मूल्य और परिवर्तित मूल्यों उनकी सोच तथा समस्याओं पर क्या प्रभाव डालते हैं पता लगा सके।

12 – प्रस्तुत अध्ययन में महिलायें सकारात्मक अभिवृत्ति वाली और कम समस्या वाली आई है, अतः इनके कारणों का अलगसे अध्ययन किया जा सकता है।

13 – उत्तर प्रदेश शासन की आरक्षण नीति के अन्तर्गत अति पिछड़े आरक्षण नीति के आधार पर प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तर के सेवानिवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ताकि आरक्षण नीति के दुष्प्रभाव को शिक्षा जगत से निजात मिले और सेवानिवृत्त सभी शिक्षकों के सम्मान में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ

1. अदावल यस. बी. – "क्वालिटी ऑफ टीचर्स" , ट्रेनिंग ऑफ टीचर्स अभिताभ प्रकाशन ,इलाहाबाद , 1979.

2. अरोरा के. – "डिफरेन्सेज बिटविन इफेक्टीब एन्ड इन इफेक्टीब टीचर्स" नयी दिल्ली यस. चाँद 1978.

3. अल्पोर्ट, बर्नन और लिन्डजे – "मैनुवल फॉर द स्टडी ऑफ वेल्यूज" वोस्टन 1960

4. अहलूवालिया यस.पी. – "डेवेल्पमेंट ऑफ टीचर एटीट्यूड इनमेन्टरी एण्ड स्टडी ऑफ चेन्ज इन प्रोफेसनल एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर" डिपार्टमेन्ट ऑफ बी.यच.यू. 1974 (एन. सी. ई. आर. टी. फाइनेस्ड)

5. आयजेनिक – मैनुअल ऑफ माडस्ले परसोनेलिटी इन्वेन्टरी, यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन प्रेस, 1959 बी

6. आन्नद यस. पी. – "टीचर इफीक्टीभनेस इन स्कूल्स" जनरल ऑफ इण्डियन एजूकेशन 1983.

7. आलपोर्ट, परसेनेलिटी – ए साइकोलोजिकल इण्टरप्रीटेशन, न्यूयार्क, हाल्ट, 1937.

8. आलपोर्ट, जी. डब्लू. – "एटीटॅयूड इन सी. मरचिंसन (इड)" हैण्डबुक ऑफ सोसल साइकोलाजी, क्लोर्क यूनिर्वसिटी प्रेस 1935.

9. इनसाइकलोपिडिया ऑफ एजूकेसनल रिसर्च, थर्ड एडीसन, न्यूयार्क.

10. एण्डूज जान एच. एम. – "एण्डमिनिस्ट्रेटिभ सिगनिफिकेंस ऑफ साइकोलोजिक डिफरेंसेज विटवीन सेकेण्डरी टीचर्स ऑफ डिफरेन्ट सब्जेक्ट फिल्ड " एलवर्ट जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च दिसंबर 1957 (3)

11. ओजुम्बा के. ई. – "ए ऑफ रिम्यू स्टेट ऑफ आर्ट ऑफ रिसर्च आन एसेसिंग टीचर एफक्रेटिभनेस", अफ्रीका, ओटबा आईडीआरसी 1978.

12. कक्कड़ – "ए स्टडी ऑफ वेल्यू ऑफ कालेज एण्ड पर्सपेक्टिभ टीचर्स बाई ए0 भी0 यल. मैथड 1971", रिपोर्ट ऑफ इ0 आर0 आई0 सी0 फन्डेड रिसर्च रिपोर्ट 1986.

13. कपिल एच0 के0 – "अनुसन्धान विधियाँ", हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन आगरा 1978,

14. कपिल एच0के0 – "साँख्यिकी के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा परिवर्द्धित संस्करण 1984.

15. करलिंगर यफ0 यन0 – "फाउन्डेंसन ऑफ विहेविरल रिसर्च", होल्ट 1964.

16. काकस डब्लू यन0 – "ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिभनेस अपान सेकेन्डरी स्कूल टीचर्सस एण्ड देयर प्यूपील्स" डिजर्ट0 ए0स0 इन्ट0 (ए) वालूम 39.

17. काफमेन विलियम बी0 – "डिटरमिनिंग स्टूडेन्ट्स कन्सेप्ट्स ऑफ इफेक्टिव टीचिंग फ्राम देयर रेटिंग ऑफ इन्ट्रोडक्सन", द जनरल ऑफ एजूकेसनल साइकोलाजी, मई 1954 वालूम 45 नं05.

18. कार्बाइल ए0बी0 – प्रोडिक्टिंग फरफारमेन्सेज इन द टीविंग प्रोपेशन, जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च मई, 1954 वाजूम 477 नं0 9.

19. काबरा द्वारिका दास – "शिक्षक नमो नंमः", शिविरा, बीकानेर, राजस्थान, सितम्बर 1985 वर्ष 26 अंक 3.

20. केटिल, आर0बी0 – हैन्डबुक 16 पी0 एफ0, इलीनास 1970.

21. क्रोन बैक एस0जे0 – "इसेन्सीयल्स ऑफ साइकोलाजिकल टेस्टिंग", सेकेन्ड एडीशन, हार्पर न्यूयार्क 1960.

22 कुमार पी0 एण्ड मूथा डी0एन0 – "सरटेन साईकोलाजिकल कोरिलेट्स ऑफ टीचर इफेक्टीवनेश", जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलाजी 41 (3).

23. कुरेशी जेड0 एम0 – "पर्सोनेलिटी, एटीट्यूड एण्ड क्लास रूप विहेवियर ऑफ टीचर्स", पी0एच0डी0 एजूकेशन यम0एस0 यूनिवर्सिटी, बड़ौदा 1972.

24. क्रेच एण्ड क्रच फील्ड – "थियरी एण्ड प्राबलेम ऑफ सोशल साइकोलाजी" यन0वाई0 मैग्राहिल 1948.

25. कोरिगन डी0 – "एटीट्यूड चेन्ज इन स्टूडेन्ट टीचर्स", जनरल ऑफ एजूकेशन रिसर्च 1963, वालूम 57 नं0 2.

26. कोलमन – "इफेक्टिवनेस ऑफ वेल्यू क्लेफाइंग स्ट्रेट्डीज", एन0सी0ई0 आर0टी0 फन्डेड रिसर्च रिपोर्ट 1986.

27. गवर्नमेन्ट रेजूलूशन आन एजूकेशनल पालिसी 1913 पूष्ठ 51.

28. गुप्ता वाई0 के0 एण्ड शमशेरी के0 – "प्रिडिक्सन ऑफ टीचिंग इफीसीयन्सी यू टीचर्स एटीट्यूड्स टूवर्ड प्रोफेसनल ट्रेनिंग", एजूकेशनल रिभ्यू 1982, 88 (3) 43–45.

29. ग्रे – "कम्परीजन ऑफ वर्क वेल्यूज एमास्ट टीचर्स, एकाउन्टेन्ट्स एण्ड इन्जिनियर्स", एन0सी0ई0 आर0टी0 फन्डेड रिसर्च रिपोर्ट 1986.

30. गैरेट एच0ई0 – "स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन", लॉंगमेन ग्रीन एण्ड कम्पनी 1967.

31. गैलय, आर0 – ऐ स्टडी ऑफ वी0एड0 स्टूडेन्ट्स, ब्रिटिश जनरल ऑफ ऐजूकेशनल साइकोलाजी, वोलूम – 40, 1970.

32. चौबे जे0यस0, गुप्ता नीता एण्ड गुप्ता वाई0के0 – "ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप एमांग टीचिंग इफिसियेन्सी, एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड एकेडमिक एचीभमेन्ट ऑफ बी0एड0 स्टूडेन्ट्स", एसीयन जनरल ऑफ साइकोलाजी एण्ड एजूकेशन 1985 वालूम 15 नं02.

33. जयम्मा यम0यस0 – "कन्सट्रक्शन एण्ड स्टेन्डराइजेसन ऑफ ऐन इनभेन्टरी फार प्रिडिक्टिंग टीचर इफीसियेन्सी" पी0एच0डी0 थीसिस, यम0एस0 यूनिवर्सिटी बड़ौदा 1962.

34. जेम्स ड्रेवर – "डिक्सेनरी ऑफ साइकोलाजी", 1968.

35. जैकव – "एटीट्यूड चेन्ज इन टीचर एजूकेशन, ऐन इन्क्वेरी इन्टू द रोल ऑफ एटीट्यूड इन चेंजिंग टीचर विहेवियर", जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन 1968 वालूम 9 नं0 4, 410–415.

36. जोशी यम0सी0एण्ड शर्मा यम0डी0 – "सेक्स डिफरेन्सेज इन वैल्यू प्रिफरेन्सेज", जनरल ऑफ गुजरात रिसर्च सोसायटी, 1968, 30(117) 43–47.

37. ठक्कर वी0आर0 – "एस्टडी ऑफ पोटेन्सीयल टीवर्स इफेक्टिवनेस एण्ड देयर एजूकेशनल एटीट्यूड इन रिलेसन टू देयर रिपोर्ट विथ द स्टूडेन्ट्स एण्ड देयर सरवाइवल

एण्ड जॉब सैटिशफेक्शन इन प्रोफेसन", पी0एच0डी0 एजूकेशन, यम0यस0 यूनिवर्सिटी बड़ौदा, 1977.

38. डेव पी0एन0 – "रिसर्च ऑफ एसेसिंग टीचर इफेक्टिवनेस इन डेभलपिंग कन्ट्रीज", पर्सपेक्टीभ्स इन एजूकेशन 1985.

39.थार्नडायक, ई0एल0 – "एजूकेशन साइकोलाजी वालूम – 1", "द ओरिजनल नेचर ऑफ मैन" न्यूयार्क, कोलम्बिया यूनि0 प्रेस, 1932.

40. ट्रेवर्स, एम0डब्लू0 – "एन0 इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च न्यायार्क मैकमिलन, 1964.

41. डेवीज लिलियन यस0 – "सम रिलेसनशिप विटविन एटीट्यूड, पर्सनालिटी कैरेक्टरस्टिक्स एण्ड वरवल बिहेवियर ऑफ सेलेक्टेड टीचर्स" डाक्टरल डिजर्टेशन यूनिवर्सिटी ऑफ मिनिसोटा, 1961, 225.

42. डोरोथी टी0यस0 – "वैल्यूज ऑफ द पोस्टवार कालेज स्टूडेन्ट्स", द जनरल ऑफ सोशल साइकोलाजी, 1952, 35, 217–225.

43. थर्स्टर्न यल0एल0 एण्ड चेब इ0जे0 – "मैजरमेन्ट ऑफ एटीट्यूड", शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस शिकागो, 1929.

44. थार्नडाइक आर0 यल0 – "परसनल सेलेक्शन, टेस्ट्स मेजरमेन्ट टेक्निक्स", न्यूयार्क, जानविली एण्ड सन्स 1957, 262.

45. देवनाथ यच0एन0 – "टिचिंग इफिसियेन्सी, इट्स मेजरमेन्टस् एण्ड डिटरमेनेन्टस् पी0एच0डी0 थेसिर्स, विश्वभारतीय यूनिवर्सिटी, 1971.

46. पाण्डेय, के0पी0 – "शिक्षण व्यवहार की तकनालाजी", अमिताश प्रकाशन दिल्ली, 294–303.

47. पामर जी0 यच0 – "द टीचर" हागटन मिफलिन को, बोस्टन, 1908.

48. पाल, जे0 – परसोनेलिटी स्टडी ऑफ द स्टूडेन्ट्स् लीडर्स, पी0एचडी0 थीसिस, साम0 विश्व0, 1976.

49. पोटर इ0 यल0 – "द रिलेसनशिप ऑफ टीचर ट्रेनिंग एण्ड टीचिंग एक्सपीरियन्स टू एसेसमेन्ट ऑफ टीचिंग परफारमेन्स ऑफ कम्यूनिटी/जूनियर कालेज फैकल्टी", जनरल ऑफ एजूकेशन रिसर्च 1978, 72(2) 81–85.

50. बार ए0 एस0 – "कैरेक्टरिस्टिक्स डिफरेन्सेस इन द टींचिंग परफारमेन्सेज ऑफ गुड एण्ड पुअर टीचर्स ऑफ सोशल स्टडीज", पब्लिक स्कूल पब्लीसिंग कम्पनी ब्लूमिन्गटन, 1929.

51. विंधम डब्लू वी0डी0 – "एप्टीट्यूड एण्ड एटीट्यूड टेस्टिंग", हार्फर 1962.

52. बुच एम0 बी0 – "द मेजरमेन्ट ऑफ एटीट्यूड ऑफ सेकेन्डरी स्कूल टीचर्स टूवर्डस् द टींचिंग प्रोफेशन", जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी, 1959. 17(3).

53. बुच एम0बी0 – "ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन", सी0ए0एस0ई0 बड़ौदा, एन0सी0ई0आर0टी0 पब्लिकेशन, 1974.

54. बुच एम0बी0 – "सेकेन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन", सी0ई0आर0डी0 बड़ोदा, 1979. एन0सी0ई0आर0टी0 पब्लिकेशन 1979.

55. बुच एम0बी0 – "थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन", एन0सी0ई0आर0टी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1986.

56. ब्रिकनर, "आब्जर्ब्ड क्लास रूम विहेवियर एण्ड परसोनिलिटी टायप्स ऑफ 178 विंगनिंग टीचर्स, इण्टरनेशनल वालूम 31(11) 1970.

57. वर्क डी0बी0 – "परसनेलिटी करेक्टरेस्टिक्स ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स एण्ड देयर सुपरवाइजर्स, यूनिवर्सिटी ऑफ मिनीसोटा, 1969.

58. बूवेकर जान यस. – "मॉडर्न फिलासफी" ऑफ एजूकेसन ", मैग्राहिल बुक कम्पनी आइयनमी, 1962, 97.

59. भटनागर, आर. पी. – "शिक्षा तथा मनोविज्ञान में साँख्यिकी प्रयोग", नेशनल बुक डिपो, मुरादाबाद, 1962.

60. भटनागर, आर, पी. – "ए डिफरेसिंयल स्टडी ऑफ वैल्फूज ऑफ मेल ग्रेजुएट", जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलाजी जुलाई, 1965, 21 (2) , 66–73.

61. भारतीय आधुनिक शिक्षा,–एन. सी. इ. आर. टी. प्रकाशन नयी दिल्ली वर्ष 6 अंक प्रथम जुलाई, 1988.

62. माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 भारत सरकार नयी दिल्ली .

63. माइजोरिवक्स केबिन, "एनवाइजमेंट कारिलेट्स ऑफ अवर मेंटल एवीलिटीज जनरल ऑफ एक्सपेरीमिन्टल एजूकेशन, वालूम 39, 1971.

64. मुकर्जी, एस. एन. – "एजूकेशन इन इण्डिया, टुडे एण्ड टूमारो", पृष्ठ 362, 368.

65. मेजर जे. ई. – "एटीट्यूड एण्ड परसनालिटी चेंज इन द स्टूडेंट टीचर्स ऑफ डिज – एडवान्टेज ग्रुप ", जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च , 1969 वालूम 63 नं. 3, 116–120.

66. मेहरोत्रा आर0 एन0 – "एफेक्ट ऑफ टीचर एजूकेशन प्रोग्राम ऑन द एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टुवर्ड द टींचिंग प्रोफेशन", सी0आई0ई0 न्यू देहली, 1973.

67.रायन्स डी0 जी0 – "कैरेक्टरिक्टीक्स ऑफ टीचर्स डिस्क्रीप्सन, कम्परीजन एण्ड एप्रेजल", वाशिंगटन डी0 सी0 अमेरिकन कौन्सिल आफ एजूकेशन 19.

68. राय पारसनाथ तथा भटनागर चाँद – "अनुसंन्धान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशन आगरा, 3, 1973.

69. राय बीना – "रिलेशनशिप विटविन द मेजर्स ऑप सक्सेज ऑफ टीवर्स ऐज स्टूडेन्ट्स अन्डर ट्रेनिंग एण्ड ऐज टीचर्स इन स्कूल", पी0एचडी0 थीसिस, दिल्ली यूनिवर्सिटी, 1965.

70. आर0एन0 गुप्ता – "कल्चरल रिलेटिविटी इन एजूकेशन, लखनऊ विश्व0 प्रकाशन.

71. रेखा, अग्रवाल – "बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति पर पारिवारिक दशा का प्रभाव", (शोध – 1988)

72. रिपोर्ट ऑफ द एजूकेशन कमीशन, 1964–66, भारत सरकार.

73. रोशनसिने वारक बी0 – "सिन्थेसिस ऑफ रिसर्च आन ट्रेनिंग", एजूकेशन लोडरशिप, अप्रैल 1986 वालूम 43 नं0 7, 60–61.

74. लाल जे0एन0, मिश्र गिरीश्वर –"मनोवैज्ञानिक साँख्यिकीय", नील कमल प्रकाशन, गोरखपुर 1981.

75. वर्क आन टिंचिंग एफेक्टिभनेस 1900–1952, "इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च वालूम 3 पृष्ठ 1487.

76. वर्मा – "द स्टडी ऑफ वेल्यू, एटीट्यूड एण्ड एचीभमेन्ट्स ऑफ स्टूडैन्ट टीचर्स", जनरल ऑफ एजूकेशन साइकोलाजी 1972, 210–216.

77. वर्मा, आई0 वी0 – "ऐन इनवेस्टिगेशन इनटू द इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग आन द वैल्यूज, एटीट्यूड, परसनल प्राब्लेमस् एण्ड एडजस्टमेन्टस् ऑफ टीचर्स ऑफ पी0एचडी0 थीसिस आगरा, यूनिवर्सिटी, 1968.

78. वशिष्ट के0के0 – "टीचर एजूकेशन इन इण्डिया – आगरा।

79. वीटन ए0ई0 – "वैलूय0 डिफेरेन्स एमॉग पब्लिक हाई–स्कूल टीचर्स यूजिंग ए रिफ्रेसिभ माडेल एनालिसिस ऑफ वैरियस टैकनीक", द जनरल ऑफ इक्सपेरिमेन्टस एजूकेशन 1966 वालूम 35 नं0 2.

80. वीनमन यस0 – "परसिभ्ड प्राब्लमसॅ ऑफ बिगनिंग टीचर्स", रिभ्यू ऑफ एजूकेशन रिसर्च 1984, वालूम 54, (2), 143–178.

81. वैन्कटेश – "टीचर्स सैटिस्फैक्सन विद एनवाइरनमेन्ट" ई0पी0ए0 बुलेटिन वालूम 5(3–4), अक्टूबर–जनवरी 1983.

82. वीराराघवन विमला एण्ड भट्टाचार्या रीना – "कोरिलेट्स ऑफ टीचर इफेक्टीभनेस", पर्सपेक्टिभ्स इन एजूकेशन 1987 वालूम 3 नं0 3 161–167.

83. वेस्ट जॉन डब्लू0 – "रिसर्च इन एजूकेशन", प्रेन्टिस हाल – ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 दिल्ली, 1963.

84. शर्मा आर0 ए0 – "ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप ऑफ प्रिडिक्टर्स ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस ऐट एलिमेन्टरी लेवल एण्ड फोलोअप आफ्टर टीचर्स आफ ट्रेनिंग, डी. फिल., मेरठ युनिवर्सिटी 1971.

85. शिक्षा की चुनौती – "नीति सम्बन्धी परिपेक्ष्य – शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1985.

86. शिक्षा विवेपन – "प्रासंगिकता और उत्कृष्टता के लिये शिक्षक शिक्षा में अपेक्षित अनुसन्धान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, (शिक्षा विभाग) भारत सरकार दिल्ली (ग्रीष्म) 1987.

87. श्रीवास्तव आर0सी0 एवं बोस के0 – "थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ टीचर एजूकेशन इन इन्डिया," चुघ प्रकाशन इलाहाबाद, 1973.

88. सालू ई0 विनिकेट, "द इफेक्ट ऑफ आउट ऑफ स्कूल इन्फलूमेन्स अपना हाई – स्कूल स्टूडेन्ट्स इन कोयम्बटूर (1984).

89. शैल्डन डब्लू0"एच0 – "द वैरायठीज ऑफ हयूमन फिजीक न्यूयार्क हारपर, 1940.

90. स्कीनर चार्ल्स ई0 – "एजूकेशन साइकोलोजी", एडीटर वान0 यल0 रसेल, साउदर्न इलियन्स यूनिवर्सिटी 1964.

91. सक्सेना पी0 सी0 – "एटीट्यूड, इन्टेलिजेन्स एण्ड परसोनेलिटी कोरिलेट्स ऑफ काम्पीटेन्ट टीचर्स", इण्डियन साइकोलाजिकल रिभ्यू 1969, 5, 107–112.

92. सामन्तो राव जी0 के0 – "ए स्टडी ऑफ टीचर्स एटीट्यूड एण्ड इट्स रिलेशनशिप विथ टीचिंग इफिसियेन्सी", पी0 यचडी0, एजूकेशन, सम्बलपुर यूनिवर्सिटी 1971.

93. सिंह राजेन्द्र – "नेचर एण्ड नीड ऑफ प्रोफेसनल ट्रेनिंग फार कालेज यूनिवर्सिटी टीचर्स", एम0 एड0 डिजर्टेशन बी0यच0यू0 1980.

94. हारो विट्ज यम0 – "स्टूडेन्ट टीचिंग एक्सपीरियेन्सेज एण्ड एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स", जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन 1968 वालूम 19 नं0 3 पृष्ठ 317–324.

95. हिलगार्ड – इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलाजी, लन्दन, हार्ट डेविस, 1962.

विशेष सहयोग :–

(1) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ

(2) शिविरा, वीकानेर

(3) नया शिक्षक बीकानेर.

(4) राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अजमेर।

(5) शिक्षा विवेचन, दिल्ली।

(6) द एजूकेशन कवाटरली, दिल्ली।

(7) यूनिवर्सिटी न्यूज दिल्ली।

(8) जनरल आफ हायर एजूकेशन, यू0 जी0 सी0, दिल्ली।

(9) टीचर एजूकेशन, इलाहाबाद।

(10) साहित्य परिचय, आगरा।

सेवा निवृत्त अध्यापक अभिवृत्ति अनुसूची (ASORT)

शिक्षक का नाम :- दि0 :-

पिता का नाम :- पदः-

विद्यालय का नाम :- अध्यापक अनुभव :-

निर्देश

नीचे सेवा निवृत्त अध्यापकों की अभिवृत्ति जानने के लिये कुछ विज्ञप्तियाँ दी गई हैं । आप जिन विज्ञप्तिओं से बहुत सहमत हों, सहमत हों या असहमत हों उनके नीचे बने स्थान पर क्रास का निशान लगा दें । इन विज्ञप्तिओं का सही या गलत उत्तर नहीं है, परन्तु

उत्तर लिखते समय आप अपने विचारों को ईमानदारी से व्यक्त करने की कोशिश करें । जो भी आप उत्तर देंगे, उसे गुप्त रखा जायेगा ।

(अ) जीवन के प्रति	बहुत सहमत	सहमत	असहमत
1. जीवन ईश्वर की देन है ।			
2. जीवन को आनंद के साथ जीना चाहिये ।			
3. जीवन भाग्य पर निर्भर करता है ।			
4. जीवन एक नाटक मात्र है ।			
5. जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है ।			
(ब) बच्चों के प्रति			
1. जीवन में बच्चों की आवश्यकता होती हैं ।			
2. बच्चों के साथ रहने से मनप्रसन्न रहता है ।			
3. बच्चे आपके लिये समस्या उत्पन्न करते हैं ।			
4. बच्चे आपसे ज्ञान सीखते हैं ।			
5. बच्चों का विकास आपके साथ होता है ।			
(स) सम्मान के प्रति			
1. आप दूसरों से सम्मान चाहते हैं ।			
2. परिवार के लोग आपका आदर करते हैं ।			
3. परिवार के सदस्य आपकी राय लेते हैं ।			
4. आपके सम्मान को ठेस लगती है ।			
5. आप सम्बंधियों का सम्मान करते हैं ।			

(द) सहयोगियों के प्रति			
1. आप सहयोग की इच्छा रखते हैं ।			
2. आप दूसरों को अधिक से अधिक सहयोग करते हैं ।			
3. आप सहयोगियों के साथ समायोजन करते हैं ।			
4. आप सहयोगियों की समस्याओं का समाधान करते हैं ।			
5. आप सहयोगियों से पूर्वाग्रही होते हैं ।			
(य) व्यवसाय के प्रति			
1. आप शिक्षक व्यवसाय से संतुष्ट हैं ।			
2. आप बच्चों/सम्बंधियों को शिक्षक बनने की प्रेरणा देते हैं ।			
3. शिक्षक व्यवासय से आपके उत्तर दायित्व पूरे हुये ।			
4. अब भी आपको किसी व्यवसाय की ललक है ।			
5. आप शिक्षा व्यवसाय के विकास में योगदान दे रहे हैं ।			

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली
(RTPQ) Retired Teachers Problem Questionnaire

नाम :– दि0 :–

पिता / पति का नाम :– जाति :–

वर्तमान पता :–

निर्देश

आगामी पृष्ठों पर अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्याओं का पता लगाने के लिये कुछ प्रश्न दिये गये हैं । उनके सामने 'हॉं तथा नहीं' लिखा है । जो प्रश्न आप पर लागू होते हों, उनके सामने 'हॉं' पर (√) सही का निशान और जो लागू न होते हों उन पर 'नहीं' पर (√) सही का निशान लगाकर अपनी समस्या को प्रकाशित करें । आप निःसंकोच उत्तर दें, ताकि आपकी समस्याओं का समाधान खोजा जा सके ।

1. मनोवैज्ञानिक समस्यायें

1. क्या आप अवकाश प्राप्ति के बाद के जीवन के लिये तैयारी कर चुके थे ?	हॉं / नहीं
2. क्या अवकाश प्राप्ति के नोटिस पाने पर आपको धक्का लगा ?	हॉं / नहीं
3. क्या औसत आयु का प्रभाव अवकाश प्राप्ति पर पड़ना चाहिये ?	हॉं / नहीं
4. क्या आपका जीवन अवकाश प्राप्ति के बाद सुखी है ?	हॉं / नहीं
5. क्या आपको पारिवारिक उत्तरदायित्व परेशान करते हैं ?	हॉं / नहीं
6. क्या आप अवकाश प्राप्ति को जीवन का अंत मानते हैं ?	हॉं / नहीं
7. क्या आपने सेवाकाल में विशेष रूचियों का विकास किया ?	हॉं / नहीं
8. क्या विशेष रूचि का कार्य आपको आनंद देता है ?	हॉं / नहीं
9. क्या आपकी कार्य क्षमता अवकाश को प्रभावित करती है	हॉं / नहीं
10. क्या आप अवकाश प्राप्ति से उदासीन रहते हैं ।	हॉं / नहीं

2. शारीरिक समस्यायें

1. क्या आप पहले की तरह अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देते हैं ?	हॉं / नहीं
2. क्या आप स्वस्थ रहने के लिये किसी दवा (टानिक) का सहारा लेते हैं ?	हॉं / नहीं
3. क्या आप स्वस्थ रहने के लिये व्यायाम करते हैं ?	हॉं / नहीं
4. क्या आप अवकाश प्राप्त लोगों की बीमारी से ग्रसित हैं ?	हॉं / नहीं
5. क्या बीमारी में आपकी देखभाल सही ढंग से होती है ?	हॉं / नहीं
6. क्या आप शीघ्र थकान महसूस करते हैं ?	हॉं / नहीं
7. क्या आप बीमारी के दिनों में आवागमन ठीक से कर पाते हैं ?	हॉं / नहीं
8. क्या आपकी अवस्था 70 वर्ष से ऊपर है ?	हॉं / नहीं
9. क्या आप दीर्घ आयु पसंद करते हैं ?	हॉं / नहीं
10. क्या आप अवकाश के पश्चात अधिकतर नीरोग रहते हैं ?	हॉं / नहीं

3. आर्थिक समस्यायें

1. क्या आपकी आवश्यकतायें पूरी होती हैं ?	हॉं / नहीं
2. क्या आप धन की कमी महसूस करते हैं ?	हॉं / नहीं
3. क्या आप अर्थ अभाव में पान, तम्बाखू या सिगरेट के लिये तरस जाते हैं ?	हॉं / नहीं
4. क्या आपको पर्याप्त पैंशन मिल रही है ?	हॉं / नहीं
5. क्या आप उचित आहार ले पाते हैं ?	हॉं / नहीं
6. क्या आप पर्याप्त दवाइयों या टॉनिक का प्रयोग करते हैं ?	हॉं / नहीं
7. क्या आपका परिवार आमदनी की दृष्टि से बड़ा है ?	हॉं / नहीं
8. क्या आप अवकाश के पश्चात भी अतिरिक्त कार्य करते हैं ?	हॉं / नहीं
9. क्या आप खाली समय में धन कमाते हैं ?	हॉं / नहीं
10. क्या आप बच्चे आपको आर्थिक सहयोग करते हैं ?	हॉं / नहीं

4. सामाजिक समस्यायें

1. क्या परिवार के सदस्य आपका ध्यान रखते हैं ?	हॉं / नहीं
2. क्या परिवार के लोग आपको बोझ मानते हैं ?	हॉं / नहीं
3. क्या परिवार में आप स्वयं को लावारिस मानते हैं ?	हॉं / नहीं
4. क्या परिवार में आपको पूर्ण सम्मान मिलता है ?	हॉं / नहीं
5. क्या आपको उत्सवों में बुलाया जाता है ?	हॉं / नहीं
6. क्या अवकाश के पश्चात विद्यालयी सहयोगी आपको सम्मान देते हैं ?	हॉं / नहीं
7. क्या विद्यालय की प्रबंधकारिणी आपके हाल – चाल पूँछती है ?	हॉं / नहीं
8. क्या आपके पढ़ाये हुये छात्र आपसे मिलते हैं ?	हॉं / नहीं
9. क्या विद्यालय आपकी सहायता करता है ?	हॉं / नहीं
10. क्या आप सामान्य नागरिक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं ?	हॉं / नहीं

5. साँस्कृतिक समस्यायें

1. क्या आपकी पसंद आज उपयुक्त है ?	हाँ / नहीं
2. क्या आपकी पसंद को युवक मजाक बनाते हैं ?	हाँ / नहीं
3. क्या धार्मिक कार्यो पर किया गया व्यय बच्चों को अपव्यय लगता हैं ?	हाँ / नहीं
4. आधुनिक व्यवहार को क्या आप पसंद करते हैं ?	हाँ / नहीं
5. क्या आपको वर्तमान के नाच – गाने कष्ट पहुँचाते हैं ?	हाँ / नहीं
6. क्या आपके अनुभवों को परिवार में स्वीकृति मिलती है ?	हाँ / नहीं
7. क्या सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आप देखने जाते हैं ?	हाँ / नहीं
8. क्या आप परिवार के साथ बैठ कर टेलीविजन देखते है ?	हाँ / नहीं
9.क्या आप धार्मिक कार्यो को प्रतिदिन करते हैं ?	हाँ / नहीं
10. क्या वर्तमान की अधार्मिकता से आपको झुंझलाहट होती है ?	हाँ / नहीं

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

ग्रामीण क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	5	4	3	7	24
2	5	4	4	3	8	24
3	5	4	4	3	7	23
4	6	4	5	4	6	25
5	5	3	6	4	6	24
6	3	5	4	6	8	26
7	5	3	6	4	6	24
8	5	3	5	6	7	26
9	4	4	5	5	6	24
10	4	3	4	6	6	23
11	5	4	3	6	7	25
12	4	5	6	5	5	23
13	5	6	4	4	5	27
14	6	5	4	4	5	24
15	4	5	6	7	3	25
16	5	5	6	6	4	26
17	3	6	5	4	8	26
18	5	4	3	2	9	23
19	5	6	4	5	4	24
20	5	7	5	5	4	26
21	5	5	6	6	6	28
22	4	5	3	5	4	21
23	5	6	4	4	6	25
24	6	4	5	3	3	21
25	5	4	3	2	8	22
26	6	6	5	5	4	26
27	5	5	6	5	4	25
28	5	4	6	5	5	25
29	5	4	6	4	4	23
30	4	5	6	3	4	22
31	5	4	6	4	3	22
32	6	6	4	5	4	25
33	4	5	6	4	2	21
34	5	4	6	3	4	22
35	6	6	4	5	2	23
36	4	5	6	3	4	22
37	5	4	6	5	4	24
38	6	6	4	4	3	23
39	4	5	6	8	5	28
40	5	4	6	4	6	25
41	6	6	4	2	8	26
42	4	5	4	5	4	22
43	5	4	3	6	5	23
44	3	6	5	4	6	24
45	6	3	6	3	3	21
46	7	4	4	6	4	25
47	5	4	6	3	4	22
48	4	5	6	4	6	25
49	6	8	2	2	5	23
50	8	3	3	7	2	23

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

ग्रामीण क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	4	4	3	5	21
2	5	4	3	4	7	23
3	5	4	4	3	5	21
4	6	5	4	3	4	22
5	5	6	3	5	4	23
6	6	4	5	5	3	23
7	5	4	4	3	5	21
8	4	5	6	5	6	26
9	3	4	5	7	6	25
10	5	4	3	4	6	22
11	6	5	4	3	4	22
12	5	4	5	4	7	25
13	4	5	6	5	6	26
14	3	6	4	7	5	25
15	5	6	4	6	3	24
16	4	6	4	3	7	24
17	9	2	4	5	3	23
18	4	5	4	4	4	21
19	4	5	6	3	4	22
20	4	6	6	6	5	27
21	5	4	8	4	6	27
22	9	8	5	3	3	28
23	7	6	5	4	4	26
24	4	5	6	5	6	26
25	4	5	6	5	4	24
26	5	4	3	4	6	22
27	4	5	6	5	4	24
28	4	5	6	5	6	26
29	4	5	6	4	6	25
30	4	5	6	4	6	25
31	5	4	4	6	5	24
32	6	5	4	3	7	25
33	7	5	5	4	4	25
34	4	4	5	5	7	25
35	4	5	6	5	7	27
36	4	4	8	6	4	26
37	3	4	5	6	7	25
38	5	4	6	5	4	24
39	4	5	4	4	8	25
40	5	6	4	5	4	24
41	4	5	6	5	3	23
42	6	5	4	5	4	24
43	4	6	4	6	7	27
44	5	6	4	5	3	23
45	4	5	6	5	4	24
46	5	5	6	6	5	27
47	4	5	3	4	8	24
48	5	4	3	6	5	23
49	4	5	6	2	4	21
50	5	4	4	4	6	23

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

ग्रामीण (पुरूष) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	8	9	5	8	6	36
2	5	5	4	3	5	22
3	4	8	3	2	3	20
4	9	4	4	5	3	25
5	9	6	4	3	2	24
6	5	4	6	5	4	24
7	4	5	7	4	6	26
8	5	4	6	5	4	24
9	5	8	4	4	4	25
10	5	4	4	4	6	23
11	6	6	5	4	4	25
12	5	4	9	4	4	26
13	5	5	6	4	8	28
14	5	4	6	5	4	24
15	4	6	6	4	4	24
16	5	5	6	4	6	26
17	5	5	6	4	6	26
18	5	6	4	3	4	22
19	6	6	5	4	4	25
20	7	6	7	4	4	28
21	8	7	5	5	2	27
22	6	6	5	3	5	25
23	6	7	6	4	4	27
24	5	4	6	5	4	24
25	5	4	4	4	7	24
26	5	6	4	5	5	25
27	4	5	6	5	4	24
28	4	5	6	5	4	24
29	4	6	3	5	5	23
30	5	4	5	4	4	22
31	6	5	4	6	6	27
32	5	6	6	7	4	28
33	6	4	7	3	8	28
34	4	5	4	5	3	21
35	5	5	6	6	5	27
36	5	4	6	5	6	26
37	6	6	7	5	3	27
38	8	7	5	5	3	28
39	7	5	3	5	6	26
40	6	7	5	4	4	26
41	8	7	5	4	6	30
42	4	7	4	5	4	24
43	6	6	4	4	6	26
44	7	5	4	4	6	26
45	6	7	4	4	5	26
46	5	4	5	4	4	22
47	4	5	6	5	4	24
48	8	7	5	4	3	27
49	8	6	6	5	3	28
50	6	7	5	4	4	26

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

ग्रामीण (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	8	5	3	2	5	23
2	6	7	4	2	4	23
3	5	5	4	3	3	20
4	8	5	5	5	5	28
5	6	5	4	2	3	20
6	8	6	5	4	3	26
7	7	5	4	5	4	25
8	5	4	6	6	4	25
9	6	7	6	4	4	27
10	7	6	7	5	2	27
11	5	5	4	6	3	23
12	4	6	5	4	4	23
13	3	7	6	5	4	25
14	6	4	3	6	4	23
15	7	5	4	4	4	24
16	5	6	5	5	4	25
17	4	7	6	6	3	26
18	3	7	2	4	4	20
19	7	6	3	5	4	25
20	6	4	4	6	5	25
21	5	6	5	4	4	24
22	4	6	6	5	4	25
23	6	4	6	6	3	25
24	7	3	5	4	4	23
25	5	7	4	5	4	25
26	7	6	3	6	3	25
27	6	6	2	4	4	22
28	5	4	5	5	4	23
29	4	7	4	6	4	25
30	3	7	3	4	8	25
31	4	7	6	5	2	24
32	5	6	3	6	4	24
33	6	6	4	4	5	25
34	7	4	5	5	4	25
35	5	7	6	6	4	28
36	4	8	7	4	5	28
37	6	5	5	5	4	25
38	7	4	6	6	3	26
39	6	5	4	4	4	23
40	5	6	3	5	4	23
41	4	7	2	6	4	23
42	4	7	3	4	4	22
43	5	6	4	5	4	24
44	6	6	5	6	4	27
45	7	4	6	4	4	25
46	6	5	3	5	4	23
47	5	7	5	6	4	27
48	4	7	6	4	4	25
49	3	8	3	5	2	21
50	6	4	4	6	5	25

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

कस्बा क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	3	2		6	16
2	3	4	3	3	3	16
3	5	3	3	1	3	15
4	5	3	3	1	3	15
5	5	4	5	4	4	22
6	4	4	3	2	4	17
7	4	4	3	2	2	15
8	4	4	3	2	1	14
9	5	4	2	4	2	17
10	6	4	3	2	2	17
11	2	2	3	5	4	16
12	3	2	3	4	4	16
13	4	2	2	2	1	11
14	5	3	2	3	1	14
15	4	2	3	4	2	15
16	3	8	2	2	2	17
17	6	4	5	3	2	20
18	4	3	4	4	2	17
19	3	4	5	4	3	19
20	3	5	3	3	4	18
21	3	6	5	4	4	22
22	4	3	3	5	4	19
23	4	3	5	5	5	22
24	3	4	5	5	4	21
25	3	5	5	4	3	20
26	4	3	5	5	4	21
27	3	5	6	4	4	22
28	3	5	6	4	5	23
29	4	4	4	5	5	22
30	4	5	4	5	3	21
31	3	4	4	3	5	19
32	3	4	4	4	4	19
33	4	3	4	3	4	18
34	4	4	4	4	4	20
35	5	4	5	4	4	22
36	6	4	4	3	4	21
37	5	3	5	3	4	20
38	4	4	4	5	4	21
39	4	3	3	3	5	18
40	3	4	4	2	4	17
41	4	3	4	2	3	16
42	2	3	5	2	5	17
43	2	4	6	4	4	20
44	4	4	4	2	2	16
45	4	4	2	2	4	16
46	3	5	5	3	3	19
47	4	3	5	5	4	21
48	2	2	4	5	3	16
49	4	4	4	5	5	22
50	4	5	4	5	5	23

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

कस्बा क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	3	3		3	14
2	5	4	4	3	5	21
3	5	4	4	3	5	21
4	5	4	4	3	5	21
5	5	4	4	3	5	21
6	5	4	4	3	5	21
7	5	4	4	4	6	23
8	6	4	4	5	5	24
9	3	5	4	4	6	22
10	4	4	6	6	5	25
11	4	3	5	4	3	19
12	5	3	4	6	4	22
13	3	5	4	5	8	25
14	5	4	5	4	6	24
15	5	3	4	6	4	22
16	3	6	4	6	5	24
17	4	3	5	6	7	25
18	4	3	6	5	8	26
19	5	4	6	5	7	27
20	4	3	5	4	5	21
21	3	5	6	4	5	23
22	4	3	5	4	6	22
23	4	2		9	4	19
24	4	3	5	5	7	24
25	2	3	5	4	6	20
26	4	3	5	4	7	23
27	2	3	5	6	4	20
28	3	3	4	5	2	17
29	2	4	3	5	4	18
30	3	5	4	4	6	22
31	4	3	5	4	3	19
32	3	5	4	6	6	24
33	4	3	5	4	5	21
34	4	4	4	5	5	22
35	5	4	4	5	3	21
36	2	3	5	6	4	20
37	2	4	3	5	4	18
38	3	3	4	5	2	17
39	4	3	5	4	3	19
40	2	3	5	6	7	23
41	4	3	5	6	8	26
42	3	4	3	6	7	23
43	4	3	5	6	8	26
44	5	3	8	6	5	27
45	4	3	3	5	4	19
46	3	4	5	3	5	20
47	2	4	6	4	6	22
48	3	4	5	4	3	19
49	4	3	5	6	4	22
50	5	3	6	4	6	24

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

कस्बा क्षेत्र (पुरूष) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	10	4	9	4	5	32
2	8	8	6	2	7	31
3	8	9	8	5	5	35
4	10	9	8	1	6	34
5	10	8	8	2	5	33
6	8	8	8	6	4	34
7	8	6	6	8	6	34
8	8	8	8	4	6	34
9	10	4	9	4	5	32
10	8	8	6	2	7	31
11	8	9	8	5	5	35
12	10	8	8	2	5	33
13	8	8	8	6	8	38
14	8	6	6	8	7	35
15	6	8	6	8	7	35
16	4	8	6	6	8	32
17	6	4	6	8	6	30
18	6	6	8	6	8	34
19	6	6	8	8	8	36
20	8	8	6	6	6	34
21	10	4	9	4	5	32
22	6	6	7	8	5	32
23	8	6	4	8	5	31
24	8	6	6	5	7	32
25	6	8	8	5	7	34
26	6	6	8	6	6	32
27	8	8	6	6	4	32
28	6	4	8	6	8	32
29	5	6	7	7	6	31
30	6	6	5	6	4	27
31	7	6	8	6	7	34
32	6	6	8	6	6	32
33	5	7	6	8	6	32
34	5	7	6	6	7	31
35	6	7	5	6	7	31
36	8	6	7	5	7	33
37	7	8	6	7	7	35
38	8	7	6	8	6	35
39	7	8	5	6	8	34
40	7	8	6	7	7	35
41	8	8	6	7	6	35
42	7	6	8	5	8	34
43	8	6	8	6	8	36
44	8	5	7	7	5	32
45	8	6	6	5	6	31
46	6	8	5	6	7	32
47	8	6	6	8	8	36
48	8	7	5	8	8	36
49	8	8	8	6	7	37
50	7	8	5	6	6	32

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

कस्बा क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	7	6	3	2	3	21
2	7	2	4	6	5	24
3	7	8	5	5	5	30
4	3	6	1	2	4	16
5	4	4	4	2	3	17
6	4	6	7	5	3	25
7	7	6	3	2	3	21
8	5	6	4	4	3	22
9	9	6	4	5	2	26
10	5	4	3	4	4	20
11	4	6	3	4	4	21
12	5	4	5	4	4	22
13	6	3	5	4	3	21
14	7	5	4	2	4	22
15	5	4	4	4	3	20
16	6	4	3	5	4	22
17	7	5	8	4	4	28
18	6	4	8	2	5	25
19	7	4	5	4	4	24
20	8	6	2	4	2	22
21	6	6	5	5	2	24
22	6	4	5	5	2	22
23	4	4	5	5	5	23
24	4	5	4	5	4	22
25	4	4	5	5	6	24
26	5	5	4	5	4	23
27	5	4	5	4	4	22
28	7	3	6	4	6	26
29	6	4	6	6	4	26
30	5	6	3	4	4	22
31	5	6	3	4	4	22
32	6	4	4	4	6	24
33	5	4	5	4	4	22
34	5	6	6	6	3	26
35	6	6	4	4	4	24
36	5	4	6	5	5	25
37	4	4	3	3	8	22
38	4	5	3	5	8	25
39	4	4	6	6	3	23
40	5	3	8	6	4	26
41	4	3	5	5	7	24
42	5	3	8	6	8	30
43	6	4	5	5	6	26
44	7	6	5	2	6	26
45	8	6	4	4	3	25
46	5	3	8	6	6	28
47	5	4	5	4	6	24
48	4	5	5	3	6	23
49	4	6	6	3	5	24
50	5	5	4	4	6	24

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

नगरपालिका क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	4	7	10	9	35
2	10	5	5	2	5	27
3	10	2	4	5	5	26
4	10	5	5	2	5	27
5	6	5	5	4	5	25
6	6	8	6	6	5	31
7	8	6	5	8	7	34
8	8	5	5	6	8	32
9	8	6	5	6	3	28
10	4	5	6	5	5	25
11	5	8	7	5	5	30
12	8	6	8	6	5	33
13	10	8	6	5	6	35
14	8	7	8	6	4	33
15	8	8	8	5	5	34
16	6	8	10	6	5	35
17	8	7	5	6	5	31
18	7	8	6	5	5	31
19	6	8	10	6	5	35
20	5	8	7	5	5	30
21	10	5	5	2	5	27
22	6	8	7	5	5	31
23	10	8	8	6	6	38
24	8	8	9	6	4	35
25	8	6	8	6	4	32
26	10	5	5	6	6	32
27	8	7	8	6	5	34
28	10	8	8	6	6	38
29	8	8	8	6	6	36
30	6	6	8	5	4	29
31	6	4	4	6	5	25
32	8	4	4	4	3	23
33	6	4	4	6	5	25
34	5	5	6	4	2	22
35	9	8	7	4	2	30
36	6	8	6	5	5	30
37	7	5	8	5	4	29
38	8	10	6	5	2	31
39	6	6	5	5	5	27
40	8	6	6	5	3	28
41	8	10	6	5	3	32
42	8	7	5	5	5	30
43	6	4	4	5	6	25
44	4	4	8	6	5	27
45	5	4	8	7	5	29
46	8	10	6	6	5	35
47	9	8	7	6	4	34
48	8	10	6	6	5	35
49	7	5	8	6	4	30
50	8	6	5	4	4	27

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

नगरपालिका क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	3	3	3	2	3	14
2	5	2	3	2	5	17
3	6	6	4	2	10	28
4	5	4	4	5	5	23
5	5	3	3	3	5	19
6	5	4	4	2	5	20
7	5	5	3	3	6	22
8	4	4	4	4	6	22
9	6	4	4	5	6	25
10	4	4	6	4	5	23
11	3	3	3	2	3	14
12	5	2	3	2	5	17
13	5	3	3	3	5	19
14	6	4	4	5	6	25
15	4	3	3	4	4	18
16	4	4	4	5	5	22
17	5	4	4	4	6	23
18	4	4	4	6	6	24
19	4	4	5	5	5	23
20	5	3	3	3	6	20
21	4	4	3	3	6	20
22	4	4	4	5	5	22
23	5	3	5	3	6	22
24	5	3	6	4	5	23
25	4	4	4	4	6	22
26	4	4	4	4	5	21
27	5	4	4	4	6	23
28	4	5	4	5	6	24
29	5	3	4	4	5	21
30	5	4	4	4	5	22
31	5	3	4	4	6	22
32	3	5	4	3	5	20
33	3	6	4	4	4	21
34	4	3	4	5	5	21
35	5	3	3	3	6	20
36	4	4	4	4	6	22
37	6	4	4	4	5	23
38	4	4	4	6	6	24
39	6	4	4	4	6	24
40	4	4	4	6	6	24
41	5	5	3	3	6	22
42	3	5	3	5	6	22
43	5	3	5	3	5	21
44	5	5	5	5	6	26
45	4	4	4	4	5	21
46	5	5	3	4	7	24
47	3	5	4	5	6	23
48	3	4	5	5	6	23
49	4	4	5	5	5	23
50	4	5	5	4	5	23

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

नगरपालिका क्षेत्र (पुरूष) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	7	8	6	6	5	32
2	10	5	5	2	5	27
3	10	2	4	5	5	26
4	10	5	5	2	5	27
5	6	5	5	4	5	25
6	5	4	7	10	9	35
7	8	7	5	6	6	32
8	7	8	6	5	6	32
9	8	8	8	6	5	35
10	7	7	6	5	5	30
11	8	6	6	8	5	33
12	7	8	8	7	5	35
13	6	8	6	8	2	30
14	4	8	8	5	5	30
15	7	8	5	5	3	28
16	4	8	6	6	6	30
17	7	5	6	4	5	27
18	8	6	4	6	4	28
19	7	8	5	5	6	31
20	9	10	5	6	5	35
21	7	8	8	7	6	36
22	10	8	8	6	6	38
23	8	10	8	8	4	38
24	8	8	10	8	8	42
25	6	8	8	10	8	40
26	6	6	8	8	10	38
27	7	6	5	3	5	26
28	8	6	4	4	6	28
29	7	5	5	3	5	25
30	9	6	7	3	5	30
31	8	6	6	5	5	30
32	7	8	6	5	4	30
33	8	6	6	5	4	29
34	5	5	5	4	5	24
35	5	5	4	4	4	22
36	5	4	4	5	5	23
37	6	6	6	5	5	28
38	7	7	6	6	6	32
39	8	4	6	6	6	30
40	5	8	8	8	5	34
41	6	4	4	4	8	26
42	4	6	6	6	6	28
43	4	6	6	6	8	30
44	6	7	7	7	8	35
45	7	7	6	7	8	35
46	6	6	7	8	8	35
47	6	7	6	7	8	34
48	6	6	7	6	7	32
49	6	7	6	7	8	34
50	7	5	8	8	8	36

सेवा निवृत्त अध्यापक अनुसूची (ASORT)

नगरपालिका क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	8	6	5	6	6	31
2	7	5	4	5	6	27
3	5	5	5	3	3	21
4	5	5	7	3	4	24
5	7	6	5	3	5	26
6	6	6	5	4	5	26
7	6	5	4	3	6	24
8	8	6	5	6	6	31
9	5	5	7	3	4	24
10	6	6	5	4	5	26
11	7	5	4	5	6	27
12	8	6	5	6	6	31
13	7	6	5	3	5	26
14	6	6	6	4	6	28
15	7	8	7	8	5	35
16	6	6	7	6	6	31
17	5	6	5	6	8	30
18	5	3	6	5	6	25
19	5	3	8	5	7	28
20	6	4	4	4	6	24
21	7	3	5	5	5	25
22	8	3	4	5	5	25
23	5	3	4	4	8	24
24	4	4	4	5	5	22
25	5	4	3	5	6	23
26	5	4	4	4	6	23
27	4	3	4	5	6	22
28	5	3	6	4	6	24
29	5	4	6	5	4	24
30	4	5	6	5	5	25
31	6	5	6	5	4	26
32	5	5	6	6	6	28
33	6	5	6	5	8	30
34	5	5	5	5	8	28
35	6	6	4	4	5	25
36	7	6	7	6	6	32
37	6	6	7	5	6	30
38	5	4	4	4	6	23
39	6	6	6	5	6	29
40	5	4	5	4	6	24
41	4	4	4	3	8	23
42	4	5	4	5	8	26
43	4	4	4	5	8	25
44	6	4	4	5	7	26
45	6	4	4	6	6	26
46	6	5	5	6	6	28
47	6	6	4	4	5	25
48	4	6	4	6	6	26
49	6	4	6	4	7	27
50	7	6	4	4	6	27

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

ग्रामीण क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	4	6	7	7	8	32
2	4	3	5	8	3	23
3	4	3	5	6	8	26
4	4	6	7	8	8	33
5	4	5	6	5	8	28
6	5	5	6	4	8	28
7	4	5	6	4	5	24
8	6	6	6	4	8	30
9	8	7	5	5	7	32
10	7	6	6	6	8	33
11	5	7	7	6	4	29
12	4	5	6	7	5	27
13	5	6	4	7	3	25
14	4	5	6	7	6	28
15	5	6	4	7	3	25
16	7	5	4	2	6	24
17	5	4	6	4	3	22
18	3	4	8	7	5	27
19	5	4	6	5	4	24
20	5	4	8	4	5	26
21	6	6	3	5	4	24
22	7	5	4	5	6	27
23	7	4	5	4	4	24
24	6	5	5	6	5	27
25	5	6	4	7	5	27
26	5	4	3	7	6	25
27	6	7	4	4	4	25
28	7	5	6	5	7	30
29	7	5	5	7	6	30
30	6	7	4	6	5	28
31	5	4	4	4	7	24
32	5	6	6	5	4	26
33	4	7	7	4	5	27
34	6	4	5	6	6	27
35	7	5	4	7	2	25
36	9	4	5	4	5	27
37	5	5	4	4	4	22
38	4	4	5	6	4	23
39	6	6	6	3	4	25
40	7	7	7	5	2	28
41	4	4	5	6	4	23
42	5	5	4	6	4	24
43	6	6	6	3	4	25
44	7	7	7	4	2	27
45	5	5	5	6	4	25
46	8	7	5	4	2	26
47	5	4	6	5	8	28
48	5	4	9	2	5	25
49	5	7	6	4	5	27
50	5	6	4	5	4	24

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

ग्रामीण क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	4	3	5	6	9	27
2	3	3	5	6	9	26
3	4	3	5	6	9	27
4	4	3	5	6	9	27
5	4	3	5	6	8	26
6	5	3	4	4	7	23
7	4	3	4	4	8	23
8	5	6	4	6	6	27
9	6	7	4	5	4	26
10	5	5	6	4	3	23
11	5	5	4	4	4	22
12	7	7	6	5	6	31
13	6	5	5	7	2	25
14	8	7	5	4	4	28
15	7	6	5	4	4	26
16	5	4	7	8	3	27
17	4	4	6	6	3	23
18	5	4	6	5	6	26
19	5	4	9	4	4	26
20	4	5	6	5	4	24
21	4	4	8	8	3	27
22	5	4	4	3	6	22
23	4	4	8	6	3	25
24	5	5	4	4	8	26
25	5	5	4	4	7	25
26	4	5	4	7	5	25
27	4	3	8	5	4	24
28	4	5	6	5	7	27
29	5	4	6	5	4	24
30	4	5	6	5	3	23
31	5	5	5	5	4	24
32	5	6	7	4	3	25
33	4	6	7	4	4	25
34	6	4	7	4	5	26
35	5	4	7	4	5	25
36	4	6	7	7	3	27
37	5	6	7	4	3	25
38	5	5	5	6	5	26
39	4	6	7	6	4	27
40	5	4	6	5	4	24
41	4	5	9	2	5	25
42	7	7	6	5	2	27
43	8	7	5	5	3	28
44	4	3	8	5	4	24
45	8	7	4	4	4	27
46	6	7	7	2	3	25
47	4	5	6	4	4	23
48	4	5	6	4	4	23
49	4	6	4	3	6	23
50	5	4	6	5	4	24

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

ग्रामीण क्षेत्र (पुरूष) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	7	8	6	7	5	33
2	6	5	5	6	7	29
3	5	3	3	4	6	21
4	6	5	4	4	8	27
5	5	6	4	6	7	28
6	5	7	5	5	3	25
7	6	6	6	4	4	26
8	7	5	7	6	3	28
9	4	5	4	7	4	24
10	5	4	5	4	4	22
11	6	7	6	5	4	28
12	7	6	7	6	4	30
13	5	5	7	7	4	28
14	6	4	5	5	4	24
15	7	3	7	7	4	28
16	4	4	6	6	4	24
17	5	5	4	4	4	22
18	6	6	5	4	6	27
19	7	2	6	3	4	22
20	5	4	6	5	4	24
21	4	5	6	5	4	24
22	4	7	4	5	4	24
23	4	5	6	5	4	24
24	4	5	6	5	4	24
25	4	7	4	3	4	22
26	5	4	3	5	7	24
27	6	5	5	4	4	24
28	7	6	4	6	3	26
29	7	5	6	6	4	28
30	6	4	7	7	4	28
31	5	7	4	4	4	24
32	5	7	5	5	5	27
33	6	4	6	7	2	25
34	7	5	3	6	4	25
35	7	5	4	5	2	23
36	6	4	7	4	4	25
37	5	7	2	5	6	25
38	5	7	4	6	4	26
39	6	4	6	7	2	25
40	7	5	7	4	4	27
41	7	5	4	3	4	23
42	6	4	8	5	4	27
43	5	7	5	2	4	23
44	5	7	6	2	4	24
45	6	4	4	3	4	21
46	7	5	4	4	4	24
47	7	5	6	4	4	26
48	6	4	5	5	4	24
49	5	7	4	6	4	26
50	5	4	6	4	4	23

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

ग्रामीण क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	3	7	3	5	6	24
2	5	5	4	5	5	24
3	6	5	5	5	6	27
4	6	5	3	4	6	24
5	4	5	5	5	6	25
6	5	5	5	5	6	26
7	4	3	3	4	8	22
8	5	4	4	5	4	22
9	6	5	5	6	4	26
10	4	6	6	7	4	27
11	5	7	7	6	4	29
12	6	7	3	5	4	25
13	4	6	4	4	4	22
14	5	5	5	5	6	26
15	6	4	6	6	4	26
16	4	7	7	7	3	28
17	5	4	7	7	4	27
18	6	5	6	6	4	27
19	4	6	5	5	4	24
20	5	3	4	5	4	21
21	6	4	3	4	4	21
22	4	5	4	6	4	23
23	5	6	5	7	4	27
24	6	7	6	7	3	29
25	4	3	7	6	5	25
26	5	4	8	5	4	26
27	6	5	3	4	4	22
28	4	6	4	5	4	23
29	5	7	5	6	4	27
30	6	3	6	7	4	26
31	4	4	7	6	4	25
32	5	5	8	5	4	27
33	6	6	8	4	3	27
34	4	7	7	3	4	25
35	5	3	6	4	4	22
36	6	4	5	5	4	24
37	4	5	4	6	4	23
38	5	6	3	7	4	25
39	6	7	2	5	4	24
40	4	3	4	6	7	24
41	5	4	5	4	4	22
42	6	5	6	3	4	24
43	4	6	7	4	4	25
44	5	7	7	5	4	28
45	6	3	6	6	4	25
46	4	4	5	7	4	24
47	5	5	4	6	6	26
48	6	6	3	5	4	24
49	4	7	4	4	4	23
50	5	3	5	3	8	24

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

कस्बा क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	6	3	2	8	8	27
2	4	2	5	7	7	25
3	4	3	5	7	8	27
4	4	3	5	7	8	27
5	5	3	5	6	8	27
6	6	4	5	5	6	26
7	5	5	4	4	8	26
8	4	5	5	5	8	27
9	5	5	5	5	6	26
10	4	4	5	5	8	26
11	4	5	4	5	7	25
12	5	4	5	4	6	24
13	6	4	6	4	8	28
14	4	6	4	6	7	27
15	7	6	4	4	6	27
16	6	4	6	4	8	28
17	8	4	4	6	6	28
18	7	4	6	6	4	27
19	4	6	6	5	5	26
20	5	6	6	4	5	26
21	4	5	4	5	8	26
22	5	5	5	5	5	25
23	6	6	4	4	6	26
24	4	4	4	6	6	24
25	6	4	4	7	6	27
26	6	7	7	4	6	30
27	7	6	4	4	5	26
28	6	6	5	5	5	27
29	5	6	5	6	5	27
30	4	6	6	5	5	26
31	4	6	5	6	5	26
32	5	5	4	4	8	26
33	4	4	5	4	7	24
34	7	6	4	6	6	29
35	5	7	7	6	2	27
36	7	6	6	3	5	27
37	7	3	5	5	6	26
38	7	4	5	5	6	27
39	6	4	5	6	8	29
40	6	4	3	5	8	26
41	6	4	4	4	4	22
42	5	5	5	5	6	26
43	6	6	6	5	5	28
44	6	4	5	5	6	26
45	6	5	6	5	5	27
46	5	6	5	6	6	28
47	4	4	6	8	4	26
48	7	4	7	8	4	30
49	6	5	7	4	6	28
50	6	4	5	5	6	26

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

कस्बा क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	3	4	8	4	8	27
2	4	3	5	6	9	27
3	4	3	5	6	9	27
4	4	3	5	6	9	27
5	4	4	5	6	9	28
6	4	3	5	6	9	27
7	4	5	6	5	8	28
8	5	3	6	6	6	26
9	6	4	5	5	7	27
10	5	4	5	4	8	26
11	6	4	5	5	6	26
12	5	4	5	4	7	25
13	6	4	5	5	4	24
14	4	5	6	5	6	26
15	7	6	3	6	6	28
16	6	5	5	7	6	29
17	5	4	6	6	8	29
18	7	6	3	5	4	25
19	6	5	4	5	6	26
20	5	5	5	4	4	23
21	6	4	5	5	3	23
22	5	4	5	4	4	22
23	6	4	5	5	6	26
24	4	5	6	5	7	27
25	5	3	6	8	8	30
26	4	4	6	8	8	30
27	5	4	6	7	7	29
28	4	5	6	5	6	26
29	5	5	6	6	6	28
30	4	5	6	5	6	26
31	5	3	6	4	8	26
32	4	3	5	6	6	24
33	5	3	6	6	6	26
34	4	3	5	6	7	25
35	5	4	6	8	8	31
36	6	4	5	5	6	26
37	7	5	5	7	6	30
38	8	6	8	5	7	34
39	6	6	6	5	5	28
40	7	5	5	7	6	30
41	6	4	5	5	6	26
42	6	6	6	6	5	29
43	5	4	6	5	7	27
44	4	6	7	7	8	32
45	6	4	5	5	6	26
46	5	6	6	7	5	29
47	8	6	4	4	6	28
48	4	4	5	6	7	26
49	5	4	5	4	8	26
50	6	4	5	5	7	27

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

कस्बा क्षेत्र (पुरूष) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	4	7	5	6	27
2	4	5	4	5	6	24
3	7	4	4	3	5	23
4	6	4	4	4	5	23
5	6	3	3	3	5	20
6	5	4	4	5	6	24
7	6	3	4	3	5	21
8	7	4	7	3	5	26
9	4	5	4	5	6	24
10	6	4	3	4	5	22
11	5	4	7	5	6	27
12	4	5	4	5	6	24
13	7	4	3	3	5	22
14	6	4	7	5	3	25
15	4	5	5	5	6	25
16	6	4	4	5	6	25
17	6	4	3	4	4	21
18	6	4	5	5	8	28
19	6	4	4	5	6	25
20	4	4	5	5	5	23
21	5	4	4	5	4	22
22	6	4	6	3	4	23
23	4	4	4	8	4	24
24	6	3	4	3	5	21
25	5	4	3	5	6	23
26	5	4	3	5	6	23
27	6	4	5	3	4	22
28	5	4	4	3	6	22
29	4	3	5	5	6	23
30	6	4	5	6	3	24
31	4	3	5	5	6	23
32	3	4	5	4	8	24
33	4	5	4	6	7	26
34	5	4	4	3	7	23
35	6	4	5	4	7	26
36	4	5	3	3	8	23
37	4	3	5	5	8	25
38	5	3	6	6	7	27
39	5	4	4	6	8	27
40	4	5	5	6	4	24
41	3	6	5	6	6	26
42	6	4	4	5	6	25
43	5	5	4	5	7	26
44	4	5	4	4	6	23
45	5	6	5	5	6	27
46	5	4	4	6	8	27
47	6	4	3	3	7	23
48	6	5	4	5	6	26
49	5	3	8	6	6	28
50	6	4	5	5	6	26

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

कस्बा क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	4	3	5	8	25
2	6	3	5	4	5	23
3	6	5	4	5	5	25
4	6	4	4	5	5	24
5	3	5	4	6	4	22
6	4	3	7	4	5	23
7	5	4	4	3	6	22
8	5	6	4	5	4	24
9	6	3	3	3	5	20
10	5	3	8	4	4	24
11	6	3	5	4	4	22
12	5	3	8	4	4	24
13	6	4	4	4	4	22
14	5	3	8	4	2	22
15	4	3	7	2	6	22
16	4	4	4	4	5	21
17	6	3	6	5	5	25
18	5	3	8	4	4	24
19	6	4	4	4	4	22
20	5	5	4	4	4	22
21	4	4	4	5	5	22
22	6	6	4	4	4	24
23	4	4	4	6	6	24
24	4	6	4	6	4	24
25	5	4	4	3	6	22
26	5	6	4	5	4	24
27	6	4	4	4	4	22
28	5	4	3	5	8	25
29	6	3	6	5	4	24
30	3	6	5	4	6	24
31	6	5	4	5	8	28
32	5	4	4	5	8	26
33	3	4	3	4	8	22
34	4	4	4	5	5	22
35	5	4	5	4	6	24
36	6	4	6	4	5	25
37	5	4	6	5	4	24
38	4	4	5	5	6	24
39	4	4	4	4	8	24
40	4	4	4	3	8	23
41	4	3	4	3	8	22
42	3	4	3	3	7	20
43	4	4	4	5	5	22
44	5	5	5	5	6	26
45	4	4	5	4	4	21
46	5	4	5	4	4	22
47	6	6	5	5	6	28
48	4	4	3	2	8	21
49	4	4	4	5	8	25
50	5	5	4	6	6	26

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

नगरपालिका क्षेत्र (महिला) प्राथमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	5	6	3	2	1	17
2	1	1	4	4	5	15
3	2	4	4	4	6	20
4	1	3	5	4	6	19
5	4	4	2	2	5	17
6	4	4	3	1	4	16
7	4	3	4	2	3	16
8	5	4	5	3	2	19
9	5	3	4	2	3	17
10	5	4	5	4	4	22
11	4	4	4	5	5	22
12	5	4	5	4	2	20
13	4	5	5	4	3	21
14	5	5	3	4	2	19
15	4	4	4	5	4	21
16	5	3	3	3	2	16
17	3	5	5	4	2	19
18	5	4	3	2	4	18
19	4	5	3	4	4	20
20	5	4	3	4	3	19
21	4	5	3	4	4	20
22	5	3	2	4	3	17
23	4	3	2	5	4	18
24	4	3	2	4	4	17
25	5	4	3	4	4	20
26	4	4	4	3	3	18
27	5	5	3	2	2	17
28	5	4	4	4	2	19
29	4	5	5	4	4	22
30	5	5	4	4	5	23
31	8	6	4	4	4	26
32	6	7	5	5	5	28
33	5	4	3	4	4	20
34	4	5	6	4	4	23
35	5	4	5	4	5	23
36	6	4	6	7	5	28
37	5	4	5	3	2	19
38	4	5	4	5	2	20
39	5	6	3	4	5	23
40	6	4	6	5	4	25
41	8	5	6	5	5	29
42	6	7	5	4	4	26
43	5	5	8	5	2	25
44	4	5	3	5	2	19
45	5	3	2	5	5	20
46	4	3	2	5	3	17
47	5	3	2	5	2	17
48	4	3	5	8	2	22
49	5	4	4	3	2	18
50	4	3	5	5	3	20

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

नगरपालिका क्षेत्र (महिला) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	3	4	5	3	8	23
2	4	3	3	3	8	21
3	5	7	5	7	7	31
4	4	3	4	7	8	26
5	5	7	5	7	7	31
6	6	7	5	7	7	32
7	3	7	5	5	5	25
8	7	4	4	4	6	25
9	6	4	4	4	8	26
10	4	4	4	6	6	24
11	4	5	5	4	6	24
12	5	3	5	3	6	22
13	5	3	5	3	7	23
14	4	5	5	5	6	25
15	7	4	5	5	8	29
16	6	4	4	6	8	28
17	4	4	4	6	8	26
18	5	5	4	4	8	26
19	5	5	5	5	8	28
20	5	7	5	5	5	27
21	6	7	6	6	6	31
22	7	5	5	5	6	28
23	6	6	5	6	8	31
24	6	7	6	7	7	33
25	7	6	6	6	6	31
26	6	6	7	6	6	31
27	6	7	6	7	7	33
28	7	7	6	5	7	32
29	6	4	7	4	6	27
30	6	6	6	5	5	28
31	5	5	6	6	6	28
32	5	5	4	8	8	30
33	5	8	5	5	5	28
34	5	8	8	8	6	35
35	5	3	8	8	8	32
36	6	4	3	7	8	28
37	4	4	4	5	8	25
38	4	6	5	6	7	28
39	6	4	4	4	6	24
40	4	5	6	8	8	31
41	4	4	5	5	8	26
42	5	5	6	6	7	29
43	6	6	5	5	6	28
44	6	6	6	5	6	29
45	7	4	4	5	8	28
46	5	3	6	6	6	26
47	6	3	6	5	7	27
48	5	3	5	8	7	28
49	4	6	4	5	7	26
50	5	6	5	6	6	28

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

नगरपालिका क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	4	4	3	1	4	16
2	1	1	4	4	5	15
3	2	4	4	4	6	20
4	1	3	5	4	6	19
5	4	4	2	2	5	17
6	6	5	3	2	1	17
7	6	7	6	5	5	29
8	5	4	3	5	2	19
9	6	4	6	5	4	25
10	6	3	6	5	5	25
11	8	6	4	4	5	27
12	6	6	6	4	2	24
13	5	3	2	5	5	20
14	4	3	5	8	5	25
15	4	5	3	5	3	20
16	4	5	5	5	4	23
17	6	5	4	5	5	25
18	4	3	2	6	5	20
19	5	3	6	6	2	22
20	5	6	7	8	4	30
21	4	5	5	4	4	22
22	5	3	2	5	5	20
23	4	4	4	8	2	22
24	5	4	3	2	4	18
25	5	7	8	3	2	25
26	5	3	8	4	4	24
27	4	7	4	5	5	25
28	7	3	2	5	5	22
29	8	4	4	4	5	25
30	7	3	5	8	2	25
31	8	4	5	3	5	25
32	7	4	5	5	6	27
33	8	8	4	4	4	28
34	7	5	8	4	2	26
35	5	3	2	8	8	26
36	5	7	8	8	2	30
37	7	5	8	5	5	30
38	6	8	6	2	4	26
39	4	5	8	2	2	21
40	5	5	4	4	4	22
41	6	4	5	5	5	25
42	5	4	5	4	4	22
43	4	4	4	5	5	22
44	4	4	4	6	6	24
45	5	4	5	4	7	25
46	5	4	4	3	8	24
47	8	4	4	6	7	29
48	5	6	4	5	5	25
49	5	3	8	4	4	24
50	6	3	5	4	7	25

अवकाश प्राप्त शिक्षकों की समस्या प्रश्नावली (RTPQ)

नगरपालिका क्षेत्र (पुरूष) माध्यमिक स्तर

क्रमांक	अ	ब	स	द	य	योग
1	6	4	5	5	7	27
2	4	5	4	6	8	27
3	4	5	4	5	4	22
4	5	5	5	5	6	26
5	5	6	4	4	7	26
6	5	4	5	6	6	26
7	6	6	4	5	6	27
8	4	4	4	7	7	26
9	4	5	5	4	6	24
10	5	4	5	4	7	25
11	4	4	6	6	5	25
12	6	4	6	4	4	24
13	6	6	4	6	4	26
14	4	4	6	6	5	25
15	3	5	5	5	6	24
16	5	3	8	4	6	26
17	5	4	5	4	6	24
18	5	4	4	5	5	23
19	4	4	4	5	5	22
20	5	4	5	4	5	23
21	4	5	5	5	5	24
22	4	4	4	6	6	24
23	5	5	5	5	6	26
24	6	5	5	4	7	27
25	4	4	5	5	6	24
26	6	3	4	3	6	22
27	6	2	4	4	7	23
28	4	4	5	5	7	25
29	4	5	4	6	6	25
30	4	4	4	5	6	23
31	6	5	6	5	5	27
32	5	5	5	5	6	26
33	4	4	6	6	6	26
34	6	4	6	4	5	25
35	5	6	4	4	4	23
36	7	5	3	2	6	23
37	6	4	4	4	6	24
38	6	3	5	3	5	22
39	6	3	4	5	5	23
40	7	3	5	4	5	24
41	6	4	3	4	5	22
42	4	4	5	5	5	23
43	4	4	5	5	8	26
44	5	4	5	4	7	25
45	7	4	5	4	5	25
46	4	6	6	6	6	28
47	5	3	6	4	7	25
48	5	4	3	4	7	23
49	4	5	5	4	7	25
50	7	3	2	2	8	22